

WÖRTERBUCH
DER
AEGYPTISCHEN
SPRACHE

IM AUFTRAGE
DER DEUTSCHEN AKADEMIEN

HERAUSGEGEBEN VON
ADOLF ERMAN UND HERMANN GRAPOW

SIEBENTER BAND

RÜCKLÄUFIGES
WÖRTERVERZEICHNIS

BEARBEITET VON
W. F. REINEKE



AKADEMIE-VERLAG · BERLIN

1971

VORWORT

Die Herstellung eines rückläufigen ägyptischen Wörterbuches auf Grund der hieroglyphischen Gestalt der Wörter hat sich als undurchführbar erwiesen. Die Vielfältigkeit der Schreibungen sehr vieler Wörter macht das unmöglich, und dasselbe gilt von den Determinativen. Somit kann ein rückläufiges ägyptisches Wörterbuch nur in den Transkriptionen erfolgen. Und auch diese bieten Schwierigkeiten: sind sie doch nur ein Notbehelf. Gleichwohl wurde der Versuch gewagt. Der Wissenschaftliche Assistent am Wörterbuch der Ägyptischen Sprache, Walter Friedrich Reineke, hat das hier vorliegende rückläufige Wörterbuch ausgearbeitet.

Alle Wörter sind nach dem letzten Konsonanten in rückläufiger Folge geordnet. Alles Einzelne wird der Benutzer leicht selbst erkennen. Nur über die Behandlung der Femininalendung *.t* muß etwas bemerkt werden. Wie man auch über die Wiedergabe der Femininalendung *.t* denken mag, ob sie durch einen Punkt vom Wortkörper abzusetzer ist oder ob sie sich unmittelbar anschließt: diese Endung mußte unberücksichtigt bleiben, sollten nicht Seiten und Seiten mit auf *-t* endenden Transkriptionen gefüllt werden, die das Aufsuchen eines Wortausgangs überaus erschwert hätten. Die *.t* Wörter stehen unmittelbar hinter den nicht auf *.t* endenden Wörtern. Also z. B. folgen sich *k33* „Hügel“, *k33* „offiziell verwendetes“, *k33.t* „Substantiv“.

Möchte die mühevollen Arbeit, die das Buch erfordert hat, sich bei der Ergänzung zerstörter Wörter nützlich erweisen.

Grapow

Unveränderter Nachdruck

Erschienen im Akademie-Verlag GmbH, 108 Berlin, Leipziger Straße 3—4,
in Arbeitsgemeinschaft mit dem J. C. Hinrichs Verlag,

701 Leipzig, Scherlstraße 2

Copyright 1971 by Akademie-Verlag GmbH / J. C. Hinrichs Verlag

Lizenznummer: 202 · 100/86/71

Gesamtherstellung: VEB Druckerei „Thomas Müntzer“, 582 Bad Langensalza/DDR

Bestellnummer: 3002/VII · ES 7 L

EDV-Nr.: 751 969 4

| | | | | | |
|--------------------|------------------------------------|---------|--------------------|---------------------------------------|---------|
| } | Adler, Geier | I 1 | k}} | [Eigenschaft des Horus- auges] | V 101 |
| } | doch (enkl. Part.) | I 1 | | | |
| } | betreten (einen Ort) | I 1 | g}} | kentern | V 149 |
| },t | [Kopfschmuck] | I 1 | w}} | [Eigenschaft] | V 411 |
| },t | Zeit | I 1 | q}} | Haarflechte | V 520 |
| },t | Kraft | I 2 | q}} | [als Personenbezeichnung] | V 520 |
| },t | = i},t - Ort, Stätte | I 2 | i}} | o! | I 25 |
| },t | = i},t - Rücken | I 2 | i}} | wahrlich! | I 25 |
| },t | = i},t - Tragstange | I 2 | i}} | schreiten | I 26 |
| }} | Ruine | I 2 | i},t | Rückgrat | I 26 |
| }},t | = i},t - [Keule] | I 2 | i},t | Tragstange (für heilige Tiere) | I 26 |
| i}} | [Stein] | I 27 | i},t | (Substantiv) | I 26 |
| i}} | [Pflanze] | I 27 | i},t | Stätte | I 26 |
| i},t | [Keule] | I 27 | i},t | Name einer Göttin | I 26 |
| i},t | Zweig, Rute | I 27 | i},t | [Opfergabe] | I 27 |
| i},t | (Substantiv) | I 27 | i},t | = },t - Zeitpunkt | I 27 |
| r},j},t | [Gewebe] | II 393 | i},t | [Raum] | I 27 |
| w}} | [offizinell Verwendetes] | I 248 | i},t | [Pflanze] | I 27 |
| w}} | [Brot] | I 172 | i},t,t | Bezeichnung der Milch | I 27 |
| h>w}},t | faulige Stoffe | III 51 | i},t,t | (Substantiv) | I 34 |
| i},r},h>w}},t | schlecht werden | III 51 | h},r},i},t,f | [heilige Schlange von Pelusium] | III 303 |
| b}} | Loch (einer Schlange) | I 417 | | | |
| h},f},t | Ufer, Gestade | III 271 | n},j},j}} | [Pflanze] | II 202 |
| m}} | sehen | II 7 | b},b},j}} | [kostbarer Stein] | I 419 |
| m}} | Anblick | II 10 | m},j},t | Wurfholz | II 46 |
| m}} | Heiligtum | II 11 | w},j}} | Schiff | I 271 |
| h>w<-m}} | mit verkümmerter Seh- fähigkeit | III 51 | w},j}} | zurückweisen | I 272 |
| h,m-m}} | Bezeichnung des Seth | III 280 | w},j}} | ohne zu | I 272 |
| n-m}} | unsichtbar | II 9 | w},j},t | [Vogel] | I 272 |
| h,m}} | (Verbum) | III 281 | w},j},t | [krankhafte Erscheinung am Herzen] | I 272 |
| m},h},t | Landanweiserin | II 147 | i},m},j},w},j},f | Beiname des Sonnengottes | I 73 |
| h}} | sich entschließen zu | III 361 | h},r},i},b},w},j}} | [Dekan] | I 271 |
| h}} | Wesen in der Unterwelt | III 361 | h},r},p},w},j}} | Steuermann des Sonnen- schiffs | III 329 |
| r},d},j},h},r},h}} | auf sich beruhen lassen | III 361 | | | |
| s},s}} | Krankheit des Kopfes | IV 273 | w},j},w},j}} | erfolglos, ohnmächtig | I 272 |
| s}} | verstehen | IV 16 | b},j}} | Erz | I 436 |
| s}} | Verständiger | IV 16 | b},j}} | [Mineral] | I 438 |
| s}} | = s},w},j} - [Gold] | IV 16 | b},j}} | Bergwerk | I 438 |
| k}} | Hügel | V 5 | b},j}} | [Gewässer am Himmel] | I 439 |
| k}} | [offizinell Verwendetes] | V 5 | b},j}} | sich entfernen | I 439 |
| k}},t | (Substantiv) | V 6 | b},j}} | Vorbild | I 441 |
| k}},t | = k},r},t - Riegel | V 6 | b},j}} | Weg der Prozession | I 442 |
| änw-n-k}} | [offizinell Verwendetes] | V 5 | b},j}} | Ägypten | I 442 |
| d},l},r},n},k}},t | [Frucht] | V 6 | b},j}} | | |

| | | |
|------------|---|---------|
| bj} | [heilige Schlange im Gau von Elephantine] | I 442 |
| bj}.t | Steinbruch | I 438 |
| bj}.t | grober Sandstein | I 438 |
| bj}.t | Erstaunen | I 440 |
| bj}.t | Charakter | I 441 |
| bj}.t | [Körperteil des Menschen] | I 442 |
| bj}.t | Theben (als älteste Stadt) | I 438 |
| h4-bj} | Kupferschlacke | III 164 |
| dw-n-bj}.t | Gebel Ahmar (bei Kairo) | I 439 |
| dw-n-bj}.t | Bezeichnung der Tempel von Karnak | I 439 |
| m-bj}.t | nein | I 442 |
| sbj}.t | Lachen | IV 89 |
| m}.t | [Wirtschaftsgebäude?] | II 42 |
| n}.t | = nj — jemanden abweisen | II 201 |
| n}.t | [Krankheit in der Nase] | II 201 |
| nm}.t | [Körperteil der Frau] | II 77 |
| ej} | erkennen | IV 30 |
| ej} | Erkenntnis | IV 31 |
| ej} | Kennzeichen | IV 31 |
| ej} | [Medikament für Augen] | IV 31 |
| ej} | [Gewässer im 21. Gau von Unterägypten] | IV 31 |
| ej}.t | Stück Leinenzug | IV 29 |
| ej}.t | [Amulett in Vogelgestalt] | IV 29 |
| ej}.t | [Beischrift zu einer aufgerichteten Schlange] | IV 31 |
| sp-n-ej} | Lobspruch | IV 30 |
| m}.t | Kennzeichen | II 143 |
| tj} | [Folge von Kopfverletzungen] | V 241 |
| tj} | vor Zahnschmerzen stöhnen | V 241 |
| tj} | [offiziell Verwendetes] | V 241 |
| tj}.t | = tj.t — Figur, Gestalt | V 241 |
| he-tj} | Loblied singen? | V 241 |
| ntj} | Atemluft? | II 355 |
| 3} | groß, groß sein, groß werden | I 161 |
| 3} | Großer | I 162 |
| 3} | Größe | I 163 |
| 3} | in hohem Maße | I 163 |
| 3} | hier, von hier, hierher | I 164 |
| 3} | Säule | I 164 |
| 3} | Türflügel, Tür | I 164 |
| 3} | Pförtner | I 165 |
| 3} | (Substantiv) | I 165 |
| 3} | Esel | I 165 |
| 3}.t | Große (Titel von Göttinnen) | I 163 |
| 3}.t | Schwieriges | I 163 |
| 3}.t | Eselstute | I 165 |
| 3}.t | Stein | I 165 |
| 3}.t | Steingefäß | I 166 |
| 3}.t | Geschwulst | I 166 |
| 3}.t | [Getränk] | I 166 |
| 3}.t | [Leinen] | I 166 |
| 3}.t | Herrschaft? | I 166 |
| h4-pj-3} | große Überschwemmung | III 43 |
| h4-3} | [öffentliches Fest] | III 241 |
| lruw-3} | Bezeichnung des Nils | I 146 |
| mp.t-3}.t | [Fest] | II 432 |
| hm-3} | [heiliger Baum] | III 93 |
| w-3} | Großfürst | I 329 |

| | | |
|--------------|--------------------------------------|---------|
| pr-3} | Palast, König | I 516 |
| pr.t-3}.t | [Fest bei Osirimysterien] | I 525 |
| ntr-3} | Bezeichnung des Königs | II 361 |
| h.t-3}.t | Schloßgebäude | III 3 |
| hk3-h.t-3}.t | Stadtherrscher | III 3 |
| ht-3} | Gans oder Ente | III 342 |
| rm.t-3} | Reicher? | I 162 |
| gd-3} | Page des Fürsten von Byblos | I 242 |
| 3-3} | Titel des Thot | I 163 |
| brj-3} | Pförtner | I 104 |
| h4-3}.t | [Truppe] | III 242 |
| ms-3}.t | Steinmetz | II 138 |
| sh.m-3}.t | [Titel] | I 166 |
| sm3.t-3}.t | [Gewebe] | III 452 |
| sep-3}.t | [Fest] | IV 534 |
| 3-3} | Schurz | I 40 |
| 3-3}.t | [Toten bedrohendes Wesen] | I 40 |
| w3} | schmähen | I 279 |
| w3} | [Kerze] | I 280 |
| w3} | [Eimer aus Gold] | I 280 |
| b3} | [Speise] | I 446 |
| m3} | Wurfholz werfen | I 186 |
| m3}.t | Wurfholz zur Vogeljagd | I 186 |
| h3} | [was Trauernde mit Haaren tun] | III 41 |
| h3} | Kind | III 42 |
| ht-h3} | [Vogel] | I 142 |
| h3} | etwas aufs Trockene bringen | III 364 |
| 3} | groß machen | IV 41 |
| 3} | = 3 — groß | IV 42 |
| 3} | furchterregend (vom König) | IV 42 |
| 3} | Bordbrett des Schiffs | IV 43 |
| w3} | Strick, Schnur | I 244 |
| w3} | (Verbum) | I 244 |
| w3} | sich einlassen mit | I 244 |
| w3} | dörren (Getreide) | I 244 |
| w3} | denken (schlechte Gedanken) | I 244 |
| w3} | [Fluch dem N. N.] | I 244 |
| w3}.t | Strick, Band | I 244 |
| w3}.t | [schlechte Eigenschaft des Menschen] | I 244 |
| w3}.t | Weg | I 246 |
| htr-w3}.t | zusammenbinden | III 202 |
| r3-w3}.t | Nähe | II 306 |
| 3j-w3}.t | den Weg weisen | V 347 |
| g3w.t-w3}.t | Engpaß? | V 152 |
| w3-w3}.t | [Dekan] | I 304 |
| h3-hr-w3}.t | unvollendet lassen | III 228 |
| mqd-w3}.t | jemandem ergeben sein | II 192 |
| 3w3} | [Kasten] | I 29 |
| w3w3} | planen, überlegen | I 249 |
| w3w3} | böser Plan | I 249 |
| w3w3} | fern | I 249 |
| w3w3} | sich anschicken | I 250 |
| w3w3}.t | Strick | I 250 |
| w3w3}.t | Feuer | I 250 |
| w3w3}.t | [Gegenstand aus Pflanzen] | I 250 |
| w3w3}.t | Name des nubischen Grenzlandes | I 250 |

| | | |
|-------------|--|---------|
| f3.t-w}w} | Zinsertrag? | I 250 |
| nw}w} | (Verbum vom guten Zustand der Knochen) | II 222 |
| dw}w} | vorbeigehen lassen | IV 62 |
| gw}w} | gefangen nehmen | V 160 |
| m}w} | ungehorsam sein | II 28 |
| iw} | Rind | I 49 |
| iw} | sich freuen | I 49 |
| iw} | fortnehmen, rauben | I 49 |
| iw} | [Fisch] | I 49 |
| iw}.t | Kuh | I 49 |
| iw}.t | Rindvieh (Koll.)? | I 49 |
| iw}.t | [Weißbrot] | I 49 |
| iw}.t | sorgen für jmd. | I 172 |
| w} | [verächtlicher Ruf] | I 172 |
| w} | faulen | I 172 |
| w} | Fäulnis | I 172 |
| w}.t | Raub | I 171 |
| m-w} | räuberisch | I 171 |
| 3-w} | verfaulen lassen | IV 43 |
| bw} | hoch sein | I 454 |
| bw} | Vornehmer | I 454 |
| bw}.t | Hügel | I 454 |
| bw}.t | Vergnügungsstätte | I 455 |
| nw} | bewachen | II 221 |
| nw} | [Gott] | II 221 |
| nw} | [Gerät bei Mundöffnung] | II 222 |
| nw} | [offiziell verwendete Pflanze] | II 222 |
| nw}.t | (Substantiv) | II 221 |
| hw} | werfen | III 50 |
| hw} | faulig sein | III 50 |
| wsh.t-hw}.t | Beiwort der Isis | III 51 |
| shw} | verzweifeln, [Krankheit] | IV 212 |
| shw} | leugnen | IV 238 |
| sw} | fallen (Bäume) | III 427 |
| sw} | vorbeigehen | IV 60 |
| sw} | = sw3 — ehren | IV 62 |
| sw}.t | Vergangenheit | IV 62 |
| sw} | verarmen | IV 435 |
| sw} | sozial niedrig | IV 435 |
| sw}.t | niedere Frau | IV 435 |
| sw}.t | Verarmung | IV 435 |
| 3sw} | = sw3 — ehren | IV 282 |
| 3sw} | zu Schanden machen | IV 282 |
| gw} | zusammenziehen | V 159 |
| gw} | kriegerisch vorgehen gegen | V 160 |
| gw} | [Brot] | V 160 |
| gw}.t | [Kasten] | V 160 |
| w} | Armer | V 248 |
| w} | jemandem bittend angehen | V 248 |
| w} | stützen, tragen | V 248 |
| w} | Träger | V 250 |
| w} | [Salbgefäß] | V 250 |
| w} | Luft | V 250 |
| w} | Säule | V 250 |
| w} | [aufgerichtete Schlange] | V 250 |
| w} | Kulmination | V 251 |
| w} | Boin (als Reliquie) | V 250 |
| w}.t | Tempeldach | V 250 |
| 3w} | sich bewegen (Beine) | IV 334 |
| 3w} | erblicken | IV 334 |
| 3w} | Widerstand | V 359 |

| | | |
|------------|--------------------------------------|---------|
| dw} | [Gewässer im Osten des Himmels] | V 424 |
| dw} | früh auf sein | V 426 |
| dw} | preisen | V 426 |
| dw}.t | [Nipferdgöttin] | V 424 |
| dw}.t | = d3.t — Unterwelt | V 425 |
| dw}.t | Lobpreis | V 428 |
| dw}.t | Verehrerin eines Gottes | V 429 |
| dw}.t | [offiziell verwendete Pflanze] | V 430 |
| 3b3-dw} | Morgenstern | IV 82 |
| pr-dw}.t | Haus des Morgens | V 425 |
| sdw} | Morgen zubringen | IV 368 |
| b} | [Vogel] | I 410 |
| b} | Seele sein | I 411 |
| b} | beseelen | I 411 |
| b} | Seele | I 411 |
| b} | Bock | I 414 |
| b} | Panther | I 415 |
| b} | Leopardenfell | I 415 |
| b} | Leopardenfallschurz | I 415 |
| b} | hacken | I 415 |
| b} | dienen | I 416 |
| b} | = b3kw — Abgaben | I 416 |
| b} | [Krankheit am Kopf] | I 416 |
| b}.t | Hathor | I 412 |
| b}.t | Busch | I 416 |
| b}.t | [Körnerfrucht] | I 416 |
| b}.t | [Symbol der Hathor] | I 416 |
| b}.t | [Beischrift zu einem Kleidungsstück] | I 417 |
| wd3-b} | [Titel der Königin] | I 402 |
| wd3-b} | [Priesterin des Bocks von Mendes] | I 402 |
| hrj-b} | [Sonnengott] | III 146 |
| sh.m-b3}.t | [Titel des Fürsten von Dendera] | I 417 |
| b3b} | (Verbum) | I 418 |
| b3b} | Loch | I 419 |
| b3b}.t | [Körnerfrucht] | I 418 |
| b3b}.t | Tränkstätte im Fluß | I 419 |
| b3b}.t | (Verbum vom Horusauge) | II 243 |
| nb3b} | geschwollen? | III 113 |
| hnb3b} | (fehlerhaft für vorstehendes Verbum) | III 113 |
| h3b3b} | watscheln (Gans) | III 62 |
| h3b3-b} | Sterne | III 230 |
| 3b} | Spielstein | I 62 |
| 3b} | tanzen | I 62 |
| 3b} | Vergnügung | I 62 |
| 3b} | Tänzer | I 62 |
| 3b}.t | [Salbe] | I 62 |
| 3b}.t | Tänzerin | I 62 |
| 3b} | [Stab] | I 176 |
| 3b} | kommandieren (Schiff) | I 177 |
| 3b} | darbringen | I 177 |
| 3b} | geschickt | I 177 |
| 3b} | jemanden bedienen | I 177 |
| 3b} | Opferstein | I 177 |
| 3b} | Opfertisch (als heiliges Gerät) | I 177 |
| 3b} | leuchten | I 177 |

| | | | | | |
|------------|------------------------------------|---------|------------|----------------------------------|---------|
| ‘b} | Licht | I 177 | ‘db} | [Schurz mit Tierschwanz] | V 560 |
| ‘b} | Beiname des Horus | I 177 | ‘db} | [Kleid] | V 560 |
| m‘b} | dreißig | II 46 | ‘db} | [Gewebe] | V 560 |
| m‘b} | [Speer] | II 47 | ‘db} | Kasten (für gefangene Vögel) | V 561 |
| m‘b} | Speerkämpfer | II 47 | ‘db} | Edfu | V 562 |
| ‘b} | in Furcht sein (bildlich) | IV 44 | ‘db},t | Palast | V 561 |
| wb} | bohren | I 290 | ‘db},t | Schrein | V 561 |
| wb} | entjungfern | I 291 | ‘db},t | Untersatz für Götterschrein | V 561 |
| wb} | Vorhof | I 291 | ‘db},t | zahlungsunfähig | V 556 |
| wb} | ausschenken | I 291 | ‘sw-m-db} | dieser (pron. dem. masc. sg.) | I 492 |
| wb} | Diener | I 292 | p} | der (art. masc. sg.) | I 492 |
| wb},t | Öffnung | I 291 | p} | fliegen | I 494 |
| ‘nr-wb} | [Gegenstand aus Stein] | I 291 | p} | etwas getan haben | I 494 |
| ‘swb} | Gesicht öffnen | IV 67 | p} | Urzustand | I 495 |
| nb} | Tragstange | II 243 | p} | [Kleidung] | I 495 |
| nb} | [hornförmiger Gegenstand] | II 243 | p},t | Opferkuchen | I 495 |
| nb} | (Verbum) | II 243 | p},t | Urzeit | I 496 |
| nb},t | [Piabl bei Gründungszeremonie] | II 243 | p},t | vornehme Damen | I 497 |
| ‘sn-nb} | [Perrücke?] | II 243 | np},p} | fliegen | II 248 |
| ‘nb} | stumm sein | I 96 | ‘p} | [roter Farbstoff] | I 68 |
| ‘nb} | (Verbum) | III 459 | ‘p} | Büro o. ä. | I 68 |
| ‘rb} | Nashorn | I 115 | ‘p},t | Büro o. ä. | I 68 |
| ‘hb} | [Fisch] | III 62 | np} | Darm | II 247 |
| ‘hb} | [Götterschiff am Himmel] | III 62 | np} | benetzen | II 247 |
| ‘hb} | [guter Zustand des Bieres] | III 62 | np},t | [kleiner Kuchen] | II 248 |
| ‘hb} | (trans. Verbum) | III 253 | ‘rj-np} | Wasserspense darbringen | II 248 |
| ‘hb} | hacken | III 253 | ‘hp} | Nabel | III 365 |
| ‘hb} | Verlust an Maß | III 253 | ‘hp} | [Teil von Nadelbäumen] | III 366 |
| ‘hb} | jemandem zum Trotz | III 253 | ‘s;d-hp},f | Nabelschnur abschneiden | III 365 |
| ‘hb} | = ‘hbj – tanzen | III 253 | ‘sp} | [Eigenschaft des Gesichtes] | III 441 |
| ‘sb} | blasen (Flöte) | III 433 | ‘sp} | Tausendfuß | III 441 |
| ‘sb} | schmähende Bezeichnung des Apophis | IV 82 | ‘sp} | Gott Sepa | III 441 |
| ‘sb} | Stern | IV 82 | ‘sp} | [Sessel] | III 441 |
| ‘sb} | [offizinell Verwendetes] | IV 83 | ‘sp} | (Verbum von Eingeweiden) | III 441 |
| ‘sb} | Tor | IV 83 | ‘sp} | fliegen lassen | IV 100 |
| ‘sb} | lehren | IV 84 | f} | [heiliger Ort des Anubis] | IV 101 |
| ‘sb} | lernen | IV 84 | f},t | (Verbum vom Vergehen der Leiche) | I 575 |
| ‘sb} | Zögling | IV 84 | f},t | Auftragen der Speisen | I 574 |
| ‘sb} | Setzwaage | IV 86 | f},t | schöne Gestalt | I 574 |
| ‘sb},t | Sternbild | IV 83 | f},t | Last (eines Schiffes) | I 574 |
| ‘sb},t | [Schiffahrtsausdruck] | IV 86 | wf} | Staub | I 575 |
| ‘t-sb} | Schule | I 160 | wf} | Lunge | I 306 |
| ‘gb} | Arm | V 163 | pf} | beistimmen | I 306 |
| ‘gb} | Seite, Wand | V 163 | pf} | jener (pron. dem. masc. sg.) | I 507 |
| ‘gb} | blenden | V 164 | nf} | dort | I 507 |
| ‘imj-gb},f | [von einem göttlichen Schlächter] | V 164 | nf} | jenes (pron. dem. pl.) | II 252 |
| ‘db} | umfallen | V 435 | ‘nrf},t | ausschnauben | II 252 |
| ‘db} | = ‘db} – schmücken | V 435 | ‘h} | [Soldaten] | II 80 |
| ‘db} | = ‘db} – [göttliches Wesen] | V 435 | ‘h} | Anmaßung | III 292 |
| ‘db},t | [Örtlichkeit im Amduat] | V 436 | ‘h},t | (intr. Verbum) | III 73 |
| ‘db} | Harpunenschwimmer | V 555 | ‘h},t | jemandem huldigen | III 73 |
| ‘db} | [oberer Teil des Vogelnetzes] | V 555 | ‘h},t | Schlange | III 72 |
| ‘db} | ersetzen | V 555 | ‘h},t | Gewürm | III 73 |
| ‘db} | bekleiden, schmücken | V 556 | ‘sf} | (intr. Verbum) | III 73 |
| ‘db} | verstopfen | V 558 | ‘sf} | in demütiger Haltung | III 73 |
| ‘db} | Opferspeisen | V 560 | ‘sf},t | Mahlzeit | III 271 |
| ‘db} | [Szepter] | V 560 | ‘kf},t | hassen | IV 114 |
| ‘db} | Harpune | V 560 | ‘kf},t | (Verbum) | IV 114 |
| ‘db} | Harpunenseil | V 560 | ‘kf},t | Haß | IV 114 |
| | | | | Ansehen | V 31 |
| | | | | (in unklarem Zusammenhang) | V 32 |

| | | | | | |
|-----------|------------------------------------|--------|--------------|--|---------|
| ‘kf} | Steiß | V 120 | ‘hm},t | Ball schlagen (in Zere- monie) | III 93 |
| ‘kf} | [Pflanzenteil] | V 120 | ‘hm},t | Salz | III 93 |
| ‘kf} | sparsam o. ä. | V 120 | ‘sh},t-hm},t | Wadi Natrûn | IV 230 |
| ‘kf} | Kasten (adv. Verstärkung der Neg.) | V 120 | sm} | Lunge | III 445 |
| ‘kf} | öffnen | V 121 | sm} | sich vereinigen mit, ver- einigen | III 446 |
| ‘kf} | = ‘kfj – entblößen | V 121 | sm} | insgesamt | III 446 |
| ‘tf} | Säge | V 298 | sm} | (in späten Titeln) | III 451 |
| ‘tf} | jene (pron. dem. fem. sg.) | V 298 | sm} | Scheitel | III 451 |
| ‘tf},t | Schutzgöttin von Ober- ägypten | I 144 | sm} | begatten | III 451 |
| ‘df} | Nahrung | V 569 | sm} | [Schutzgott des Osiris] | III 451 |
| ‘df} | (Verbum vom Reinigen der Kapelle) | V 571 | sm} | Gestalt | III 451 |
| ‘df} | jemanden ernähren | V 571 | sm} | [Ortsbezeichnung] | III 451 |
| ‘df} | = ‘dfj – einsinken | V 571 | sm} | Freude | III 452 |
| ‘df},t | Nahrung | V 571 | sm} | Altar | III 452 |
| ‘df},t | [Gewässer im Jenseits] | V 571 | sm},t | Bett | III 452 |
| ‘is-df} | Küche | V 570 | sm},t | [Göttin] | III 451 |
| ‘sd} | speisen | IV 383 | sm},t | – smj,t – Osirisgrab | III 451 |
| ‘sd} | Einkommen eines Tempels | IV 384 | dm-d-sm} | [Thron] | III 452 |
| ‘sd} | (Waffen zum Kampf bereiten) | IV 384 | ‘t-sm} | insgesamt | III 446 |
| ‘sd} | [Eidesleistung] | IV 384 | sm} | Landungsstelle | III 448 |
| ‘m} | Sichel | II 6 | sm} | [behaarter Teil des Kopfes] | IV 122 |
| ‘m} | Heck | II 6 | sm} | töten | IV 122 |
| ‘m} | Bug | II 6 | sm} | Schlachtopfer | IV 123 |
| ‘m} | Antilope | II 11 | sm} | Wildtier | IV 124 |
| ‘m} | [Pflanze] | II 11 | sm},t | [Beischrift zu einem Beutel] | IV 124 |
| ‘m} | neu | II 26 | sm},t | [Götterbarke] | IV 124 |
| ‘m},t | Flöte | II 6 | ‘ism},t | Wildkuh | IV 124 |
| ‘m},t | Rohr | II 6 | sm} | [Götin] | IV 124 |
| ‘m},t | Neues | II 26 | sm} | [Dekan] | I 132 |
| ‘pr-m} | Villa | I 515 | sm} | (in einem Titel) | IV 470 |
| ‘m},m} | Dumpalme | II 29 | sm} | landfremder Bettler | IV 470 |
| ‘im} | Dattelpalme? | I 79 | sm} | wandern | IV 470 |
| ‘im} | angenehm sein | I 79 | sm} | wild (vom Esel) | IV 470 |
| ‘im} | Liebenswürdigkeit | I 80 | sm} | [Gott des 25. Mondmonats- tages] | IV 470 |
| ‘im} | schöne Gestalt | I 80 | sm} | Landfremder | IV 470 |
| ‘im} | Bezeichnung der Opfer- speisen | I 80 | km} | Wurfwald | V 33 |
| ‘im} | verschönern (mit Gold) | I 80 | km} | werfen | V 33 |
| ‘im} | [Land in Nubien] | I 81 | km} | [Zubereitungsart des km}hw- Brotes] | V 34 |
| ‘im},t | weiblicher Steinbock | I 79 | km} | schaffen | V 34 |
| ‘im},t | Weibchen (vom Wild) | I 79 | km} | Schöpfer | V 36 |
| ‘im},t | Liebenswürdigkeit | I 80 | km} | Wesen | V 36 |
| ‘im},t | Schönheit | I 80 | km} | hämmern (Metall) | V 36 |
| ‘im},t | [Priesterin in Edfu] | I 80 | km} | jemanden beklagen | V 37 |
| ‘im},t | (in alten Titeln) | I 81 | km} | [gute Eigenschaft] | V 37 |
| ‘nb-im},t | Beliebter | I 80 | km} | Binse | V 37 |
| ‘sm} | [Pflanze] | III 51 | km},t | [heilige Rinder von be- stimmter Farbe] | V 38 |
| ‘m} | freundlich stimmen | IV 37 | km},t | Erzeugnis | V 36 |
| ‘m} | sauer werden (Bier) | I 185 | km},t | [Land, aus dem Myrrhe kommt] | V 38 |
| ‘m} | Bierkrug | I 185 | gm} | Joch–Schläfenbein | V 170 |
| ‘m} | [kostbarer Stein] | I 185 | tm} | [heiliger Baum im 3. Gau von Unterägypten] | V 307 |
| ‘m} | Pflanze | I 185 | tm} | Matte | V 307 |
| ‘m},t | [Körperteil des Osiris] | I 185 | tm} | Sack | V 307 |
| ‘m<m} | (Substantiv) | II 46 | tm} | Rotte Soldaten | V 307 |
| ‘rm} | 1/32 der Arure | II 392 | tm},t | Matte | V 307 |
| ‘hm} | Ball | III 93 | tm},t | Mutter | V 308 |
| ‘hm} | (in einem Vergleich) | III 93 | tm},t | | |

| | | |
|------------|---|---------|
| {m} | kräftig (Arm) | V 367 |
| {m},t | [Dekansternbild] | V 368 |
| dm} | zusammenbinden | V 451 |
| dm} | Abteilung (Soldaten, Sänger) | V 452 |
| dm} | [bunter Schurz] | V 452 |
| dm} | (Verbum vom kranken Blut im Herzen) | V 453 |
| dm} | (Substantiv vom Opfer- geben?) | V 453 |
| dm},t | Flügel | V 452 |
| dm},t | (Beischrift zu einem Gefäß) | V 453 |
| n} | dieses (pr. dem. pl.) | II 199 |
| n}-(n) | diese (Possesivpräfix) | II 199 |
| n} | die (art. pl.) | II 199 |
| h}n} | wenn doch . . . wäre | II 481 |
| m}n} | hierher | II 44 |
| m}n} | so | II 44 |
| šfn} | (Verbum) | IV 115 |
| r} | Mund | II 389 |
| r} | Öffnung, Tür | II 390 |
| r} | Ausspruch | II 391 |
| r} | Teil (Bildung von Bruch- zahlen) | II 392 |
| r} | kleines Hohlmaß (1/320 h}h},t) | II 392 |
| r} | Drittel | II 392 |
| r} | Wasserlinie | II 392 |
| r} | pro Kopf (in Listen) | II 392 |
| r} | Gans | II 393 |
| r} | Schlange | II 393 |
| r} | [Binde] | II 393 |
| {b}-r} | mit klugem Rat | I 177 |
| sm}-r} | [Gewässer im XVII. Gau von Unterägypten] | III 448 |
| {š}-r} | geschwätzig | I 228 |
| wd}-r} | verschwiegen | I 400 |
| d}-r} | etwas essen | V 514 |
| mwf},t-r} | Speichel | II 53 |
| tpj}-r} | Kapitel | IV 287 |
| imj}-r} | Zunge | I 74 |
| imj}-r} | Vorsteher | I 74 |
| imj}-r} | Ausspruch | I 74 |
| imj},t-r} | [Geräte] | I 74 |
| štj}-r} | Mundgeruch | IV 350 |
| štj}-r} | Frühstück | IV 350 |
| wdj}-r} | sprechen | I 386 |
| rdj}-r} | sprechen | II 389 |
| h}-r} | [Priestertitel] | III 242 |
| wd}-r} | Mund öffnen | I 408 |
| tpj},w-r} | Zähne (der Schlange) | V 288 |
| {w}-r} | Frühstück | I 39 |
| {bu}-r} | Frühstück | I 175 |
| hmw},t-r} | Spruch | III 85 |
| n}dw},t-r} | Ratschlag, Orakel | II 372 |
| w{b}-r} | [Rind] | I 284 |
| h}bt},t-r} | Schmälerei | III 251 |
| h}p}-r} | verschwiegen | III 30 |
| wp},t-r} | Mundöffnung | I 300 |
| tp}-r} | Wort | V 287 |
| tp}-r} | Basis des Dreiecks | V 287 |
| tp}-r} | Radius des Kreises, der Kugel | V 287 |

| | | |
|-----------|----------------------------------|--------|
| tp}-r} | Biß (eines Krokodils) | V 287 |
| tp},t-r} | Ausspruch | V 287 |
| šm}-r} | geschwätzig | IV 465 |
| ndm}-r} | [Räucherwerk] | II 381 |
| prw}-n-r} | Ausspruch | I 526 |
| wbn}-r} | Bezeichnung des Apophis | I 295 |
| fnh}-r} | weise | I 577 |
| rh}-r},f | richtig zu reden wissen | II 443 |
| št}-r} | Mund | IV 4 |
| šk}-r} | [Schlange] | IV 311 |
| nd}-r} | um Rat fragen | II 371 |
| nd}-r} | bewachen | II 372 |
| nd}-r} | [Amulett in Herzform] | II 372 |
| mj}-r}-n | nach dem Verhältnis . . . | II 392 |
| šr}-t | [Kleidungsstück] | IV 192 |
| h} | oh! | II 471 |
| h} | = h}j — Jubel | II 471 |
| h} | Fron | II 475 |
| h} | rösten | II 475 |
| rm}-h} | Fronarbeiter? | II 475 |
| ššw}-n-h} | Brotsorte | II 475 |
| {kw}-n-h} | Brotsorte | II 475 |
| h}h} | (Substantiv) | II 481 |
| w}h}h} | Überhebung | I 340 |
| rwh} | Abend | II 409 |
| rwh} | Abendausgang? | II 409 |
| twh} | zurückweichen | V 255 |
| štwh} | bannen | IV 334 |
| bh} | Wedel | I 467 |
| bh} | kehrt machen zum Fliehen | I 487 |
| šbh} | in die Flucht schlagen | IV 90 |
| nh} | bespringen | II 283 |
| nh} | = nh},t — Sykomore | II 283 |
| nh},t | = nh},t — Schutzwehr | II 283 |
| sh} | Aufruhr | IV 206 |
| sh} | beschädigt sein? (von Grenze) | IV 206 |
| sh} | beschädigt sein | IV 206 |
| sh} | satt werden | IV 206 |
| sh} | umkehren | IV 207 |
| sh} | verderben (trans.) | IV 207 |
| sh},t | Trommel | IV 207 |
| šhk} | Leinenstreifen | I 132 |
| kh} | stark wehen (Sturm) | V 136 |
| kh} | Schatten werfen | V 136 |
| kh} | ausstoßen (Geschrei) | V 136 |
| h} | [Zuruf an dreschende Esel] | III 6 |
| h} | klagen | III 6 |
| h} | Klage? | III 7 |
| h} | suchen | III 7 |
| h} | Myrrhe | III 7 |
| h} | [Gott des Westens] | III 7 |
| h} | [von Gründen von Gebäuden] | III 8 |
| h} | Hinterkopf | III 8 |
| h} | Rückseite | III 8 |
| h} | hinten | III 8 |
| h} | herum um (adv.) | III 9 |
| h} | Hinten | III 10 |
| h} | oh daß doch! | III 11 |
| h} | Mangel | III 12 |
| h} | (Verbum der Schifffahrt) | III 12 |
| h} | [von einem Krokodil] | III 12 |

| | | |
|---------------|--|---------|
| h} | Keule | III 12 |
| h} | [Teil des Wagens] | III 12 |
| h} | [in einem Priestertitel] | III 12 |
| h} | Flügel schützend aus- breiten | III 13 |
| h} | [Vogel] | III 7 |
| h} | Kummer | III 7 |
| h} | = }h},t — Acker | III 8 |
| h} | Grab | III 12 |
| h} | Speisen | III 12 |
| h} | [zweitkleinster Stundenteil] | III 13 |
| h} | Vorderteil | III 19 |
| h} | = r}-h},t — vor | III 24 |
| h} | [Gewässer] | III 24 |
| h} | Bezeichnung für Fleisch | III 24 |
| h} | Bezeichnung für Wein | III 24 |
| h} | [Gegenstand in Form eines Löwenvorderteils] | III 24 |
| h} | Bezeichnung für Wasser | III 25 |
| h} | bestes Salböl | III 28 |
| h} | [Tau am Vorderteil des Schiffes] | III 28 |
| rdj}-h},f-(r} | sich nicht kümmern um | III 8 |
| h}h} | Rücken wenden nach | III 227 |
| h}h} | Arme schlingen um | I 545 |
| ph}-h},f-(r} | sich kümmern um | I 545 |
| m}-h},f | [Fährmann am Himmel] | II 6 |
| imj}-r}-h},t | [Titel des Bleichers] | III 7 |
| tpj}-h},t | feines Öl | V 290 |
| imj}-h},t | vor befindlich | III 22 |
| imj}-h},t | früher | III 22 |
| imj}-h},t | Vorfahr | I 74 |
| imj},t-h},t | früherer Zustand | III 22 |
| irj}-h},t-(n) | jemandem voranstehen | III 21 |
| irj}-h},t | Pilot (vorn im Schiff) | I 104 |
| irj}-h},t | [Priestertitel] | I 104 |
| h}h} | hochgemut | III 19 |
| šfj},h}-h},t | Beiwort des Chnum | IV 459 |
| šsp}-n-h},t | jemanden in Empfang nehmen | III 21 |
| dwn}-h},t | [Wächter am Tor der Unter- welt] | V 432 |
| hpr}-h},t | [heilige Barke] | III 267 |
| nfr}-h},t | Diadem | II 256 |
| nfr}-h},t | [Gott in Edfu und Dendera] | II 257 |
| wšr}-h},t | Beiname des Ihi | I 362 |
| wšr}-h},t | Beiname des Amon | I 362 |
| wšr}-h},t | [Schiff des Amon] | I 362 |
| ih},t-h},t | [Kopftuch des Königs] | I 125 |
| wšh}-h},t | [heiliges Schiff] | I 384 |
| š}-h},t | Pilot des Schiffes | I 227 |
| wšd}-h},t | [Ente] | I 270 |
| r}-h},t | Bezeichnung der Nil- mündung | III 24 |
| h}h} | Boden verlieren | III 32 |
| h}h} | [Krankheit des Herzens] | III 32 |
| h} | kämpfen | I 215 |
| h} | Kampf | I 215 |
| h} | Kämpfer | I 216 |
| h} | widrig | I 216 |
| h} | [Schiffsgesäß] | I 216 |
| h} | [Dämon in Besgestalt] | I 217 |
| h} | Nilbarsch | I 217 |

| | | |
|----|---|---------|
| h} | Bezeichnung des Nil- pferdes] | I 217 |
| h} | Kriegsschiff | I 216 |
| h} | Kampflplatz | I 217 |
| h} | Beiname löwenköpfiger Göttinnen | I 217 |
| h} | Babylon (Alt-Kairo) | III 394 |
| h} | Panzerhemd | II 149 |
| h} | Kampf beginnen | IV 190 |
| h} | ausstrecken (Arm) | II 49 |
| h} | brechen, raufen, pflücken | I 346 |
| h} | [Krankheit] | I 347 |
| h} | [Augenkrankheit] | I 347 |
| h} | Kessel zum Kochen | I 347 |
| h} | Oase, Talkessel | I 347 |
| h} | Hinterkopf | II 128 |
| h} | wild | II 290 |
| h} | Bezeichnung des Apophis rauh (von Oberfläche) | II 290 |
| h} | [Krankheit] | II 291 |
| h} | [wegerschwerende Pflanze] | II 291 |
| h} | [Augenkrankheit] | II 290 |
| h} | [Krankheit des Herzens] | II 291 |
| h} | unwirksam machen | IV 169 |
| h} | Getöse | III 475 |
| h} | Herde von Eseln | IV 209 |
| h} | [Speise] | V 138 |
| h} | Hinterkopf | II 163 |
| h} | vernachlässigen | II 163 |
| h} | Stroh | V 481 |
| h} | sich auf etwas stürzen | V 481 |
| h} | (Verbum vom Zustand des Getreides) | V 605 |
| h} | Abgabe | V 605 |
| h} | Muschel (als Hieroglyphe) | III 218 |
| h} | Blatt des Lotus | III 218 |
| h} | tausend | III 219 |
| h} | [Gott] | III 221 |
| h} | (Verbum) | III 221 |
| h} | = h} — jung sein | III 221 |
| h} | [Tätigkeit beim Waschen] | III 221 |
| h} | Bezeichnung des Toten | III 221 |
| h} | [etwas, das der Tote zählt beim Eintritt in den Himmel] | III 221 |
| h} | Halle | III 221 |
| h} | [Gewässer am Himmel] | III 222 |
| h} | Hacke | III 222 |
| h} | sich beugen vor jemandem | III 223 |
| h} | kleines Hohlmaß (1/3 hin) | III 224 |
| h} | Muschel | III 218 |
| h} | = h},tj — Türhüter | III 222 |
| h} | [Gewässer] | III 222 |
| h} | [Halskragen] | III 222 |
| h} | Kopftuch des Königs | III 222 |
| h} | [göttliches Wesen] | III 236 |
| h} | worfen | III 233 |
| h} | [Felder im Jenseits] | III 233 |
| h} | strotzen (von weiblichen Brüsten) | II 306 |
| h} | Geißel | II 306 |
| h} | erfreuen | IV 169 |
| h} | Säulenhalle | I 352 |

| | | | |
|-----------|---------------------------------|---------|------------|
| wb3 | ausleeren | I 353 | h3.t |
| wb3 | Wehen (Sturm) | I 353 | h3.t |
| wb3 | suchen | I 353 | |
| wb3 | besorgen (Waren) | I 354 | h3.t |
| wb3 | = h3j - Wunde unter- suchen | I 354 | h3.t |
| wb3 | Törichter | I 354 | h3.t |
| wb3 | Torheit | I 354 | |
| wb3 | töricht sein | I 354 | h3.t |
| wb3 | Erlaß | I 354 | h3.t |
| wb3 | = wb - Nacht | I 354 | snh3h3 |
| wb3 | = wb - Säule | I 355 | mh3 |
| wb3 | [Tanzstellung] | I 355 | mh3 |
| wb3 | [Gebäck] | I 355 | |
| wb3 | [Lotosblüte] | I 355 | mh3 |
| m-wb3 | nachts | I 352 | sh3(.t) |
| f3j-wb3 | Bote | I 354 | msh3 |
| shwh3 | schädigen | IV 74 | s3 |
| ph3 | [Frucht zum Rinder- mästen] | I 542 | s3 |
| ph3 | [Getränk aus ph3-Frucht] | I 542 | s3 |
| ph3 | spalten | I 542 | s3 |
| ph3 | Abfuhrmittel | I 543 | s3 |
| ph3 | ausstatten | I 543 | s3 |
| ph3 | Platte | I 543 | s3(-r) |
| ph3 | Holzsplit | I 543 | s3 |
| ph3 | Vogelfalle aus Holz | I 543 | s3 |
| ph3.t | Fußfessel (Block) | I 543 | s3 |
| ph3.t | Acker | I 544 | s3 |
| ph3.t | Beiname der Isis | I 544 | s3 |
| gs-ph3 | [Opfergebäck] | V 199 | s3 |
| grg-ph3 | Vogelfalle stellen | I 543 | s3.t |
| sp3 | öffnen = abführen | IV 105 | s3.t |
| mh3 | fesseln | II 130 | mh3.t-s3 |
| mh3 | Fessel | II 130 | 3.t-n.t-s3 |
| mh3 | Kranz von Feigen (wie Maß) | II 130 | imj-s3 |
| mh3 | [Magazin für Holz] | II 130 | 3-n-s3 |
| mh3 | etwas verbrennen | II 130 | hn-s3 |
| mh3 | in Gleichgewicht bringen | II 130 | ss-n-s3 |
| mh3 | durchstoßen (mit Speer) | II 131 | hrj-s3 |
| mh3.t | Waage | II 130 | stp-s3 |
| hrj-mh3.t | Waagemeister | I 104 | stp-s3 |
| smh3 | berichtigten (Handschrift) | IV 141 | sh3-s3 |
| nh3 | Geißel | II 306 | sh3-s3 |
| nh3 | [Messer] | II 306 | hmw.t-s3 |
| nh3 | strotzen (von Brüsten) | II 306 | bs3 |
| sh3 | sich erinnern | IV 232 | bs3 |
| sh3 | = sh - schreiben | IV 235 | bs3 |
| sh3 | sich verbeugen | IV 235 | ib3 |
| sh3 | (kaus. Verbum) | IV 235 | ms3 |
| sh3 | [Gerät im Schiff] | IV 235 | ms3.t |
| sh3 | [Falkengötterbild] | IV 235 | mns3 |
| sh3 | = shwh3 - Nacht ver- bringen | IV 235 | h3 |
| msh3 | sich freuen | II 147 | h3 |
| msh3 | sich verbeugen | II 147 | h3 |
| msh3.t | [göttliches Wesen] | II 147 | h3 |
| msh3.t | [göttliches Wesen] | II 147 | h3.t |
| th3h3 | böse (von Göttern) | V 325 | r3-h3 |
| h3.t | Oxyrhynchosfisch | III 359 | r3-h3 |
| h3.t | Leichnam | III 359 | m3j-hs3 |

| | | |
|--|---------|--|
| Feinde | III 360 | |
| = h3j.t - Leiden, Krank- heit | III 360 | |
| Unreines | III 360 | |
| Delta | III 360 | |
| Erzbergwerk | III 360 | |
| Bezeichnung der Steine des Berges | III 360 | |
| [Gewebe] | III 361 | |
| Deltabewohnerin | III 360 | |
| aufstören | IV 171 | |
| (Verbum) | II 133 | |
| geneigt machen (dem König) | II 133 | |
| [Schiff] | II 133 | |
| fahren | IV 268 | |
| Fahrinne | IV 280 | |
| Sohn | III 408 | |
| Achtelarure | III 411 | |
| [Produkt einer Ent- zündung] | III 411 | |
| [als Personifikation eines Gewässers] | III 411 | |
| abwehren | III 412 | |
| sich begeben nach | III 413 | |
| [Matte] | III 413 | |
| Herde | III 413 | |
| Trupp | III 413 | |
| Acker | III 414 | |
| Schutz | III 414 | |
| Zauberfiguren | III 415 | |
| jemanden begrüßen | III 416 | |
| Tochter | III 411 | |
| Fußbodenplatten | III 412 | |
| Nachkommenschaft | II 140 | |
| [Geschwür] | III 411 | |
| Gehilfe eines Höher- gestellten | III 413 | |
| Phylarch | III 414 | |
| [Gelehrte] | III 373 | |
| Phylenschreiber | III 414 | |
| schützen | III 415 | |
| schützen, Schützer | IV 339 | |
| Palast, Hofstaat | IV 340 | |
| schützen | IV 23 | |
| schützen | IV 310 | |
| Verhexung | III 85 | |
| [Opfergegenstand] | I 475 | |
| Schutz | I 475 | |
| schützen | I 475 | |
| [Öl] | I 64 | |
| (Verbum) | II 136 | |
| Gans (in der Opferliste) | II 136 | |
| = mns3 - Phalluserrektion | II 88 | |
| [Krug] | II 88 | |
| Nilgott | III 160 | |
| Schleim | III 160 | |
| grimmig | III 161 | |
| herum sein um etwas | III 161 | |
| göttliche Kuh | III 162 | |
| Bezeichnung für Krokodil | II 398 | |
| Bezeichnung für Löwe | II 398 | |
| Bezeichnung für Löwe | II 12 | |

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|---------|--|
| m3j.t-hs3.t | Löwin (bildlich von Göttinnen) | II 12 | |
| hs3 | [lederner Teil des Schiffes] | III 332 | |
| ss3 | (mit Bezug auf Ver- pflegung) | III 474 | |
| sh3 | ablegen (Kleider) | IV 273 | |
| sh3 | Rücken | IV 8 | |
| sh3 | Außen | IV 12 | |
| sh3 | Haus | IV 13 | |
| sh3 | Wasserschwall | IV 13 | |
| sh3 | Stall | IV 13 | |
| sh3 | Schmutz | IV 13 | |
| sh3 | reichlicher Ernteseegen | IV 13 | |
| sh3 | [Perle] | IV 13 | |
| sh3 | = sh3r - Wunsch | IV 14 | |
| sh3 | [Quellgötter von Philae] | IV 14 | |
| sh3 | schwach | IV 14 | |
| sh3.t | Mauer | IV 14 | |
| sh3.t | [kostbares Erzeugnis Nubiens] | IV 14 | |
| sh3.t | [Örtlichkeit (mit Türen)] | IV 14 | |
| sh3.t | Sättigung | IV 15 | |
| sh3.t | Satte | IV 15 | |
| sh3.t | hochmütig | IV 9 | |
| sh3.t | Rücken wenden | IV 9 | |
| sh3.t | hinten | IV 10 | |
| sh3.t | hinten, nach | IV 11 | |
| sh3.t | hinten, nach | IV 11 | |
| sh3.t | [Rind] | III 135 | |
| sh3.t | Herr der Weisheit | IV 16 | |
| sh3.t | angreifen (Feind) | IV 25 | |
| sh3.t | jemandem eine Salbe auf- legen | IV 25 | |
| sh3.t | [Gebäck] | I 502 | |
| sh3.t | [Pflanze] | I 64 | |
| sh3.t | Erektion des Phallus | II 88 | |
| sh3.t | Faden | III 166 | |
| sh3.t | ungesalbt | III 400 | |
| sh3.t | [offiziell Verwendetes] | III 400 | |
| sh3.t | Nahrung | IV 275 | |
| sh3.t | [göttliches Wesen] | IV 543 | |
| sh3.t | erfahren sein | IV 543 | |
| sh3.t | = sh - öffnen | IV 545 | |
| sh3.t | [Öl] | IV 543 | |
| sh3.t | Nacht | IV 545 | |
| sh3.t | [offiziell verwendete Pflanze] | IV 545 | |
| sh3.t | sich neigen | V 205 | |
| sh3.t | [Ruhebett] | V 206 | |
| sh3.t | Antilope | V 206 | |
| sh3.t | Sack | V 206 | |
| sh3.t | Sumpfland | IV 399 | |
| sh3.t | Baum | IV 400 | |
| sh3.t | Feldpflanzen | IV 400 | |
| sh3.t | [Schale] | IV 401 | |
| sh3.t | Bezeichnung des Weins | IV 401 | |
| sh3.t | freundlich sein | IV 401 | |
| sh3.t | [Seil am Schiff] | IV 401 | |
| sh3.t | [Tier des Seth] | IV 401 | |
| sh3.t | = sh3j - Schwein | IV 401 | |
| sh3.t | auflaufen (Schiff) | IV 401 | |
| sh3.t | [offiziell Verwendetes] | IV 401 | |
| sh3.t | bestimmen | IV 402 | |

| | | |
|-------|--|---------|
| sh3.t | [innerer Körperteil des Menschen] | IV 402 |
| sh3.t | Vogelkralle | IV 402 |
| sh3.t | Blumen | IV 350 |
| sh3.t | [Holzarz] | III 330 |
| sh3.t | [Krankheit] | III 236 |
| sh3.t | [offizinell verwendete Frucht] | IV 413 |
| sh3.t | = sh3s - verfehlen | IV 413 |
| sh3.t | Stricke drehen | IV 413 |
| sh3.t | unfähig | IV 414 |
| sh3.t | = sh3d - Fenster | IV 414 |
| sh3.t | Bezeichnung eines Heilig- tums | IV 414 |
| sh3.t | viel sein | I 228 |
| sh3.t | Vielheit | I 229 |
| sh3.t | [Vogel] | I 229 |
| sh3.t | Volk, Menge | I 229 |
| sh3.t | sehr viele | V 46 |
| sh3.t | in großer Anzahl | II 449 |
| sh3.t | zahlreich machen | IV 54 |
| sh3.t | abwehren | IV 55 |
| sh3.t | Polizist | IV 55 |
| sh3.t | Abwehrzauber | IV 55 |
| sh3.t | [Geflügel] | IV 55 |
| sh3.t | mästen | I 369 |
| sh3.t | Mäster | I 369 |
| sh3.t | ausschütten | I 369 |
| sh3.t | [vom Behandeln des kranken Zahnes] | I 369 |
| sh3.t | [Geflügel] | I 369 |
| sh3.t | [Frucht] | I 478 |
| sh3.t | Meißel | I 478 |
| sh3.t | Steinmetz | I 478 |
| sh3.t | Körner (des Sandes) | II 338 |
| sh3.t | [Pflanze] | II 338 |
| sh3.t | [schlechte Handlung] (trans. Verb.) | IV 280 |
| sh3.t | [Vogel] | IV 280 |
| sh3.t | jemanden umstimmen | IV 281 |
| sh3.t | [Göttin der Schreibkunst] | IV 280 |
| sh3.t | zerquetschen (Korn) | V 329 |
| sh3.t | spalten | V 329 |
| sh3.t | Bezeichnung des Atum | V 1 |
| sh3.t | hoch | V 1 |
| sh3.t | Bezeichnung fremder Länder, Völker | V 5 |
| sh3.t | [Göttesbezeichnung] | V 5 |
| sh3.t | [Schiffsteil] | I 21 |
| sh3.t | [schlechte Eigenschaft des Herzens] | V 14 |
| sh3.t | essen | V 14 |
| sh3.t | emporblicken (von Pylonen) | V 14 |
| sh3.t | [Art, wie Feinde getrieben werden] | V 72 |
| sh3.t | richtig sein | I 233 |
| sh3.t | richtig Handelnder | I 233 |
| sh3.t | genau | I 233 |
| sh3.t | Richtiges | I 233 |
| sh3.t | gegenüber von | I 234 |
| sh3.t | [Tau bestimmter Art an Schiffen] | I 234 |
| sh3.t | Tau richtig handhaben | I 234 |

| | | |
|---------------------|------------------------------------|---------|
| {k} | [Priester] | V 234 |
| {k} | [Körperteil des Rindes] | I 234 |
| {k} | [Gewässer im Gau von Propolis] | I 234 |
| m- ^c {k} | gegenüber von | I 233 |
| r- ^c {k} | gegenüber von | I 234 |
| s- ^c {k} | gerade machen | IV 56 |
| f{k} | Kuchen | I 579 |
| f{k} | belohnen | I 579 |
| f{k} | Belohnung | I 579 |
| f{k} | (Verbum) | I 579 |
| f{k} | abreißen (Pflanzen) | I 579 |
| h{k} | herrschen | III 170 |
| h{k} | = h{k} - erbeuten | III 170 |
| h{k} | Herrscher | III 170 |
| h{k} | [Schutzgott des Osiris] | III 174 |
| h{k}.t | [Szepter] | III 170 |
| h{k}.t | Herrscherin | III 173 |
| h{k}.t | Herrschaft | III 173 |
| h{k}.t | = h{k}.t - Göttin, Uräus | III 174 |
| h{k}.t | Uräus | III 174 |
| h{k}.t | Bezeichnung eines Priesters | III 174 |
| h{k}.t | Scheffel, h{k}.t - Maß | III 174 |
| h{k}.t | zum Herrscher einsetzen | IV 221 |
| s{k} | hoch machen | IV 302 |
| s{k} | Untersatz (für Kapellen) | IV 303 |
| s{k} | Erhöhung | IV 303 |
| k} | so . . . | V 84 |
| k} | sagen | V 85 |
| k} | [als Schriftzeichen] | V 86 |
| k} | Ka | V 86 |
| k} | Kraft | V 87 |
| k} | Nahrung | V 91 |
| k} | Name | V 92 |
| k} | Material für Gefäße | V 93 |
| k} | (Substantiv mit Bezug auf Krönung) | V 93 |
| k} | Stier | V 94 |
| k}.t | Gedanke | V 84 |
| k}.t | weiblicher Geschlechtsteil | V 93 |
| k}.t | Nahrungsmittel (neben Datteln) | V 94 |
| k}.t | Arbeit | V 98 |
| k}.t | Erzeugnis | V 100 |
| h{k}-k} | Bezeichnung der Überschwemmung | I 150 |
| nhb-k} | angesehen sein | II 291 |
| nhb.t-k} | [Schlange als Schutz der Königin] | II 292 |
| hnp-k} | Überschwemmungswasser | III 291 |
| hnp-k} | Bezeichnung des Kotes | III 195 |
| hm-k} | Bezeichnung des Totenpriesters | III 90 |
| hm.t-k} | Bezeichnung der Totenpriesterin | III 90 |
| stj-n-k}.f | Bezeichnung des Toten sterben | III 430 |
| hpy-n-k}.f | Bezeichnung der Toten | III 253 |
| sb.t-n-k}.s | Grabkapelle | III 430 |
| h.t-k} | [Fest, Monat] | III 5 |
| k}-hr-k} | [Fest, Monat] | V 93 |
| k}-hr-k} | [Tempelgefäß] | V 93 |

| | | |
|------------------------|---|---------|
| kd-k} | [Schutzgott des Osiris] | V 80 |
| rj- ^c -k}.t | unvollendete Arbeit | II 394 |
| km-k}.t | Arbeit ausführen | V 128 |
| is-n-k}.t | Arbeitsraum | I 127 |
| b{k} | = bk} - schwanger werden | I 430 |
| b{k}.t | Grundstück | I 430 |
| k{k} | [Pflanze] | V 109 |
| k{k} | in einem Vergleich | V 109 |
| nk{k} | [guter Zustand des Leichenfleisches] | II 345 |
| mjk}.t | [offizinell verwendete Frucht] | II 45 |
| {k} | = {g} - ertrinken | I 235 |
| {k} | = {g}.t - Kralle | I 235 |
| m ^c {k} | kühn | II 50 |
| bk} | schwanger werden, sein | I 481 |
| bk} | das Morgen | I 481 |
| bk}.t | Schwangere | I 481 |
| bk}.t | Mutterkuh | I 481 |
| sb{k} | schwanger machen | IV 95 |
| f{k} | wüst sein | I 579 |
| mfk}.t | Malachit | II 56 |
| mfk}.t | Grün der Pflanzen | II 56 |
| mfk}.t | Freude | II 58 |
| mfk}.t | Bezeichnung der Hathor | II 57 |
| mfk}.t | Wadi Maghara | II 57 |
| mfk}.t | Bezeichnung des Papyrus | II 57 |
| nb.t-mfk}.t | Beiname der Hathor | II 56 |
| mk} | kühn | II 50 |
| mk} | (Verbum) | II 162 |
| mk} | Vertiefung | II 162 |
| mk}.t | stützender Unterbau | II 162 |
| nk} | überlegen | II 345 |
| hk} | Zauber | III 175 |
| hk} | Zauber (als Personifikation) | III 177 |
| hk} | jemanden bezaubern | III 177 |
| hk}.t | Zauberbuch, Zettel mit Zauberspruch | III 178 |
| bhk} | [Zustand von Personen] | I 470 |
| sk} | pflügen | IV 315 |
| sk} | Ernte | IV 318 |
| sk} | Pflugstier | IV 318 |
| sk} | Acker | IV 316 |
| sk} | Thron | IV 316 |
| sk} | [Tier] | IV 316 |
| wr-sk}.t | [Gottheit] | IV 316 |
| msk} | Fell | II 150 |
| msk}.t | [Herkunftsorort von Steinen in Khargeh] | II 150 |
| ssk} | Schläfe | IV 279 |
| ssk} | [Stoff für Salben] | IV 279 |
| tk} | verbrennen | V 332 |
| g} | verwunden | V 149 |
| g} | singen | V 149 |
| g} | sich beschmieren (mit Salbe) | V 149 |
| g} | [neben Ziegenschlauch, als Gerät] | V 149 |
| g} | Schiffe zu Wasser lassen | V 149 |
| g} | [Reiher] | V 149 |
| g} | (trans. Verbum) | V 153 |
| g}.t | [Göttin] | V 149 |
| g}g} | schnattern | V 157 |

| | | |
|----------------------|---|---------|
| ng}g} | strotzen (von Brüsten) | II 349 |
| ng}g} | = ngg - schreien | II 349 |
| {g} | = {g} - rösten | I 235 |
| {g} | (Verbum) | I 235 |
| {g} | kentern | I 235 |
| {g} | [offizinell Verwendetes] | I 236 |
| {g} | [Salbe] | I 236 |
| {g}.t | Kralle (Löwe, Vogel) | I 235 |
| tm- ^c {g} | Geflügel aus den Sümpfen kentern lassen | IV 56 |
| s ^c {g} | = wg - Brett, Planke | I 376 |
| wg} | [Getreide] | I 376 |
| wg} | [Gewässer] | I 376 |
| wg} | Alterschwäche | I 376 |
| wg}.t | Schädliches | I 376 |
| swg} | töricht sein | IV 76 |
| swg} | unmündiges Kind | IV 76 |
| gbg} | [dem Toten feindlicher Vogel] | V 165 |
| pg} | ausbreiten | I 562 |
| pg} | [Art zu sitzen oder stehen] | I 562 |
| pg} | Bezeichnung des Erdgottes | I 562 |
| pg} | Öffnung | I 562 |
| pg} | Kampfpfplatz | I 562 |
| pg} | schlachten (Feind) | I 562 |
| pg} | Schale, Gefäß | I 563 |
| pg} | [ausländisches Gerät] | I 563 |
| fg} | aufreißen (jemandem den Mund) | I 580 |
| fg} | = fgn - sich entleeren | I 580 |
| mg} | [offizinell verwendete Pflanze] | II 164 |
| mg} | junger Krieger | II 164 |
| mg} | Bezeichnung des Seth, des Krokodils | II 164 |
| mg}.t | traurig | II 164 |
| mg}.t | [Gerät] | II 164 |
| ng} | tränen | II 348 |
| ng} | = ngj - brechen, zerbrechen | II 349 |
| ng} | (Verbum) | II 349 |
| ng} | Mangel leiden | II 349 |
| sg} | staunen | IV 320 |
| sg} | schweigen | IV 320 |
| gg} | [kleines Tier] | V 208 |
| dg} | = dgj - sehen, erblicken | V 499 |
| dg} | = dkr - Frucht | V 499 |
| dg} | verlegen (Steine) | V 499 |
| dg} | gehen | V 499 |
| sdg} | verstecken, verbergen | IV 372 |
| sdg} | Verstecktes | IV 373 |
| sdg} | [Gott] | IV 373 |
| sdg} | sehen lassen, erblicken | IV 273 |
| t} | diese (pron. dem. fem. sg.) | V 211 |
| t} | (art. fem.) | V 211 |
| t} | Erde, Erdboden | V 212 |
| t} | Löwe | V 228 |
| t} | Töpferofen | V 228 |
| t} | heiß sein | V 229 |
| t} | verbrennen | V 229 |
| t} | Tor | V 230 |
| t} | [Opfertier] | V 231 |
| hnb-t} | Brotration | III 112 |

| | | |
|------------------------------------|---------------------------------------|---------|
| sm}-t} | landen | III 448 |
| h}-t} | Acker, Ackermaß | III 220 |
| s}-t} | Schlange | III 410 |
| s}-t} | Jauchzen | III 416 |
| p.t-hr-s}.t} | [Karnak] | I 491 |
| nt}-t} | Richter (Götterbezeichnung) | II 351 |
| s}-t} | Nehrung am Delta | III 410 |
| d}-t} | etwas unternehmen | V 513 |
| tpj}-t} | Erdenbewohner | V 292 |
| imj}-t} | Bezeichnung der Schlangen, der Steine | I 75 |
| hp-imj}-t} | spukender Toter | III 259 |
| snj}-t} | Bezeichnung der Pflanzen | IV 501 |
| snj}-t} | [Pflanze aus Wadi Natrün] | IV 502 |
| hrj}-t} | auf Erden Lebender | III 136 |
| hrj.w-t} | Bezeichnung der Toten | III 389 |
| snn.tjw-t} | Befehlshaber | IV 166 |
| htjw-t} | Wanderstämme | III 343 |
| kw-t} | [Osiris] | I 139 |
| kw-t} | Diener | I 139 |
| tp-t} | Erdenleben | V 274 |
| mhn-t} | Name einer Schlange | II 128 |
| sn-t} | Erde küssen | IV 154 |
| wdj-r-t} | auf die Erde legen, landen | I 387 |
| ndj-r-t} | zu Boden werfen | II 367 |
| rdj-r-t} | auf den Boden legen | II 467 |
| ir-t} | Weitschöpfer | I 109 |
| nwr-t} | Erdbeben | II 223 |
| s}-h-t} | landen | IV 20 |
| s}-h-t} | [Nachbarn] | IV 21 |
| mh-t} | Ackermaß (100 Quadratellen) | II 120 |
| hbd-t} | Name eines Gottes | III 256 |
| ht-t} | umherziehen | III 343 |
| ht.t-t} | Höhle (einer Schlange) | III 344 |
| hd-t} | es tagt | III 207 |
| hd-t} | Morgen | III 208 |
| shd-t} | Sonnenaufgang | IV 226 |
| it} | [Gewebe] | I 143 |
| it} | [Waffe] | I 143 |
| mr- ^c t} | [militärischer Titel] | I 236 |
| bt} | Verbrechen | I 483 |
| bt} | schuldig werden | I 484 |
| bt} | Verbrecher | I 484 |
| bt} | = bt - laufen | I 484 |
| bt}.t | Benechtigung | I 484 |
| wtj-bt}.f | schuldlos | I 484 |
| s ^c h ^c -bt} | Unrecht verfolgen | IV 54 |
| sw-m-bt}.f | schuldlos | I 484 |
| mt} | erstechen (mit Speiß) | II 170 |
| mt} | (Substantiv) | II 170 |
| nt} | laufen | II 351 |
| mnt} | heiliger Hain des Abaton | II 91 |
| hnt} | [Tier] | III 122 |
| hnt} | [Teil der Brust am Brustbein] | III 122 |
| ht} | schmutzig | III 182 |
| ht}.t | = t}h.t - [Flüssigkeit] | III 183 |
| ht} | beschleichen (Festung) | III 349 |
| ht} | Land Chatti | III 349 |
| ht} | Hethiter | III 349 |

| | | |
|---|--|---------|
| st ₃ | erwärmen | IV 333 |
| st ₃ | Feuer | IV 333 |
| st ₃ | Protektor | IV 334 |
| st ₃ | = st ₃ - ziehen | IV 334 |
| st ₃ .t | Lampe | IV 333 |
| st ₃ -st ₃ | Feuer anzünden | III 467 |
| st ₃ -st ₃ | [Gang im Königsgrab des NR] | II 398 |
| mst ₃ | = mst ₃ - [Korb] | II 151 |
| mst ₃ | [Flüssigkeit] | II 151 |
| hmt ₃ n ₃ -n-mst ₃ | [Flüssigkeit] | III 285 |
| st ₃ | geheim | IV 551 |
| st ₃ | geheim machen | IV 553 |
| st ₃ | Bezeichnung der Berge | IV 554 |
| st ₃ | Gestalt | IV 554 |
| st ₃ | tragbarer Schrein | IV 555 |
| st ₃ | [Dekangestirn] | IV 555 |
| st ₃ | Baumpflanzung | IV 555 |
| st ₃ | Bezeichnung des Wassers | IV 555 |
| st ₃ | Acker | IV 555 |
| st ₃ | kleines Kind | IV 555 |
| st ₃ .t | geheime Dinge | IV 554 |
| st ₃ .t | = st ₃ .t - [Heiligtum des Soker] | IV 554 |
| st ₃ .t | [Geiergöttin] | IV 554 |
| st ₃ .t | [Geiergöttin von El Kab] | IV 554 |
| st ₃ .t | Leib | IV 555 |
| st ₃ .t | Ei | IV 555 |
| st ₃ .t | Mysterien | I 473 |
| st ₃ .t | [Standarte] | V 239 |
| st ₃ .t | [Titel eines Arztes] | I 159 |
| st ₃ .t | geheim machen | IV 296 |
| st ₃ .t | geheim | IV 297 |
| st ₃ .t | Geheimnis | IV 298 |
| st ₃ .t | Gestalt (eines Gottes) | IV 299 |
| st ₃ .t | fortgehen | IV 299 |
| st ₃ .t | [Mumiendiade] | IV 300 |
| st ₃ .t | Acker | IV 300 |
| st ₃ .t | Brot | IV 300 |
| st ₃ .t | [von geheimnisvollen Übeln, die das Jahr bringen kann] | IV 300 |
| st ₃ .t | Geheimrat | IV 298 |
| st ₃ .t | [9. Tagesstunde] | V 614 |
| st ₃ .t | [6. Nachtstunde] | V 614 |
| st ₃ .t | Geier | V 618 |
| st ₃ .t | junger Vogel | V 339 |
| st ₃ .t | Kügelchen | V 341 |
| st ₃ .t | Kleid | V 342 |
| st ₃ .t | Holz für Peitschen | V 342 |
| st ₃ .t | anmaßend | V 342 |
| st ₃ .t | [vom Zurechtmachen eines verwahrlosten Wanderers] | V 349 |
| st ₃ .t | [Teil des Wagens] | V 349 |
| st ₃ .t | [in Verbindung mit Brauerei] | V 343 |
| st ₃ .t | [Gefäß] | V 343 |
| st ₃ .t | [Frauentitel] | V 343 |
| st ₃ .t | Würde | V 343 |
| st ₃ .t | [in Verbindung mit Flachs] | V 343 |
| st ₃ .t | Besitz an Leuten | V 343 |
| st ₃ .t | Vezerin | V 344 |
| st ₃ .t | [thebanischer Priestertitel] | V 342 |

| | | |
|-----------------|--|---------|
| st ₃ | fortnehmen | I 150 |
| st ₃ | Dieb | I 151 |
| st ₃ | verhöhnern | I 503 |
| st ₃ | [Kupferkrug] | I 450 |
| st ₃ | Phallus | II 175 |
| st ₃ | (Verbum vom Namen) | II 175 |
| st ₃ | herausfordern | II 175 |
| st ₃ | [Titel] | II 175 |
| st ₃ | [vom ererbten Landbesitz] | II 175 |
| st ₃ | Vezerin | II 175 |
| st ₃ | Schale für Wasser | II 92 |
| st ₃ | Thronestrade | V 384 |
| st ₃ | Tragsessel | V 385 |
| st ₃ | Thronhalle | V 385 |
| st ₃ | [Brot] | III 204 |
| st ₃ | [krankhafter Zustand des Herzens] | III 204 |
| st ₃ | Krug | IV 351 |
| st ₃ | [Handlung beim Bierbrauen] | IV 351 |
| st ₃ | Lebensunterhalt besorgen | IV 351 |
| st ₃ | ziehen | IV 351 |
| st ₃ | ziehen, fließen | IV 353 |
| st ₃ | zäh (Teig) | IV 354 |
| st ₃ | Gang (als Bauwerk) | IV 354 |
| st ₃ | spinnen | IV 355 |
| st ₃ | [h ₃ d ₃ - Gewebe] | IV 355 |
| st ₃ | [Gewässer im Gau von Kusae] | IV 355 |
| st ₃ | Schwellung | IV 355 |
| st ₃ | (Substantiv bei Tischlerei) | IV 351 |
| st ₃ | ziehbarer Behälter | IV 354 |
| st ₃ | Darreichung | IV 355 |
| st ₃ | Arure | IV 356 |
| st ₃ | Nekropole | IV 356 |
| st ₃ | zäher Teig | IV 354 |
| st ₃ | herbeiführen | IV 357 |
| st ₃ | niederschmettern | V 414 |
| st ₃ | entkommen | V 414 |
| st ₃ | zittern | V 415 |
| st ₃ | = d ₃ - schmücken | V 415 |
| st ₃ | Unterwelt | V 415 |
| st ₃ | [Himmelsgegend, wo Sonne aufgeht] | V 415 |
| st ₃ | Bezeichnung des Grabes | V 416 |
| st ₃ | Abgrund | V 416 |
| st ₃ | Unzucht | V 419 |
| st ₃ | entkommen | V 419 |
| st ₃ | zittern | IV 366 |
| st ₃ | Zittern | IV 367 |
| st ₃ | glattstreichen (bei Töpferei) | I 152 |
| st ₃ | [Gebäck] | I 152 |
| st ₃ | [eßbarer Rinderkörperteil] | II 45 |
| st ₃ | Rohrdommel | IV 365 |
| st ₃ | zittern | IV 365 |
| st ₃ | fett | V 631 |
| st ₃ | reif sein | V 631 |
| st ₃ | Fettes | V 632 |
| st ₃ | fett machen | IV 396 |
| st ₃ | Feuerbohrer | V 511 |
| st ₃ | Durchkreuzung (eines Weges) | V 515 |
| st ₃ | = d ₃ j - fahren | V 515 |

| | | | | | |
|----------------|---|--------|--------------------------------------|---|---------|
| d ₃ | [beim Begräbnis tätige Person] | V 515 | wd ₃ .t | [Messor] | I 402 |
| d ₃ | [Leinenzeug] | V 515 | wd ₃ .t | Weg | I 404 |
| d ₃ | = wd ₃ - Magazin | V 515 | wd ₃ .t | Rest | I 404 |
| d ₃ | mit Korn versorgen | V 516 | rs-wd ₃ | Beiname des Amun | II 451 |
| d ₃ | [Hohlmaß von 0,33 l] | V 516 | rs-wd ₃ | Beiname des Osiris | II 451 |
| d ₃ | (in unklarem Zusammenhang) | V 516 | sm ₃ -wd ₃ | zu Grabe geleiten | IV 485 |
| d ₃ | [krankhafter Zustand der Augen] | V 517 | sm ₃ -wd ₃ | Begräbnis | IV 485 |
| d ₃ | [Gewebe] | V 515 | phw ₃ -wd ₃ .t | [Dekane] | I 537 |
| d ₃ | Grab | V 515 | hnp-wd ₃ .t | Bezeichnung der Gazelle als Tier des Seth | III 291 |
| d ₃ | Kasten, Gemach im Tempel | V 515 | hnm-wd ₃ .t | [Fest] | III 379 |
| d ₃ | Hand | V 516 | mhn-n-wd ₃ .t | [Speicher] | II 115 |
| d ₃ | [Kranich] | V 516 | sw ₃ | wohlbehalten sein lassen | IV 78 |
| d ₃ | Himmel | V 516 | sw ₃ | gelangen lassen, gehen | IV 81 |
| d ₃ | Rest | V 517 | sw ₃ | dahingehen, sterben | IV 81 |
| d ₃ | [Frauenbezeichnung] | V 527 | bd ₃ | = bd ₃ - Gußform | I 488 |
| d ₃ | [Fisch] | II 399 | bd ₃ | [Gans] | I 488 |
| d ₃ | Behörde | V 530 | bd ₃ | Topf aus gebranntem Ton | I 488 |
| d ₃ | Kopf | V 530 | bd ₃ | Mastspitze | I 488 |
| d ₃ | [Gebäude vor Tempel] | V 532 | bd ₃ | Polster | I 488 |
| d ₃ | erbauer (Tempel) | V 532 | bd ₃ .t | Backofen | I 488 |
| d ₃ | Wasser geben lassen (Brunnen) | V 532 | md ₃ | [Land bei Nubien] | II 186 |
| d ₃ | Feind | V 532 | md ₃ | [als Amulett] | II 186 |
| d ₃ | feindlich | V 532 | md ₃ | [Maß für Datteln] | II 186 |
| d ₃ | Behörde | V 528 | md ₃ | eingesperrt sein | II 187 |
| d ₃ | [Ortsbezeichnung] | V 532 | md ₃ .t | Saugrohr | II 187 |
| d ₃ | Harfe | V 533 | md ₃ .t | Schriftstück, Buchrolle | II 187 |
| d ₃ | = d ₃ j ₃ - Sprüche | V 533 | md ₃ .t | Grabstichel | II 188 |
| d ₃ | [Ortsbezeichnung] | V 532 | md ₃ .t | [Zubehör des Netzes] | II 188 |
| d ₃ | [Krankheit der Leber] | II 377 | irj-md ₃ .t | Schreibergehilfe | II 188 |
| d ₃ | Bezeichnung für Wasser | II 377 | pr-md ₃ .t | Bibliothek | I 515 |
| d ₃ | Unrecht, Fehler (im Brief) | I 240 | ss-md ₃ .t | Aktenschreiber | II 188 |
| d ₃ | schuldig sein | I 241 | β-md ₃ .t | Bildhauer | II 188 |
| d ₃ | Frevler | I 241 | nd ₃ | verdursten, ersticken | II 377 |
| d ₃ | lügen (vor Gericht) | I 240 | nd ₃ | Durst | II 377 |
| d ₃ | rauben | III 43 | nd ₃ | Splitter | II 377 |
| d ₃ | Raub | III 44 | nd ₃ .t | Bewässerung | II 377 |
| d ₃ | verderben | IV 57 | rd ₃ | [Fisch] | II 469 |
| d ₃ | Ungehorsam | IV 57 | sd ₃ | Halskette mit Siegelzylinder | V 636 |
| d ₃ | unversehrt sein | I 399 | sd ₃ | kosbar | V 638 |
| d ₃ | Wohlergehen | I 401 | sd ₃ | gehen | IV 377 |
| d ₃ | Magazin | I 402 | sd ₃ | bringen | IV 378 |
| d ₃ | Tempelgemach | I 402 | sd ₃ | vergnügen (trans.) | IV 378 |
| d ₃ | sich begeben nach | I 403 | sd ₃ | = sw ₃ - wohlbehalten sein lassen | IV 379 |
| d ₃ | Horusauge | I 401 | sd ₃ | [Fabeltier] | IV 379 |
| d ₃ | Scheffelmaß | I 402 | sd ₃ .t | [Teil des Beines] | IV 379 |
| d ₃ | Ägypten | I 402 | sd ₃ | = sd ₃ - fett machen | IV 380 |
| d ₃ | Himmel | I 402 | sd ₃ .t | Schatz | V 636 |
| d ₃ | Bezeichnung für Tempeldach | I 402 | r-sd ₃ .t | bis zu ihrem Ende (die Unterwelt durchziehen) | IV 378 |
| i | Blatt des Rohres | I 25 | i | oh! | I 25 |
| j | ich (pron. suff. 1. sg.) | I 25 | j | Binde (med.) | I 2 |
| i | [Thot] | I 25 | i:j.t | Greise | I 29 |

| | | | | | | | | | | |
|----------|-------------------------------|---------|------|-----------------------------|------|----------------------------|---------|------|-----------------------------|---------|
| bʒj | kostbar | I 439 | fʒj | [etwas aus Halbedelstein | hʒj | Nacktheit | III 14 | kʒj | Körner (als Vogelfutter) | V 6 |
| bʒj | freudig staunen | I 440 | | Hergestelltes] | hʒj | Licht | III 15 | hʒj | hochgelegenes Land | V 6 |
| bʒj | Wunder | I 440 | fʒj | Kleiderbehälter | hʒj | Leuchtende (Göttin) | III 15 | hʒj | [Transportschiff] | I 234 |
| hʒj | [süße Speise] | II 492 | fʒj | Trägerschaft des Götter- | hʒj | Übel | III 15 | hʒj | Richtigkeit | I 234 |
| ʒj | Feuersglut | I 166 | | bildes | hʒj | = hʒj – Aufruhr | III 15 | hʒj | denken | V 83 |
| ʒj | Jubel | I 166 | fʒj | Last eines Schiffes | hʒj | unruhig (vom Schlaf) | III 15 | hʒj | Dirne | V 101 |
| ʒj | Heiligtum | I 166 | fʒj | Tragbare | hʒj | Rechteck | III 15 | hʒj | [Nubierschiff] | V 101 |
| ʒj | Himmel | I 166 | fʒj | [Magenkrankheit] | hʒj | [eBbares Geflügel] | III 16 | hʒj | [offiziell Verwendetes] | V 102 |
| ʒj | Differenz feststellen | I 110 | fʒj | [Pflanze] | hʒj | [Tempelgemach] | III 16 | hʒj | Zauberin | III 177 |
| wʒj | fern sein | I 245 | fʒj | Lagerplatz der Beduinen | hʒj | Balsamierungshalle | III 16 | hʒj | Name einer Schlange | V 333 |
| wʒj | sich anschicken zu | I 246 | dfʒj | Besitzer von Speisen | wʒj | Ernte | I 347 | gʒj | jemandem schmähen | V 149 |
| wʒj | wehen (vom Wind) | I 246 | mʒj | Löwe | shʒj | enthüllen | IV 209 | gʒj | [Schale aus Ton] | V 150 |
| wʒj | kommen | I 246 | mʒj | Sphinx | dhʒj | {Substantiv | V 481 | gʒj | befeuchten (Schreibbinde) | V 150 |
| wʒj | jemandem fronden | I 249 | mʒj | [Bahre des Osiris] | hʒj | untersuchen | III 223 | gʒj | [Gott im Amduat] | V 150 |
| wʒj | [krankheitsbringender | | mʒj | [Tier (als Sternbild)] | hʒj | wägen, messen | III 223 | gʒj | [Ortsbezeichnung im Toten- | |
| | Dämon] | I 249 | mʒj | Samenflüssigkeit im Mütter- | hʒj | Meßschnur | III 223 | | reich] | V 150 |
| ʒj | Arbeiterin | I 49 | | leib | hʒj | Maße (eines Gebäudes) | III 223 | gʒj | Kapelle | V 150 |
| ʒj | Kehle | I 49 | mʒj | Löwin | hʒj | = hʒj – Kopftuch des | | rgʒj | [Vogel] | II 349 |
| ʒj | rauben | I 171 | mʒj | [Teil des Tempels] | hʒj | Königs | III 224 | rgʒj | Entjungferung | II 349 |
| ʒj | Räuber | I 171 | ʒmʒj | Blätter des im – Baumes | hʒj | [Schiffsteil] | III 224 | dgʒj | Dörrfleisch | V 500 |
| ʒj | ernten | I 171 | ʒmʒj | Beiname der Hathor | hʒj | Kranker | III 224 | ʒj | diese (pron. dem. fem. sg.) | V 219 |
| ʒj | Räuberin | I 171 | smʒj | Genosse | hʒj | [Getränk] | III 224 | ʒj | widerstehen | V 231 |
| ʒj | [Getränk] | I 172 | smʒj | [Körperteil] | hʒj | Krankheit | III 224 | ʒj | Glut | V 231 |
| hʒj-n-ʒj | gegorener Teig | III 160 | smʒj | Genossenschaft | hʒj | = hʒj – Blutbad, Leichen- | | ʒj | Widersacher | V 231 |
| ʒj | fernhalten | IV 60 | ʒmʒj | [krankheitsbringendes | | haufen | III 224 | ʒj | Tür im Tempel | V 231 |
| dwʒj | morgendlich | V 423 | | Wesen] | hʒj | Altar | III 224 | ʒj | [Webereistadt in Unter- | |
| dwʒj | Morgensonne | V 424 | ʒmʒj | [Krankheitserscheinung] | hʒj | Topf für Milch | III 224 | ʒj | ägypten] | V 231 |
| dwʒj | Morgen | V 424 | ʒmʒj | [Göttin] | hʒj | sich widersetzen | III 361 | ʒj | [Göttin der Webkunst] | V 231 |
| dwʒj | Garten | V 430 | ʒmʒj | [Priesterin] | hʒj | Leichenhaufen | III 360 | ʒj | Mumienbinde | V 232 |
| tp-dwʒj | morgens, am Morgen | V 424 | ʒmʒj | Matte | ʒj | [Göttin] | III 418 | ʒj | [Göttin der Stadt ʒj] | V 231 |
| m-dwʒj | morgens | V 424 | nʒj | diese (pron. dem. pl.) | hʒj | Bestechungsgabe | III 332 | r-ʒj | bis zu diesem Augenblick | V 212 |
| bʒj | [etwas Eßbares aus Ge- | | nʒj | [Haus] | hʒj | [offiziell verwendete | | mʒj | [Spieß] | II 170 |
| | treide] | I 417 | hʒj | herabsteigen | hʒj | Pflanze] | III 332 | mmʒj | Bezeichnung des Osiris | II 91 |
| bʒj | [bittere Frucht] | I 417 | hʒj | Gegner angreifen | ʒj | satt sein, machen, werden | IV 14 | ʒnʒj | Witwe | IV 518 |
| bʒj | feucht sein | I 417 | hʒj | = hʒj – Bezeichnung des | ʒj | Sattwerden (von Speisen) | IV 15 | ʒnʒj | [Kuhgöttin] | IV 518 |
| bʒj | [Gerät zum Fußbesprengen] | I 417 | | Seth | ʒj | [Gott] | IV 16 | ʒj | Geheimer (von Göttern) | IV 553 |
| bʒj | Wasserloch | I 417 | hʒj | = hʒj – Jauchzen | ʒj | [Tätigkeit der Müllerin] | IV 16 | ʒj | Verborgenes (Bezeichnung | |
| bʒj | [Beischrift zu Gegenständen | | hʒj | Gatte | ʒj | [offiziell verwendetes | | ʒj | der Unterwelt] | IV 553 |
| | unklarer Form] | I 417 | hʒj | begatten | ʒj | Pflanzenprodukt] | IV 16 | ʒj | Beiname des Sonnengottes | IV 300 |
| ʒj | ein Backwerk | I 417 | hʒj | Aktenstück | ʒj | träge Verdauung | IV 38 | ʒj | [z. Tagesstunde] | IV 300 |
| ʒj | (Substantiv) | I 418 | hʒj | Vorhalle | ʒj | [Öl] | III 400 | ʒj | [Merterinstrument] | V 72 |
| ʒj | Glanz einer Stadt | I 418 | hʒj | Himmel | ʒj | sättigen (trans.) | IV 275 | ʒj | Tragsessel | V 72 |
| mʒj | Gerichtshof der DreiBig | II 46 | hʒj | Bäckerei | ʒj | [Mineral aus Nubien] | IV 545 | ʒj | Mann | V 344 |
| wʒj | Vorhof des Tempels | I 291 | ʒj | hin und herreden | ʒj | beschenkt werden (mit | | ʒj | männlich | V 345 |
| wʒj | Dienerin | I 292 | ʒj | gelangen lassen | ʒj | Land) | IV 405 | ʒj | nehmen | V 346 |
| ʒj | [11. Nachtstunde] | IV 83 | ʒj | verheiratete Frau | ʒj | Schwein | IV 405 | ʒj | Träger | V 348 |
| ʒj | Lehre, Strafe | IV 85 | ʒj | [Arbeiter] | ʒj | Bündel | IV 405 | ʒj | tadeln | V 348 |
| ʒj | abrichten (ein Tier), | | ʒj | fallen lassen | ʒj | = ʒw – wert sein | IV 405 | ʒj | Vorwurf, Tadel | V 349 |
| | bestrafen | IV 86 | ʒj | tanzten | ʒj | Geschick, Bestimmung | IV 406 | ʒj | Behälter für Speisen | V 349 |
| ʒj | [Kleid] | V 560 | ʒj | befindlich um | ʒj | flehen | IV 406 | ʒj | verheiratete Frau | III 77 |
| pʒj | dieser (pron. dem. masc. sg.) | I 493 | ʒj | Schützer | ʒj | Bestimmtes, Geschick | IV 403 | ʒj | Ehebruch treiben | II 345 |
| pʒj | (Verbum) | I 495 | ʒj | kommen | ʒj | Sau | IV 405 | ʒj | Sohn | V 245 |
| pʒj | [prachtvoller Stoff] | I 497 | ʒj | fließen | ʒj | [Titel (Steuerbeamter)] | IV 406 | ʒj | Eber | IV 405 |
| pʒj | begatten | I 497 | ʒj | Überschwemmung | ʒj | Kehle | IV 413 | ʒj | Bezeichnung des Sonnen- | |
| pʒj | Bezeichnung der Vogel | I 494 | ʒj | entblößen | ʒj | Halskette | IV 413 | ʒj | gottes | V 354 |
| pʒj | [Teil des Türverschlusses] | I 497 | ʒj | Nackter | ʒj | [Käfer] | I 181 | ʒj | kreuzen (Fluß) | V 516 |
| pʒj | [offiziell Verwendetes] | I 497 | ʒj | leuchten | ʒj | [Heuschrecke] | I 181 | ʒj | essen, verzehren | V 511 |
| r-pʒj | bis zu diesem Augenblick | I 493 | ʒj | Licht | ʒj | [lederner Streitwagenteil] | II 154 | ʒj | ausstrecken | V 513 |
| ʒj | hochheben | I 572 | ʒj | Bezeichnung des Sonnen- | ʒj | zu jemandem flehen | IV 281 | ʒj | sich feindlich entgegen- | |
| ʒj | wägen | I 573 | ʒj | gottes | ʒj | hoch sein | V 1 | ʒj | stellen | V 514 |
| ʒj | heben | I 572 | ʒj | Klagende (Göttin) | ʒj | [Getränk] | V 6 | ʒj | [Flußschiff] | V 515 |
| ʒj | Träger | I 574 | ʒj | Schlamm | ʒj | = hʒj – Hügel | V 6 | ʒj | (Substantiv) | V 519 |
| ʒj | [etwas aus wđ Hergestelltes] | I 574 | ʒj | Bezeichnung des Himmels | ʒj | = hʒj – Gestalt | V 6 | | | |

| | | | | | |
|-----------|----------------------------------|---------|----------|--|---------|
| đj | (in unklarem Zusammenhang) | V 519 | šj | Wäscher | I 39 |
| đj.t | Unheil | V 518 | šj.t | [offiziell Verwendetes] | I 40 |
| đj.t | Widersacherin | V 518 | šj | [von angsterfüllten Menschen] | I 169 |
| đj.t | (in unklarem Zusammenhang) | V 519 | šj | Kind | I 169 |
| đj.t | [Göttin] | V 519 | wj | allein sein | I 277 |
| đj.t | Binde | V 519 | wj.t | [Truppe] | I 51 |
| pr-đj | [tierischer Körperteil] | I 518 | wj.t | Ansiedlung | I 51 |
| m-đj.t | zu Unrecht | V 518 | bj | Bezeichnung der Überschwemmung | I 446 |
| hk.t-ndđj | [Bier] | II 377 | bj | Palmenrippe | I 446 |
| mđj | Polizist, Jäger | II 186 | pj | Ufer | I 504 |
| mđj | [Opfergabe] | II 186 | p.pj.t | [krankhafte Erscheinung am Hals] | I 504 |
| mđj | [Gefäß für Bier] | II 186 | mj.t | Öse | II 46 |
| mđj | [Gerät] | II 187 | šmj | oberägyptisch | IV 476 |
| ndđj | [Maß für Kuchen und Datteln] | II 377 | šmj | oberägyptische Gerste | IV 476 |
| hdđj | Schmutz | III 214 | šmj.t | Sängerin | IV 479 |
| n-hđj | ohne Unterlaß | III 214 | nj | im Schiff fahren | II 206 |
| đj | (Interjektion der Anrede) | I 36 | nj | Stricke drehen | II 207 |
| đj | (Interjektion) | I 36 | nj | Seiler | II 207 |
| đj | Spruch | I 36 | nj.t | Haus | II 207 |
| đj | zustimmen | I 36 | nj.t | Pflock am Bug zum Festmachen | II 207 |
| đj | (Verbum vom Verletzen des Auges) | I 36 | nj | nachgiebig sein | I 191 |
| đj | kommen | I 37 | pnj | Verkehrtes | I 509 |
| đj | Beiname des Horus | I 38 | pnj.t | Kenterstelle | I 509 |
| đj | [Fisch] | I 38 | pnj.t | Türschloß | I 509 |
| đj.t | Heiligtum in Letopolis | I 38 | mnj | Erzieher | II 78 |
| đj.t | Unheil | I 38 | šn-n-mnj | Milchbruder | II 78 |
| đj.t | [Messer] | I 38 | šn-mnj | Nährvater | II 78 |
| wj | wehe! | I 272 | mr-mnj | [See am Himmel] | II 78 |
| wj | welcher nicht ist | I 45 | šnj | fahrbar machen (Wege) | IV 156 |
| đpđj | [Göttin] | I 68 | rj.t | [Sonnengöttin] | II 402 |
| mjj | ebenso | II 38 | rj.t | = rj.t - Tor des Hauses | II 403 |
| mjj | Gleicher | II 38 | rj.t | Halle (im Palast, Gericht) | I 209 |
| šmjj | mit Kraut bewachsen | IV 120 | hjj | jubeln | III 40 |
| njj | (= nj - Pröp. n adv. gebraucht) | II 201 | hjj | [Sonnengott] | III 41 |
| knjj | niederwerfen | II 201 | hjj.t | = h.t - Palast | III 41 |
| šmnjj | Bäcker | V 33 | hjj | [Teil des Grabes Am. I.] | I 221 |
| hnj.j | Gießkrug (als Waschgerät) | III 163 | hjj | Mittag | I 223 |
| hjj | Beiname des Anubis | II 492 | hjj | [Dienerin] | I 223 |
| hjj | [Pflanze] | III 238 | hjj.t | [8. Tagesstunde] | I 223 |
| hjj | Gelobter | III 156 | hjj.t | [südliche Himmelsstütze] | I 223 |
| p-hjj | Bezeichnung des vornehmen Toten | III 156 | hjj.t | [Teil des Palastes] | I 223 |
| đj | Krokodil | IV 415 | hjj | [offiziell Verwendetes] | I 351 |
| kjj | anderer | V 110 | hjj | preisen | IV 211 |
| kjj | auch | V 111 | hjj | aufgehen | III 239 |
| kjj-kjj | einer und der andere = Leute | V 113 | hjj | gebären (von Nut) | III 241 |
| đj.tj | [Gott im Amduat] | IV 232 | hjj | Bezeichnung des Sonnengottes | III 242 |
| đj | Flasche | IV 333 | hjj | Krone | III 242 |
| šntjj | Kajüte | IV 179 | hjj | [heilige Schlange von Kynopolis] | III 242 |
| šj | jauchzen | I 168 | hjj.t | Bezeichnung der Hathor | III 242 |
| šj | Kraft | I 2 | hjj.t | tägliche Einnahme | III 242 |
| šj | ithyphallisch | I 167 | hjj.t | Haus | III 242 |
| hjj | Aufruhr | III 30 | hjj | erscheinen lassen | IV 236 |
| hjj.t | Aufruhr | III 30 | šj | zittern | IV 43 |
| wđj-hjj.t | Aufruhr anzetteln | III 30 | šj | Sand | IV 419 |
| šj | waschen | I 39 | šj | körnig sein | IV 420 |
| | | | šj.t | [Krankheitserscheinung = š.w.t - Kuchen] | IV 420 |

| | | | | | |
|-----------|--|---------|-----------|--------------------------------|---------|
| šj.t | [Speicher] | IV 420 | wj.t | Böses | I 48 |
| šj.t | [Getränk] | IV 421 | wj.t | Haus | I 49 |
| nb-šj.t | Beiname des Onuris | IV 420 | đj.wj | willkommen! | I 38 |
| šš-n-šj.t | demotische Schrift | IV 418 | njj.wj | Speer | II 202 |
| -wj | (Admirativpartikel) | I 270 | njj.wj | [Berufsbezeichnung] | II 203 |
| wj | ich (abh. pron. 1. sg.) | I 270 | njj.wj | zum Stehen kommen (Fiut) | II 203 |
| wj | Mumienhülle | I 271 | njj.wj | = njj - Gewässer | II 203 |
| šwj | lang sein | I 3 | mnjj.wj | Beiname des Anubis | II 75 |
| šwj | ausstrecken | I 5 | kjj.wj | Menge, Leute | V 116 |
| šwj | alt werden | I 28 | gb.tjj.wj | Beiname des Min | V 163 |
| šwj | Alter | I 28 | šwj | [Teil des Netzes] | I 156 |
| ph-šwj | alt werden | I 534 | šwj.t | (Substantiv) | I 172 |
| wjšwj.t | Altersschwäche | I 272 | rj-šwj | Arme (Körperteil) | II 395 |
| đj.wj | Kampfplatz der Stiere | I 415 | rj-šwj | Tat | II 396 |
| bj.wj | Opferständer | I 418 | hmj-šwj | Schützer | III 80 |
| bj.wj | Notabeln | I 418 | hnw-šwj | [Getränk] | III 372 |
| đj.wj | beide Seelen | I 412 | hnw-šwj | Umarmung | III 372 |
| bj.wj | [Dekan] | I 413 | šwn-šwj | [Schutzgott des Osiris] | V 432 |
| mšwj | sich erneuern | II 25 | šr.t-šwj | Armband | I 104 |
| mšwj | erleuchten | II 28 | pr.t-šwj | Tüchtigkeit | I 527 |
| mšwj | [Westwindgott] | II 28 | nhj-šwj | [Myrrhan] | II 291 |
| mšmj.wj | erneuern | II 29 | mšj.wj | Holme der Leiter | II 46 |
| šmj.wj | Finsternis | III 452 | wšwj.t | [Wurm] | I 279 |
| šmj.wj | erneuern | IV 126 | šwj | [Getränk] | III 247 |
| šh.wj | die 2 Kämpfer = Horus und Seth | I 216 | šwj | beide Uferberge verabscheuen | V 544 |
| hšwj | Abend | III 225 | šwj | [Seil am Schiff] | I 61 |
| hšwj | Abendwanderer | III 226 | šwj | Schlüsselbeine | I 455 |
| hšwj | [Getränk] | III 226 | šwj.t | [heiliger Widder] | I 455 |
| hšwj | (in unklarem Zusammenhang) | III 226 | ššbw.wj | kühler Raum für Speisen | IV 305 |
| tr-n-hšwj | abends | III 226 | nb.wj | Bezeichnung für Horus und Seth | II 231 |
| nhšwj.t | [Göttin] | II 306 | šj-nb.wj | Bezeichnung des Thot | II 231 |
| šwj | = šwt - gehören (3. masc. sg.) | IV 13 | šnb.wj | [doppelter Schiffsteil] | IV 161 |
| šwj | verlängern | IV 17 | šb.wj | Sohlen | V 118 |
| šwj | jemanden erfreuen | IV 17 | šb.wj | Sandalen | V 361 |
| šwj | aufpassen auf etwas | IV 17 | šj-šb.wj | eilen | V 406 |
| šj.wj | Zweidrittelgold | IV 13 | šwj | jener (pron. dem. masc. sg.) | I 506 |
| ššj.wj | [doppelter Teil der Barke] | II 324 | šwj | = pj - begatten | I 506 |
| šj.wj.t | [offiziell verwendete Pflanze] | IV 401 | šwj | Beiname des Min | I 69 |
| gšwj | [Pferde] | V 154 | šwj | [heiliger Widder] | I 180 |
| šj.wj | von Ländern | V 217 | šwj | Blumen im Sumpf | III 260 |
| kfj-šj.wj | [Salbe] | V 120 | šwj | [Körner seiner Myrrhenart] | III 260 |
| šmj-šj.wj | [Zeremonie bei Regierungsantritt] | III 449 | šwj | Beiname des Horus | II 432 |
| šmj-šj.wj | erstes Regierungsjahr | III 449 | šwj | [Fest] | II 432 |
| nhj-šj.wj | [Memphis] | II 180 | šwj | wie zufrieden ist . . . | III 192 |
| šj-šj.wj | [Titel der Stadt Rom] | I 150 | šwj | Dienerin | I 388 |
| šmj-šj.wj | Beiname des Thot | I 184 | šwj | Harn | II 53 |
| šn-šj.wj | [Titel des Hohenpriesters von Memphis] | IV 154 | šwj | Same (Sperma) | II 53 |
| šh-šj.wj | [Pflanze] | I 203 | šwj | feucht sein | II 53 |
| šj.wj | Bezeichnung des Horus | V 341 | šwj | (in Wortspiel mit Wasser) | II 53 |
| šj.wj | junges Krokodil | V 341 | šwj.t | Feuchtigkeit | II 53 |
| đj-šj.wj | Harfenspieler | V 533 | šwj.t | Abgrund | III 205 |
| šwj | schifflos | I 47 | šwj.t | [Krankheit] | III 205 |
| šwj | bewässern | I 49 | šwj.t | Harnentleerung | III 435 |
| šwj | Weihrauch | I 49 | šwj.t | Harnverhaltung | V 399 |
| šwj | [Strauch] | I 49 | šwj | hervorquellen | II 59 |
| šwj | handhaben (ein Gerät im Schiff) | I 49 | šwj | [Priester] | IV 121 |
| | | | šwj | ich (pron. abs. 1. sg.) | II 210 |
| | | | šwj | sorgen für | II 220 |
| | | | šwj.t | Wasser | II 221 |
| | | | šwj.t | (Substantiv) | II 220 |
| | | | šwj.t | Wasser | II 221 |

| | | | | | |
|------------|-------------------------------------|---------|---------------|----------------------------------|---------|
| itr-nwj | Strom | II 221 | mr-kbh.wj | [Titel] | V 27 |
| wnwj | Kalb (als Bezeichnung des Osiris) | I 315 | phwj | Ende von etwas | I 535 |
| iwuwj | Heliopolitaner | I 54 | phwj | [offizinell Verwendetes] | I 537 |
| iwuwj | Beiname des Atum | I 54 | phwj.t | hinten befindlich | I 537 |
| hbwwj | Beiname des Horus | III 63 | m-phwj | hinter | I 536 |
| sfwwj | Milder (Götterbeiwort) | III 443 | km-phwj | Ende bilden | V 129 |
| mnwj | denkmälerreich | II 71 | m-h3.t-r-phwj | von vorn bis hinten | III 20 |
| nnwj | [zwei Schlangen, die sich umwinden] | I 192 | r-h3.t-r-phwj | vollständig | III 20 |
| rnwj | [Gott (Bruder des Apis)] | II 429 | hr-phwj | hinter | I 536 |
| hnwj.t | [Teil der gr.t — Frucht] | II 494 | mhwj | unterägyptisch | II 124 |
| hnwj | Stechen (einer Krankheit) | III 110 | nh.wj | erwünscht | II 289 |
| hnwj.t | Kornwucher | III 104 | mnhwj | Schlächter | II 84 |
| nhn.wj | Bezeichnung für Widersacher | II 312 | rh.wj | verbrennen, verbrannt werden | II 442 |
| sn.wj | beide Parteien Streitender | IV 148 | | die 2 Genossen (Horus und Seth) | II 441 |
| sn.wj | Zwillingskälber | IV 148 | hh.wj | Ohren | III 152 |
| sn.wj | zwei Füße | IV 148 | rh.wj | die 2 Genossen (Horus und Seth) | II 442 |
| sn.wj | Sonne und Mond | IV 148 | | sammeln | IV 211 |
| sn.wj | [etwas Böses der Feinde] | IV 155 | shwj | Gesamtheit von, Zusammenfassung | IV 212 |
| snwj | Baumgarten | IV 499 | shwj | insgesamt | IV 212 |
| rwj | fortgehen | II 406 | m-shwj | [offizinell Verwendetes] | V 480 |
| rwj | (Substantiv) | II 407 | ahwj | schützen | III 244 |
| rwj | Flamme | II 408 | hwj | [Göttin von Athribis] | III 246 |
| rwj | = r3.wj — beide Türflügel | II 390 | hwj.t | [Wedel] | III 246 |
| rwj.t | [Tanz] | II 407 | shwj | [Dekane] | I 16 |
| rwj.t | [Spiel] | II 407 | shwj | Klage | II 305 |
| rwj.t | [Bauteil aus Stein in Grab] | II 407 | shwj | wie beklagenswert ist . . . | II 305 |
| rwj.t | (Substantiv) | II 407 | shwj | Ohren | I 204 |
| rwj.t | Behörde o. ä. | II 407 | shwj | gescheit | I 205 |
| rwj.t | [Amtsgebäude] | II 407 | shwj | Gehör schenken | I 205 |
| rwj.t | Stroh | II 408 | shwj | [Zeugstreifen (paarweise)] | I 324 |
| h3rwj | Syrer | III 232 | shwj | trinken | III 428 |
| ir.wj | Augen | I 108 | shwj | Böse | I 129 |
| mr.wj | zweispältig (2 Parteien) | II 98 | shwj | Bezeichnung für Krokodil | IV 65 |
| mrwj.t.t | Beiname der Sachmet | II 104 | shwj | Kügelchen (Form für Medikamente) | IV 65 |
| hrwj.t | Tagebuch | II 500 | shwj | Ptolemais in Oberägypten | IV 65 |
| hrwj | Lärmmacher | III 325 | shwj | Hoden | I 131 |
| hrwj.t | Feindseligkeit | III 326 | shwj | Hoden | II 205 |
| thm-hrwj | Feindseligkeit erregen | V 321 | shwj | als König herrschen | II 334 |
| shrwj | Verbannter | IV 261 | shwj | Königin | II 332 |
| hrwj | Hoden | III 393 | shwj | Königsherrschaft | II 332 |
| srwj | entfernen | IV 193 | shwj | König sein | II 333 |
| tr.wj | Tag und Nacht | V 316 | shwj | jemandes Nachbarschaft | V 193 |
| r-tr.wj | täglich | V 316 | shwj | halbieren | V 197 |
| grwj | Farbe | V 601 | shwj | neben | V 194 |
| wh3-m-grwj | mit Farben verschönern | I 349 | shwj | neben | V 194 |
| drgrwj | [Körperteil des Menschen] | V 605 | shwj | sich erheben | IV 431 |
| hwj | [Tier (böse Art)] | II 484 | shwj | [Berufsbezeichnung] | IV 434 |
| mhwj | Flüssiges | II 114 | shwj | Bezeichnung des Krokodils | IV 434 |
| hwj | ach! | III 45 | shwj | Mangel | IV 428 |
| hwj | [Teil des Obelisken] | III 45 | shwj | trockene Stelle | IV 430 |
| hwj | schlagen | III 46 | shwj | [Getränk] | IV 433 |
| hwj | fließen | III 48 | shwj | wohl dem . . . | II 454 |
| hwj | regnen | III 48 | shwj | jemandem emporheben | IV 281 |
| hwj | Flut | III 48 | shwj | trocknen | IV 281 |
| hwj | frohes Lied | III 49 | shwj | leer machen | IV 282 |
| hwj | (Verbum) | III 50 | shwj | Menge | V 116 |
| hwj.t | Schlag | III 49 | shwj | Steinmetztruppe | I 139 |
| hwj.t | [etwas vom Mühlstein] | III 49 | shwj | | |
| hwj.t | Klagen | III 49 | shwj | | |
| hwj.t | Klagende | III 49 | shwj | | |

| | | | | | |
|------------|-----------------------------------|---------|------------|--|---------|
| m33-kkwj | blind werden | II 9 | nwj | Bierkrug | II 243 |
| twj | Sandalen | V 247 | nwj | brennen | II 244 |
| hntwj | Kommandant | III 122 | nwj | Flamme | II 244 |
| twj.t | Krone | V 359 | nwj | (Bedeutung unklar) | II 244 |
| hmj-rd.wj | [Sandfliege] | III 281 | nwj | speien | II 244 |
| irj-rd.wj | Begleiter | I 104 | nwj | Speichel | II 244 |
| tp-rd.wj | Vorfahren | V 290 | nwj.t | [offizinell Verwendetes] | II 243 |
| ir.t-rd.wj | Fußband | I 164 | nwj.t | Rohr (Pflanze) | II 243 |
| mh-rd.wj | sich beeilen | II 461 | nwj.t | Flamme | II 244 |
| sdwj | [innerer tierischer Körperteil] | IV 568 | nwj.t | [Stadt] | II 244 |
| gd.wj | [Gott] | V 630 | nb.t-nwj | Bezeichnung der roten Krone | II 244 |
| dwj | (trans. Verbum) | V 550 | inwj | [Teile des Schiffes] | I 95 |
| dwj | rufen | II 550 | hbj | treten | II 486 |
| dwj.t | [Vogel] | V 551 | hbj | Ibis | II 487 |
| w3d.wj | wie erfreulich | I 266 | hbj.t | [etwas, vor dem man sich hüten muß] | II 486 |
| pdwj | Seitenwände | I 569 | shbj | entehren (Jungfrau) | IV 207 |
| ndwj.t | Verleumdung | II 377 | hbj | festlich sein | III 60 |
| hdwj | [Stoff] | III 213 | hbj.t | Festhalle im Tempel | III 60 |
| hdwj.t | Lampe | III 213 | hbj.t | Behütet el Hagar | III 60 |
| pd.wj | doppeltes Rückenstück | I 556 | hbj.t | Opfer | III 61 |
| hd.wj | Licht | III 215 | hbj.t | Festhof im Tempel | III 60 |
| hd.wj | leuchten | III 215 | sh.t-hbj.t | tanzen | III 250 |
| bj | Graupen | I 432 | hbj | vermindern | III 251 |
| bj | nein | I 432 | hbj | = hbj — zerhacken | III 252 |
| bj | Steinmetze | I 433 | hbj | Gaben einsammeln | III 252 |
| bj.t | [Gebäck] | I 433 | hbj | Tänzerinnen | III 250 |
| bj.t | Alabaster | I 433 | hbj.t | Gemetzel | III 252 |
| bj.t | [Beischrift zu silbernen Gefäßen] | I 433 | nb.t-hbj | Beiname der Hathor | III 250 |
| bj.t | = bj.t — Erstaunen | I 433 | nbj | [Titel des Hohenpriesters [von Heliopolis] | II 308 |
| bj.t | = bw — Stelle | I 433 | nhbj | [Gott] | II 308 |
| bj.t | Biene | I 434 | nhbj | Stock zum Schlagen | III 365 |
| bj.t | Honig | I 434 | sbj | gehen | III 429 |
| bj.t | [rote Krone] | I 435 | sbj | Bezeichnung für Feind des Toten | III 432 |
| fj-n-bj.t | Honigbiene | I 182 | sbj | lachen | III 434 |
| nsw.t-bj.t | König von Ober- und Unterägypten | II 330 | sbj.t | [Fisch] | III 432 |
| mn-bj.t | Thron | II 63 | sbj.t | Uräusschlange | III 433 |
| mn-bj.t | [Priestertitel] | II 63 | sbj | senden | IV 273 |
| zh-bj.t | Chemmis, [Gewässer] | I 13 | sbj | beschneiden | IV 81 |
| zh-bj.t.t | [Himmelskuh] | I 13 | sbj | sich auflehnen gegen | IV 87 |
| zbj | wünschen | I 6 | sbj | Frevler | IV 87 |
| zbj | Panther | I 7 | sbj | = sbj — lachen | IV 89 |
| zbj | links | I 30 | sbj.t | Rebellen | IV 88 |
| zbj | [Tier im Jenseits] | I 419 | sbj.t | Empörung | IV 88 |
| ebj | [Gewässer im Jenseits] | III 420 | sbj.t | Gegenwind | IV 89 |
| k3bj | [Schlange] | V 9 | sbj.t | [Göttin] | IV 89 |
| bj | dürsten | I 61 | sbj.t | Bezeichnung der Uräusschlange | IV 89 |
| ib3bj | Jauchzen | I 442 | sbj.t | [Tor im Totenreich] | II 334 |
| bjbj | [krankhafter Zustand in Gliedern] | I 443 | nbj.t | [5. Tagesstunde] | II 334 |
| bjbj | [Insekt] | I 442 | nbj.t | mischen | IV 436 |
| nbjbj | (Verbum von der Haut) | II 245 | sbj | Antwort | I 372 |
| t3-twbj | [Sonnenschiff] | V 227 | w3bj.t | kleine Perlen | I 373 |
| bbj.t | Schlüsselbeinregion | I 455 | kbj | Krug | V 25 |
| abbj.t | [Kleid] | IV 89 | rbj-kbj | Ozean | II 460 |
| mbj | [Laut eines Neugeborenen] | II 55 | mnkbj.t | [Halsschmuck] | II 91 |
| nbj | Feuer anfachen | II 236 | skrbj | [unter Früchten aus Nubien] | IV 550 |
| nbj | schwimmen | II 236 | ikbj | Klagender (Bezeichnung von Göttern) | I 34 |
| nbj | Goldschmied | II 241 | | | |
| nbj | vergolden | II 241 | | | |
| nbj | Bildner, Schöpfer | II 242 | | | |

| | | |
|-------------|--------------------------------|---------|
| ikbj | [Teil der Unterwelt] | I 34 |
| ikbj.t | Klageweib | I 34 |
| gbj | schwach sein | V 161 |
| gbj | Schaden | V 162 |
| ntj-gbj | Schwacher | V 161 |
| igbj | Flut | I 22 |
| tbj | bezahlen | V 261 |
| tbj | [Möbel] | V 261 |
| ir.t-tbj | Bezeichnung der Sonne | V 261 |
| dbj | Nilferdepeitsche | V 434 |
| dbj.t | Untersatz | V 434 |
| dbj.t | [Stoff] | V 434 |
| dbj.t | [Getränk] | V 435 |
| dbj.t | [offiziell verwendete Pflanze] | V 435 |
| nabj.t | [Teil des Segels] | II 368 |
| hdbj.t | Haufen geschlagener Feinde | III 205 |
| hdbj | Viehhalter | III 403 |
| qdbj | [Schlange im Jenseits] | V 633 |
| gbj | Heer | V 562 |
| pi | dieser (pron. dem. masc. sg.) | I 501 |
| pi | Floh | I 502 |
| pi | sich begeben nach | I 502 |
| pi | = pi-j — begatten | I 502 |
| pi.t | rauh (in Diagnosen) | I 502 |
| s-pi | [Stoff] | IV 399 |
| ipj | fliegen | I 69 |
| ppj.t | Kielbalken | I 502 |
| sjpi | Bauwerk errichten | IV 36 |
| sjpi | genau | IV 37 |
| sjpi | niedermetzeln | IV 37 |
| sjpi.t | Zuweisung (Opfergaben) | IV 36 |
| pi | durchschreiten | I 179 |
| pi | fliegen | I 179 |
| pi | Sonne als geflügelter Käfer | I 179 |
| pi | [feindliches Wesen] | I 180 |
| pi.t | [Schlangengöttin] | I 180 |
| h*pi | Nil | III 42 |
| mds.t-h*pi | Bezeichnung des Nilfestes | III 43 |
| inn.t-h*pi | Ertrag des Nils | I 91 |
| wpi | trennen | I 298 |
| sppj | Rest | III 442 |
| npj | [Kern einer Frucht] | II 248 |
| npj | Bezeichnung des Sonnen-gottes | II 248 |
| npj | Locke | II 248 |
| npj | = npr — Getreide | II 249 |
| npj | [Korn Gott] | II 249 |
| npj.t | [Korngöttin] | II 248 |
| rnpi | jung sein, werden | II 432 |
| hnpi | [Pflanze] | III 291 |
| hnpi.t | [Schlange] | III 291 |
| rpj.t | Bezeichnung für Göttin | II 415 |
| ts-rpj.t | [Göttin] | II 415 |
| bs.tj-rpj.t | Beiname des Osiris | I 417 |
| pr-rpj.t | [Dendera] | II 415 |
| irpi | Bezeichnung eines Gottes | I 115 |
| irpi | [Erzeugnis des Gottes-landes] | I 115 |
| hpi | affenköpfiger Horussohn | III 70 |
| hpi | gehen | III 258 |
| hpi | sterben | III 258 |

| | | |
|------------|--|---------|
| hpi | [Sonnengott] | III 259 |
| hpi | = hpi — Sonne mit Uräen | III 259 |
| hpi.t | (Substantiv) | III 259 |
| hpi.t | (Substantiv) | III 259 |
| hpi | Sonne mit Uräen | III 366 |
| spj | übrig bleiben (lassen) | III 439 |
| spj | [bei Osirismysterien als Zuhörer] | III 441 |
| spj.t | Rest | III 440 |
| spj.t | = spj.t — Brocken | III 442 |
| rdj-spj | am Leben lassen | III 439 |
| spj | zusammenbinden (Schiff) | IV 96 |
| spj.t | Brocken | IV 101 |
| spj.t | übriggebliebenes Brot | IV 101 |
| sspi | Bezeichnung des Sonnen-gottes | IV 284 |
| tpj | befindlich auf | V 276 |
| tpj | erster | V 277 |
| tpj | bester | V 279 |
| tpj | bester Leinenstoff | V 292 |
| tpj | große Hölzer | V 295 |
| tpj | [Schlange] | V 295 |
| tpj | einatmen | V 296 |
| tpj | [Rind] | V 296 |
| tpj | [Fisch] | V 296 |
| sp-tpj | Urzeit | III 438 |
| mj-sp-tpj | wie zuerst | III 438 |
| hm-ntr-tpj | Hoherpriester | III 89 |
| pr.t-tpj.t | [Fest bei Osirismysterien] | I 525 |
| htpj | Gnädiger (von Gott) | III 194 |
| htpj | [Priester] | III 195 |
| htpj | [Möbel] | III 196 |
| htpj.t | Gnädige (von Uräen) | III 194 |
| sttpj | Räucherpfanne | IV 222 |
| sttpj | [Titel des Osiris] | IV 222 |
| sttpj.t | Scheune | IV 557 |
| dpi | Steuermann | V 447 |
| dpi | Krokodil | V 447 |
| dpi.t | Beiname der unterägyptischen Schlangengöttin | V 443 |
| -fj | er (pron. suff. 3. masc. dual) | I 572 |
| fj | er (abh. pron. 3. masc. sg.) | I 572 |
| fj | [Stoff für Kleider] | I 576 |
| fj | Ertrag vom Fischfang | I 9 |
| fj | [Flamme] | I 167 |
| ksfj | erstaunt sein | V 11 |
| fj | Biene | I 182 |
| fj | gierig | I 182 |
| wfj | [Schlange] | I 306 |
| twfj | Papyruspflanze | V 359 |
| nfi | atmen | II 250 |
| nfi | Finsternis | II 251 |
| mnfi | Armband | II 80 |
| hnfi | Feuer | III 201 |
| tnfi.t | Beutel | V 380 |
| hfbfj | wehen | III 273 |
| sfj | mischen | IV 114 |
| sfj | [Schlange] | IV 114 |
| sfj | Kind | IV 114 |
| sfj | Harz | IV 114 |
| hsfj | stromauf fahren | III 337 |
| sfj | anschwellen | IV 455 |
| sfj.t | Ansehen | IV 457 |

| | | |
|----------|-----------------------------------|--------|
| sfj.t | Wahrheit | IV 459 |
| sfj.t | [weinerzeugende Landschaft] | IV 459 |
| kfi | entblößen | V 119 |
| kfi | klaffen (Wunde) | V 120 |
| tfj | gewaltsam entfernen | V 297 |
| tfj | (Verbum mit refl. Obj.) | V 298 |
| tfj | = tfj — Säge | V 298 |
| tfj.t | (Substantiv) | V 298 |
| dfi | [großes Gefäß] | V 448 |
| sdffj.t | [Göttin] | IV 369 |
| dffj | einsinken | V 569 |
| mj | komm! | II 35 |
| mj.n | laß uns geben! | II 35 |
| mj | nimm! | II 36 |
| mj | Wasser | II 36 |
| mj | Same (Sperma) | II 36 |
| mj | wer da | II 36 |
| mj | wie | II 36 |
| mj | so als ob | II 38 |
| mj | [ermunternder Ruf an Vieh] | II 41 |
| mj | [Schiffsteil] | II 41 |
| mj | Murnienbinde | II 41 |
| mj.t | = muj.t — Harn | II 36 |
| mj.t | Gleiches | II 39 |
| mj.t | [berauschendes Getränk] | II 41 |
| mj.t | [Schiff] | II 41 |
| mj.t | Weg | II 41 |
| mj.t.t | Katze | II 42 |
| mj.t.t | Gleiches | II 40 |
| m-mj.t.t | auch | II 40 |
| ymj | mischen | I 10 |
| ymj | [hölzerner Barkenteil] | I 251 |
| hymj | [Weinsorte] | III 32 |
| shymj.t | Schmutzwasser des Wäschers | IV 411 |
| kmj | Gärtner | V 106 |
| imj | Inneres | I 72 |
| imj | befindlich in | I 72 |
| imj | Inneres einer Frucht | I 75 |
| imj | Junges im Ei | I 75 |
| imj | gehörig zu | I 76 |
| imj | nicht sein | I 76 |
| imj | gib! | I 76 |
| imj | Sonnenauge | I 75 |
| imj.t | = unmj.t — Flamme | I 75 |
| nmj | [Pflanze] | I 203 |
| nmj | [Früchte] | II 58 |
| nmj | [Pflanze] | III 37 |
| nmj | verschmieren (Verschlußstopfen) | I 185 |
| nmj | Kloß (als Medikamentform) | I 185 |
| nmj | [Körperteil] | I 185 |
| nmj | [Früchte] | II 58 |
| nmj | Giraffe | II 58 |
| nmj | [Tier beim Totengericht] | I 186 |
| nmj | [Ackerbezirk im Gau von Hypselis] | II 267 |
| nmj | [zauberkräftiges Wesen] | III 95 |
| nmj | durchfahren | II 265 |
| nmj | brüllen (von Rindern) | II 265 |

| | | |
|------------|--|---------|
| nmj | Zwerg | II 266 |
| nmj | (trans. Verbum (Seth dem Osiris getan)) | II 266 |
| nmj.t | Bahre für Toten | II 266 |
| wnmj | rechts | I 322 |
| wnmj | Bezeichnung der rechten Arbeitsabteilung | I 322 |
| wnmj | rechte Hand | I 322 |
| wnmj.t | Bezeichnung des Feuers | I 321 |
| nmmj | Begatter | II 267 |
| hnmj.t | [Gewässer im Gau von Hierakon] | III 383 |
| hnmj | [Pflanze] | IV 165 |
| tnmj | [Totenrichter] | V 312 |
| tnmj.t | [Göttin] | V 312 |
| rmj | weinen, beweinen | II 416 |
| rmj | [Sonnengott] | II 417 |
| rmj.t | Träne | II 417 |
| rmj.t | Bezeichnung des Klage-weibes | II 417 |
| h-ymj.t | Beiname des Osiris | I 214 |
| hmj | Jubelgeschrei | II 490 |
| hmj | = hmw — Vogelhäuser | II 490 |
| whmj.t | Wiederholung | I 344 |
| hmj | weichen | III 79 |
| hmj | Steuermann | III 81 |
| hmj | [Wesen am Himmel] | III 82 |
| hmj | Gefäße bohren | III 82 |
| hmj.t | Steuerruder | III 81 |
| hmj.t | [Waffe] | III 82 |
| hmj.t | = hmj.t — Salz | III 82 |
| hmj.t | [Göttin] | III 82 |
| hmj.t | [Gerät aus Stein] | III 87 |
| irj-hmj | Steuermann sein | III 81 |
| irj-hmj | Steuermann | III 81 |
| shmj.t | Überschwemmung | IV 216 |
| hmj | nicht kennen | III 278 |
| hmj | [Gott von Letopolis] | III 280 |
| hmj | Häuser umstürzen | III 281 |
| hmj.t | [böses weibliches Wesen] | III 281 |
| hmj.t | [strafende Göttin] | III 281 |
| shymj.t | Sistrumspielerin | IV 252 |
| smj.t | Wüste | III 444 |
| smj | Geschötter | IV 190 |
| smj | heilig | IV 121 |
| smj | Bote | IV 127 |
| smj | berichten | IV 127 |
| smj | Meldung | IV 128 |
| smj | Sahne | IV 190 |
| smj | Peitsche | IV 190 |
| smj | züchtigen | IV 190 |
| smj.t | Kräuter | IV 120 |
| irj-smj | anzeigen | IV 128 |
| h3b-smj | brieflich antworten | IV 129 |
| h3f-smj | Meldung erstatten | III 336 |
| n-smj | Bericht erstatten | I 189 |
| dd-smj | berichten | IV 129 |
| nn-smj.t.f | unangemeldet eintreten | IV 128 |
| zw-n-smj | Peitschenbehälter | IV 190 |
| smj | [Krankheit] | IV 276 |
| smj | [kostbarer Stoff] | IV 276 |
| smj | Scheune | IV 472 |
| smj.(t) | = sm — heiß | IV 472 |

| | | |
|--------------|---|---------|
| šmj.t | Pfahl | IV 467 |
| šmj.t | Hitze | IV 469 |
| šmj.t | Gang im Tempel | IV 472 |
| ššmj | [Schlange] | IV 292 |
| ššmj.t | [2. Tagesstunde] | IV 292 |
| ššmj.t | [Krankheit der weiblichen Geschlechtsorgane] | V 39 |
| kmj | Harz | V 39 |
| kmj | = kmj — schaffen | V 38 |
| kmj | Salböl | V 40 |
| mww-nw-kmj.t | Gummiwasser | II 51 |
| b3k-n-kmj.t | [Salböl] | V 39 |
| kmj | Bezeichnung des Osiris und des Min | V 130 |
| kmj.(t) | Speisen | V 130 |
| kmj.t | [Göttin] | V 130 |
| kmj.t | [Weisheitsbuch] | V 130 |
| gmj | finden | V 166 |
| gmj | (in einer Rechnung) | V 170 |
| gmj | [Gemüsepflanze] | V 170 |
| gmj | [Pflanze bei Kyphibereitung] | V 170 |
| tmj | [kostbares Material] | V 306 |
| tmj.t | [Krankheit] | V 306 |
| htmj.t | [Göttin mit Messern] | III 198 |
| htmj.t | Richtstätte | III 198 |
| htmj | Siegler | III 352 |
| htmj.t | Verschluß | III 352 |
| dmj | berühren | V 453 |
| dmj | Ortschaft | V 455 |
| dmj | = idmj — roter Leinenstoff | II 456 |
| dmj | [Behälter für Früchte] | V 456 |
| dmj | [Gefaß für Bier] | V 456 |
| dmj.t | Haufen | V 456 |
| idmj | roter Leinenstoff | I 153 |
| idmj.t | roter Leinenstoff | I 153 |
| šdmj | anfügen | IV 370 |
| šdmj | Gehorsamer | IV 390 |
| šdmj.t | Gerede | IV 389 |
| nj | zugehörig zu | II 200 |
| -nj | wir beide (pron. suff. 1. dual) | II 200 |
| nj | abweisen | II 201 |
| nj | Laut eines Neugeborenen | II 201 |
| nj.t | Böses | II 201 |
| nj.t | Klageweib | II 201 |
| hw-nj | schlagen | III 49 |
| k3nj | Gärtner | V 107 |
| mš3nj | [Flüssigkeit] | II 151 |
| inj | bringen | I 90 |
| inj | Name der roten Krone | I 92 |
| inj | Schnur | I 93 |
| inj.t | Refrain | I 92 |
| inj.t | [Gewässer] | I 93 |
| inj.t | [Krankheitsdämon] | I 93 |
| inj.t | [Frucht] | I 94 |
| inj.t | [Teil einer Pflanze] | I 94 |
| inj.t | [Pflanze als Brennmaterial] | I 94 |
| itj.inj | unregelmäßig sein | I 149 |
| ht.t-n.t-inj | [etwas am Schiffsholz in offizineller Verwendung] | I 93 |

| | | |
|--------|--|--------|
| njnj | (Verbum vom Zustand der Füße) | II 203 |
| njnj | Begrüßung | II 203 |
| hnjnj | jubeln | II 493 |
| hnjnj | Jubel | II 493 |
| cnj | [Körperteil des Rindes] | I 188 |
| cnj | [Gewässer] | I 189 |
| icnj | Pavian | I 41 |
| icnj | Zelt | I 170 |
| icnj | (Verbum) | I 170 |
| wnj | eilen | I 313 |
| wnj | Licht | I 315 |
| wnj.t | Kahlheit der Augenbrauen | I 314 |
| m-wnj | cilends, eilig | I 313 |
| icnj | [Gewässer] | I 53 |
| icnj | Beiname des Amun | I 53 |
| icnj | Bezeichnung des als Statue Dargestellten | I 54 |
| icnj | Hermionthis | I 54 |
| icnj.t | Säulensaal | I 54 |
| icnj.t | [Göttin von Dendera] | I 54 |
| icnj.t | Letopolis | I 54 |
| icnj.t | [Göttin von Hermonthis] | I 54 |
| icnj.t | [Teil des Himmels] | I 318 |
| icnj.t | Laubdach | I 318 |
| icnj.t | Kuh, die noch nicht gekalbt hat | II 409 |
| icnj | Pelusium | IV 69 |
| icnj | Leiden | IV 68 |
| icnj | Leuchtender (Bezeichnung des Sonnengottes) | I 294 |
| icnj | Ebenholz | II 487 |
| icnj | Sonne und Mond | V 437 |
| icnj | Bezeichnung des Osiris | V 437 |
| icnj | (Verbum von gefallenem Feinden) | III 74 |
| icnj.t | Urmutter | V 572 |
| icnj | landen | II 73 |
| icnj | beschenken | II 74 |
| icnj | weiden | II 75 |
| icnj | = munf — Beistand, Helfer | II 76 |
| icnj | [offizinell Verwendetes] | II 76 |
| icnj | (in Bezug auf Ablieferung) | II 76 |
| icnj | Oberschenkel | II 76 |
| icnj | [Arbeiter] | II 77 |
| icnj | Landepflock | II 72 |
| icnj | Bezeichnung der Isis | II 74 |
| icnj | Weideplatz der Gänse | II 75 |
| icnj | Halskette | II 75 |
| icnj | [Hathor] | II 76 |
| icnj | [Sängerin in Dendera] | II 76 |
| icnj | (Substantiv) | II 76 |
| icnj | [Material zu Figuren] | II 76 |
| icnj | Wurzel | II 77 |
| icnj | = mww.t — Taube | II 77 |
| icnj | [eßbarer Körperteil des Rindes] | II 77 |
| icnj | Todestag | II 74 |
| icnj | Landepflock einschlagen | III 47 |
| icnj | Beiname des Horus | II 76 |
| icnj | Beiname der Hathor | II 76 |
| icnj | Beiname der Mut | II 75 |
| icnj | Beiname des Sonnengottes | I 85 |

| | | |
|----------|---|---------|
| imnj.t | Dauerndes (Opfer) | I 83 |
| m-imnj.t | täglich | I 83 |
| rmnj | tragen | II 419 |
| rmnj.t | Beamtenschaft (besonders des Amontempels) | II 420 |
| rmnj.t | Acker (Domäne) | II 421 |
| nmj | müde sein (machen) | II 275 |
| nmj | gehen | II 276 |
| nmj | [Schlange] | II 276 |
| nmj | [Eigenschaft des Holzes] | II 276 |
| nmj | sich beugen vor | II 276 |
| nmj.t | Tote | II 275 |
| nmj.t | Schritt | II 276 |
| wbnnj | Bezeichnung des Sonnengottes | I 295 |
| icnj | [Gott] | II 495 |
| icnj | seelisch leiden | III 461 |
| icnj | Unglück | III 461 |
| icnj | Schoßkind | V 51 |
| icnj | [wuhriechendes Holz] | V 54 |
| icnj | [Öl] | V 54 |
| icnj | Jungtier | II 429 |
| icnj | (Verbum) | II 492 |
| icnj | Name des Osiris | II 492 |
| icnj | Widder des Amon | II 441 |
| icnj | Abfall, Rest | II 441 |
| icnj | Speer | III 110 |
| icnj | Beiname des Sonnengottes in der Nacht | II 129 |
| icnj | Stirnschlange des Königs | II 129 |
| icnj | Beiname des Horus | IV 218 |
| icnj | Beiname des Sonnengottes | V 393 |
| icnj | Last | III 287 |
| icnj | niederschweben | III 287 |
| icnj | tanzen | III 288 |
| icnj | [musizierende Tänzerinnen] | III 288 |
| icnj | Last tragen | III 287 |
| icnj | [Teil der thebanischen Nekropole] | III 370 |
| icnj | Bewohner von Hierakonpolis | II 310 |
| icnj | setzen | IV 253 |
| icnj | verklagt werden | IV 254 |
| icnj | [Gott] | IV 254 |
| icnj | schädigen, verletzen | V 327 |
| icnj | fahren, rudern | III 374 |
| icnj | Rudermannschaft vorbeigehen | III 376 |
| icnj | sie beide (pron. suff. 3. dual) | IV 156 |
| icnj | erlösen (vom Übel) | IV 156 |
| icnj | Kajüte | IV 156 |
| icnj | Begatter | I 359 |
| icnj | [Art der Statuenherstellung] | II 146 |
| icnj | Messer | II 146 |
| icnj | rund sein | IV 489 |
| icnj | streiten | IV 494 |
| icnj | zwingen | IV 494 |
| icnj | leiden | IV 494 |
| icnj | fragen | IV 495 |
| icnj | beschwören, besprechen | IV 496 |
| icnj | Haar | IV 499 |
| icnj | Aufruhr niederschlagen | IV 503 |

| | | |
|-----------|---|---------|
| šnj | Gestank | IV 503 |
| šnj | [Titel] | IV 503 |
| šnj | Tragstange eines Gottes | IV 503 |
| šnj | [Gefaß] | IV 503 |
| šnj.t | Hagelwetter | IV 502 |
| nšj.w-šnj | [Ruder im Totenreich] | IV 501 |
| h.t-šnj.t | Heiligtum der Nut in Heliopolis | IV 503 |
| nšnj | wüten | II 340 |
| nšnj | Wut | II 341 |
| nšnj | Wütender (Seth, Month) | II 342 |
| nšnj | scharf | II 342 |
| ššnj.t | Abbruch (als Baumaterial) | IV 294 |
| icnj | stark, stark sein | V 41 |
| icnj | besiegen | V 44 |
| icnj | umarmen | V 50 |
| icnj | Umarmung, Schoß | V 50 |
| icnj | Schoßkind | V 51 |
| icnj | [Brustlatz als Schmuck] | V 51 |
| icnj | zur Garbe binden (Korn) | V 52 |
| icnj | (vom Verletzen des Hornauges) | V 52 |
| icnj | Leibwache | V 44 |
| icnj | Tragessel | V 52 |
| icnj | [Augenkrankheit] | V 52 |
| icnj | [etwas, was doppelt im Gottesgesicht ist] | V 52 |
| icnj | [Mineral, rot oder gelb] | V 52 |
| icnj | jemandem umarmen | V 51 |
| icnj | Gepäckträger | V 51 |
| icnj | [Werkzeug] | V 56 |
| icnj | fett machen | IV 306 |
| icnj | verdrossen sein | V 131 |
| icnj | rufen | V 132 |
| icnj | Bezeichnung einer Göttin | V 132 |
| icnj | [Göttin im Amduat] | II 347 |
| icnj | alt werden | V 310 |
| icnj | Alter | V 310 |
| icnj | Altersschwäche | V 310 |
| icnj | stark | V 310 |
| icnj | Bezeichnung des Königs im Kampf | V 311 |
| icnj | sich messen mit jemandem | V 311 |
| icnj | [Acker] | V 311 |
| icnj | [Gewässer im XII-XXII. Gau von Oberägypten] | V 311 |
| icnj | alt werden | I 534 |
| icnj | Beiname des Sonnengottes | I 145 |
| icnj | [Messer, Beil] | II 171 |
| icnj | [Flüssigkeit] | III 285 |
| icnj | ihr beide (Pron. suff. 2. dual) | V 372 |
| icnj | [Stadt This (VIII. Gau von Oberägypten)] | V 372 |
| icnj | wo? | V 373 |
| icnj | erheben | V 374 |
| icnj | Ehre | V 380 |
| icnj | [Napf oder Schale] | V 380 |
| icnj | schwach werden | V 380 |
| icnj | (Verbum unklarer Bedeutung) | V 381 |
| icnj | erheben, krönen | IV 358 |

| | | |
|--------------|------------------------------|--------|
| štnj | sich mit jemandem ver- | IV 359 |
| | gleichen können | |
| štnj | (Verbum von einem | IV 359 |
| | Seelenzustand) | |
| dnj | abdämmen | V 464 |
| dnj | zurückhalten | V 464 |
| dnj | Damm (als Feldgrenze) | V 465 |
| dnj | zuteilen | V 466 |
| dnj | Steinblock | V 466 |
| dnj | [Gegenstand aus Holz] | V 467 |
| dnj | der 5. Tag (<i>dju-nj</i>) | V 467 |
| dnj | [Stoff bei Balsamierung] | V 467 |
| dnj.t | [Göttin] | V 463 |
| dnj.t | Familie | V 464 |
| dnj.t | Damm, Deich | V 465 |
| dnj.t | Tag des 1. und 3. Mond- | |
| dnj.t | viertels | V 465 |
| dnj.t | Teil | V 465 |
| dnj.t | Kataster | V 466 |
| dnj.t | Korb | V 467 |
| dnj.t | Napf | V 467 |
| dnj.t | [Gefäß aus Metall] | V 467 |
| dnj.t | Bezeichnung der Schlangen- | |
| dnj.t | göttin | V 472 |
| hđnj | Beiname des Thot | II 506 |
| šđnj | bestrafen | IV 371 |
| đnj | abdämmen | V 575 |
| đnj.t | [großer Krug] | V 575 |
| wdđnj | [Flöte] | I 409 |
| rj.t | Farbe, Tinte | II 399 |
| rj.t | Eiter | II 399 |
| rj.t | Gerichtsraum im Toten- | |
| rj.t | reich | II 400 |
| rj.t | Himmel | II 400 |
| rj.t | Seite | II 400 |
| h'w-nw-rj.t | Eitermasse | III 39 |
| wd'w-nw-rj.t | Eiterabsonderung | I 407 |
| hrj-rj.t | Gerichtsoberster (im Toten- | |
| hrj-rj.t | reich) | II 400 |
| wd'w-rj.t | richten in letzter Instanz | I 406 |
| hrw-rj.t | Gerichtstag | II 400 |
| '3-n-rj.t | Bootsmann einer Seite | II 400 |
| 3rj.t | [Stab] | I 12 |
| š3rj | [offizinell verwendete | |
| | Pflanze] | IV 19 |
| k3rj | Gärtner | V 108 |
| šrj | zugehörig zu | I 103 |
| šrj | Genosse | I 105 |
| šrj | [Salbe] | I 106 |
| šrj | = šjr — Ackerbezeichnung | I 106 |
| šrj | Widder | I 106 |
| šrj | machen, tun | I 108 |
| šrj | Messer | I 114 |
| šrj.t | Genossin | I 105 |
| šrj.t | zu etwas Gehöriges | I 105 |
| šrj.t | Tat | I 113 |
| šrj.t | Milchkuh | I 114 |
| šrj.t | Korn als Abgabe | I 114 |
| m-h3-t-šrj | vorher | III 22 |
| hr-š3-šrj | danach | IV 12 |
| m3.t.t-šrj | desgleichen | I 104 |
| w'-šrj.f | der eine . . . der andere | I 105 |
| h3w-šrj | Einzelanstellung | II 478 |

| | | |
|-------------|----------------------------|---------|
| nm-km-šrj | ohne Ende | V 129 |
| m-n-t-šrj | desgleichen | II 65 |
| m-š-t-šrj | am rechten Ort | IV 6 |
| šhm-šrj.f | Machthaber | IV 250 |
| k3rj | [Tier] | V 116 |
| k3rj | [Arbeiter] | V 116 |
| rj.t | Türbalken | I 209 |
| rj.t | Bezeichnung einer heiligen | |
| | Stätte | I 209 |
| rj.t | Bezeichnung des Himmels | I 209 |
| rj.t | [Gewässer] | I 209 |
| rj.t | [Sternbild] | I 209 |
| rj.t | [Sternbild] | I 209 |
| šb3-n-šrj.t | [Sternbild] | I 209 |
| hr-šrj.t | [Dekangestirn] | I 209 |
| š'šrj.t | Götterwohnung | I 42 |
| š'šrj | Opferständer mit Schale | IV 48 |
| wrj | Portion Fleisch | I 331 |
| wrj.t | Größe, Menge | I 332 |
| wrj.t | heilige Stätte | I 332 |
| wrj.t | Türpfosten | I 332 |
| wrj.t | Tuch zum Durchsehen | I 332 |
| wrj.t | Bäume | I 332 |
| šwrj.t | Behne | I 56 |
| mwrj.t | [Vogel] | II 109 |
| twrj.t | Stab | V 252 |
| brj | [Stock] | I 465 |
| brj.t | Fronarbeiterinnen | I 465 |
| brj.t | Wagenboden | I 465 |
| prj | herauskommen, heraus- | |
| | gehen | I 518 |
| prj | (auffordernd vor Imp.) | I 525 |
| prj | Streitlustiger | I 526 |
| prj | Kampfstier | I 526 |
| prj | (vom Gehilfen des Zimmer- | |
| prj | manns) | I 526 |
| prj | Bohne | I 531 |
| prj | Binde | I 531 |
| prj | Schlachtfeld | I 532 |
| prj | = ptr — sehen | I 532 |
| prj.t | Niederlassung | I 518 |
| prj.t | Bezeichnung des Harems | I 518 |
| hprj | Kinder | III 265 |
| hprj | [Sonnengott als Käfer] | III 267 |
| hprj | [Schlange] | III 267 |
| hprj | [in offizineller Verwen- | |
| hprj | dung] | III 267 |
| msprj.t | [6. Nachtstunde] | II 136 |
| šprj | herauskommen lassen | IV 105 |
| nfrj | Affe | II 261 |
| nfrj.t | Ende | II 262 |
| nfrj.t | Strick am Steuerruder | II 262 |
| nfrj.t | [Göttin] | II 263 |
| mrj | Freund | II 98 |
| mrj | lieben | II 98 |
| mrj | geliebt | II 100 |
| mrj | Kampfstier | II 106 |
| mrj | [Baum] | II 109 |
| mrj | flott machen (Schiff) | II 109 |
| mrj | Pferdeknecht | II 110 |
| mrj.t | Brett | II 109 |
| mrj.t | Damm | II 109 |
| mrj.t | Geliebte | II 104 |
| t3-mrj | Ägypten | V 223 |

| | | |
|----------------|---------------------------|---------|
| hr-mrj.t | Bezeichnung für Krokodile | II 110 |
| mrj.t | Milchkuh (Göttin Anat) | I 187 |
| kmrj | [aus Elfenbein gefertigt] | V 131 |
| nrj | erschrecken | II 277 |
| nrj | wehrhaft sein | II 278 |
| nrj | bewachen | II 278 |
| nrj | bestimmter Zeitpunkt, | |
| | Termin | II 279 |
| nrj | [Baum aus Syrien] | II 279 |
| nrj.t | Heiligtum | II 280 |
| šw.f-m-nrj | Bezeichnung für die Saat | II 279 |
| bnrj.t | Beliebtheit | I 463 |
| hnrj | (Substantiv) | III 298 |
| rrj | (enkl. Partikel) | II 438 |
| rrj | Schwein | II 438 |
| k3k3.w-n-šrj.t | Dienstschiff | V 14 |
| wrrj.t | Wagen | I 334 |
| hmv-wrrj.t | Wagenbauer | I 334 |
| brj | [Brot] | I 466 |
| brj | [Holz] | I 466 |
| mrrj | [Zubehör des Wagens] | II 110 |
| mrrj.t | Klumpen Weihrauch | II 110 |
| trj | Wall | V 388 |
| hrj | melken | II 498 |
| hrj | [Pflanze] | II 498 |
| hrj | Zeremonie vor Totem | II 498 |
| hrj.t | Bezeichnung der Isis und | |
| | Nephthys | II 498 |
| nrj | Bezeichnung für syrische | |
| | Große | II 286 |
| šhrj | zufriedenstellen | IV 207 |
| šhrj.t | [Schiff] | IV 209 |
| hrj | befindlich über | III 133 |
| hrj | Oberster | III 141 |
| hrj | [Teil des Kopfes] | III 142 |
| hrj | Pyramidenplateau von | |
| | Gizeh | III 143 |
| hrj | sich entfernen | III 144 |
| hrj | fliegen zum Himmel | III 146 |
| hrj | jemanden erschrecken | III 147 |
| hrj | [Gewässer] | III 149 |
| hrj.t | Oberste | III 142 |
| hrj.t | Schrecken | III 147 |
| hrj.t | Schmelzofen | III 148 |
| hrj.t | [unter Pflanzen im | |
| | Speicher] | III 148 |
| hrj.t | Planke des Schiffs | III 148 |
| r3-hrj | oberster Verwalter | II 390 |
| pr-hrj | oberes Stockwerk | I 511 |
| gš-hrj | Spitze (Berg, Obelisk) | V 200 |
| m-gš-hrj | oberhalb von etwas | V 200 |
| m-hrj.t | oberhalb von | III 143 |
| šhrj | entfernen | IV 219 |
| hrj | Syrer | III 232 |
| hrj | befindlich bei | III 318 |
| hrj | [Myrrhe] | III 323 |
| hrj | [gute Eigenschaft des | |
| | Beamten] | III 324 |
| hrj.t | Schlachtvieh | III 322 |
| hrj.t | Grab | III 323 |
| nh-m-hrj.t | [Dekanstern] | III 322 |
| hrj-hrj.t | Blutbad anrichten | III 323 |
| k3-n-hrj.t | Opferstier | III 322 |

| | | |
|------------------|---------------------------|---------|
| whrj.t | [Werkzeug des Tischlers] | I 355 |
| šhrj | Kapitän | IV 260 |
| šhrj | Ratgeber | IV 260 |
| šhrj | Bezeichnung des Thot | IV 260 |
| hrj | befindlich unter | III 388 |
| hrj | [Vogel] | III 396 |
| pr-hrj | Erdgeschöß | I 511 |
| phrj.t | Umlaufzeit der Gestirne | I 548 |
| rwš-phrj.t | langlebig (Sonne, Osiris) | I 548 |
| šrj | abtrennen | IV 192 |
| šrj | [offizinell Verwendetes] | IV 192 |
| šrj.t | Name eines Gottes | IV 189 |
| šrj.t | Feldzeichen, Standarte | IV 192 |
| šrj.t | Husten | IV 192 |
| š3j-šrj.t | Standartenträger | IV 192 |
| k3k3.t-n-t-šrj.t | Husten | V 138 |
| ššrj | [Gott mit Pfeilen] | IV 546 |
| ššrj.t | [Göttin mit Pfeilen] | IV 546 |
| ššrj.t | [Tor im Jenseits] | V 617 |
| šrj | klein sein | IV 525 |
| šrj | Kind | IV 526 |
| šrj | [Pflanze] | IV 527 |
| šrj.t | versperren | IV 527 |
| šrj.t | Mädchen | IV 527 |
| šrj.t | = šr.t — Gerstenart | IV 527 |
| šrj.t | [Land des Gaus von | |
| | Herakleopolis] | IV 527 |
| tkkt-šrj | Bezeichnung eines kleinen | |
| | Hundes | V 146 |
| šđš-šrj | Jüngling | I 242 |
| šđš.t-šrj.t | Jungfrau | I 242 |
| krj | [Titel] | V 57 |
| krj | Wolke | V 56 |
| krj | bei jemandem sein | V 59 |
| krj | landfremder Bettler | V 59 |
| hrw-krj | Donner | V 58 |
| mnkrj.t | [Flasche] | II 91 |
| mnkrj.t | [Halsschmuck] | II 91 |
| krj | Kerker | V 135 |
| hkrj.t | weißes Kopttuch | III 402 |
| hkrj.t | Halskette mit Menit | III 402 |
| mnj.t-hkrj.t | Halskette mit Menit | III 402 |
| grj | Geflügel | V 181 |
| trj | [ehrendes Beiwort des | |
| | Königs] | V 317 |
| trj | ehren | V 318 |
| trj | Geachteter | V 318 |
| trj | = trr — jemanden | |
| | abweisen | V 318 |
| trj | Röhricht | V 318 |
| trj | Tür, Tor | V 318 |
| trj.t | Schlechtes, Böses | V 317 |
| wtrj | Farben | I 381 |
| htrj | [Gott] | III 353 |
| štrj.t | (Substantiv) | IV 344 |
| trj | [Gebäck] | V 386 |
| ntrj | göttlich sein | II 363 |
| ntrj | Heiliger | II 364 |
| ntrj | heiliger Palast | II 364 |
| ntrj | Heiligtum | II 365 |
| ntrj | Räucherarm | II 365 |
| ntrj | Herz (von Göttern und | |
| | vom König) | II 365 |

| | | |
|------------|--|--------|
| nrj | Krug für Bier | II 365 |
| nrj | Becken | II 365 |
| nrj | [Gewässer] | II 365 |
| nrj | Mumienbinde | II 365 |
| nrj | Faden zum Zaubern | II 365 |
| nrj | Natron | II 366 |
| nrj | gereinigt sein durch Natron | II 366 |
| nrj.t | [Stab] | II 357 |
| nrj.t | [offiziell Verwendetes] | II 366 |
| nrj.t | [Fest] | II 366 |
| snrj | göttlich machen | IV 180 |
| idrj.t | Strafe | I 155 |
| ndrj | [Gott] | II 368 |
| drj | fest, hart, tüchtig | V 599 |
| drj | (in unklarem Zusammenhang) | V 600 |
| drj | = drwj - Farbe | V 601 |
| drj.t | = dr.t - Falke | V 600 |
| drj.t | Ebenholz | V 600 |
| drj.t | Wohnung | V 600 |
| drj.t | = drw.t - Sarg | V 600 |
| drj.t | [Körperteil des Rindes] | V 600 |
| drj.t | = tsj.t - Webgöttin | V 601 |
| m-drj | bei ... | V 598 |
| rj-n-drj.t | Bezeichnung für Nahrungsmittel | V 600 |
| ndrj | fassen, packen | II 382 |
| sdrrj.t | Niederlage | IV 393 |
| hj | (Interjektion) | II 482 |
| hj | = hjj - Mann | II 482 |
| hj | Jauchzen | II 483 |
| hj | Himmel | II 483 |
| hj | Bezeichnung des Seth (Verbum vom Tau des Schiffes) | II 483 |
| hj.t | = hjw - Unfall? | II 482 |
| hj.t | [Krankheit] | II 483 |
| ihj | Hei! | I 117 |
| ihj | Freude | I 117 |
| ihj | klagen, Klagelaut ausstoßen | I 118 |
| ihj | [Gebäude] | I 118 |
| ihj | [Getreide] | I 118 |
| wjh-ihj | Lager aufschlagen | I 256 |
| wjh | entgleiten | I 339 |
| wjh | Mißerfolg | I 339 |
| wjh | schmähende Bezeichnung des Seth | I 340 |
| wjh | Bezeichnung für Feinde | I 340 |
| wjh | [krankhafte Erscheinung im Kot] | I 340 |
| shwj | rühmen, brüllen | IV 71 |
| shwj | zornigen Löwen besänftigen | IV 72 |
| dbhj | Feinde | V 439 |
| mhj | vergeßlich sein | II 113 |
| mhj | = mhr - Milchkrug | II 113 |
| mhj.t | Milchkuh | II 113 |
| smhj | vergessen machen | IV 139 |
| mhj | etwas | II 280 |
| mhj | entgehen (einem Zeitpunkt) | II 280 |

| | | |
|------------|--|---------|
| nhj | Name eines Buches als Amulett | II 282 |
| n-nhj.n.f | er hat keinen Mangel | II 280 |
| snhj | mustern | IV 167 |
| snhj | Verzeichnis | IV 167 |
| hhj | ungehört (von Worten) | II 502 |
| hhj.t | [Krankheit des Gehörs] | II 502 |
| ihhj | Jauchzen | I 119 |
| ihhj | [Fest] | I 119 |
| thj | übertreten, freveln | V 319 |
| ij-r-thj | sich frevelnd nahen | V 319 |
| sj-r-thj | fehlschießen | V 319 |
| hj | = htj.(t) - Kehle | III 37 |
| hj | = hwj - regnen | III 37 |
| lj | = hwj - Flut | III 37 |
| hj | = hsj - Licht | III 37 |
| hj | Aufsichtsbehörde | III 37 |
| hj.t | [Gott in Besgestalt (Schützer der Neugeborenen)] | III 37 |
| hhj.t | Regen | III 49 |
| hhj.t | Äcker | I 12 |
| wjhj.t | Niederlassung | I 258 |
| wjhj.t | Ertrag der Ernte | I 258 |
| wjhj.t | Opferspende | I 258 |
| bjhj.t | [Schurz (Phallusschurz)] | I 422 |
| hhj.t | (Verbum) | I 13 |
| shhj.t | [Göttin] | IV 22 |
| ihj | sich verdunkeln | I 121 |
| ihj | Ihi, Kind der Hathor | I 121 |
| ihj | Musik machen, Musik | I 122 |
| ihj | [Dekan] | I 122 |
| ihj | [Seth] | I 122 |
| ihj | [Sack] | I 122 |
| ihj | = tjh - Sumpfpflanze | I 122 |
| ihj.t | Musikantin (Priesterintitel) | I 121 |
| h.t-ihj | [Tempel in Dendera] | I 122 |
| hhj | suchen | III 151 |
| b'hj | überfluten | I 448 |
| wjhj.t | Familie | I 346 |
| wjhj.t | Stamm syrischer Beduinen | I 346 |
| ihwj.t | Bezeichnung der Isis als Klagefrau | I 57 |
| hrw-sbhj.t | Rindergebrüll | IV 91 |
| bbhj.t | Libationsgefäß | V 27 |
| mhj | Fürsorger | II 121 |
| mhj | Flachs | II 121 |
| mhj | im Wasser sein | II 121 |
| mhj | Flut | II 122 |
| mhj | Wasser des Nils | II 122 |
| mhj | [Priestertitel in Bz-hnw.t-nfr.t] | II 123 |
| mhj | fliehen | II 126 |
| mhj | [kostbarer Stein aus Gegend von Asswan] | II 127 |
| mhj | Gräbkammer | II 127 |
| mhj | [Thot] | II 127 |
| mhj | [heiliger Stier im Gau von Athribis] | II 127 |
| mhj | [göttliches Wesen in Schlangengestalt] | II 127 |

| | | |
|----------|------------------------------------|---------|
| mhj.t | Flut | II 122 |
| mhj.t | Papyrus | II 124 |
| mhj.t | Nordwind | II 125 |
| mhj.t | [Löwengöttin von This] | II 127 |
| mhj.t | Fische | II 127 |
| khj-mhj | Bezeichnung des Nilpferdes | V 96 |
| hr-mhj.f | jemandem treu sein | II 122 |
| hwj-mhj | ernten (Flachs) | III 47 |
| imhj.t | Beiname der Isis | I 88 |
| nmhj.t | Bürgerin | II 268 |
| smhj | fließen lassen, bewässern | IV 140 |
| smhj | links | IV 140 |
| smhj | linke Hand | IV 140 |
| tmhj | [kostbarer Stein aus Nubien] | V 369 |
| nhj | wünschen | II 288 |
| nhj | Liebling | II 289 |
| nhj | [Sonnengott] | II 290 |
| nhj | [Gott] | II 290 |
| nhj.t | Ewigkeit | II 290 |
| nmhj | (Adjektiv) | II 83 |
| nmhj.t | Bezeichnung der Uräuschlange | II 84 |
| imnhj | Schlächter (als Gottesbezeichnung) | I 87 |
| grhj.t | Nächte | V 185 |
| hhj | suchen | III 151 |
| hhj | gehen | III 152 |
| nhhj | [Göttername] | II 302 |
| shhj | (Verbum) | IV 220 |
| shj | Ratgeber | III 466 |
| shj.t | [Schiff] | III 466 |
| shj.t | [Göttin] | IV 210 |
| khj | Bezeichnung des Mondes | V 67 |
| rkhj | Bezeichnung des Sonnengottes | II 458 |
| rkhj.t | [2. Nachtstunde] | II 459 |
| thj | berühren | V 389 |
| idhj | Deltabewohner | I 155 |
| idhj.t | Bezeichnung einer Priesterin | I 155 |
| hj | = h - Kind | III 237 |
| hj | hoch sein | III 237 |
| hj | Höhe | III 237 |
| hj | hochgelegener Acker | III 238 |
| hj | Flut | III 238 |
| hj | Luft | III 238 |
| hj | oh! | III 238 |
| hj | = hr - wie | III 238 |
| hj | Windschutz | III 237 |
| hj.t | Höhe | III 238 |
| hj.t | Himmel | III 238 |
| hj.t | [Göttin, die den Himmel hochhebt] | III 238 |
| hj.t | so wie ... auch | III 238 |
| hj...hj | zusammenfegen (die Ernte) | I 18 |
| hhj | Pflanzen | I 18 |
| hhj | überschwemmt werden | I 33 |
| ihhj | überschwemmt sein | I 258 |
| wjhj | Säulenhalle | I 259 |
| wjhj | (Verbum) | IV 236 |

| | | |
|-------------|--|---------|
| hhj | zerstören | III 331 |
| hhj | hochheben | I 224 |
| hhj | [Vogel] | I 224 |
| hhj | [Brot] | I 224 |
| hhj | [offiziell Verwendetes] | I 64 |
| sfhj | Wache | IV 117 |
| nhj | Sistrum spielen | II 305 |
| nhj | klagen | II 305 |
| nhj | dauern (vom Namen) | II 306 |
| nhj | [Willkommensgruß] | II 306 |
| nhj | [Schlange] | II 306 |
| nhj.t | Schützerin (Beiname von Göttinnen) | II 305 |
| nhj | Götterbeiname | I 201 |
| wnhj.t | Mumienbinde | I 324 |
| wnnhj | Beiname des Chons | I 323 |
| shhj.t | Alter | IV 166 |
| rhj | Bekannter jemandes | II 446 |
| rhj.t | Betrag | II 447 |
| rhj.t | [Vogel] | II 447 |
| rhj.t | Volk, Menge | II 447 |
| hhj.t-rhj.t | Vornehme | III 20 |
| shhj | Verleumder, Ankläger | IV 199 |
| rhhj | berühmt | II 448 |
| shj | hoch machen | IV 236 |
| shj.t | [Gegenstand aus Holz] | IV 236 |
| thj | zur Genüge trinken | V 323 |
| hrj-dw-sdhj | frevelhaft handeln | IV 371 |
| hhj | fliegen | I 225 |
| shj | taub machen, sein | III 473 |
| shj | Tauber (Gehörlosor) | III 474 |
| sj | = sr - Schaf | III 424 |
| sj | = sbj - gehen | III 424 |
| sj | = sbj - verschwinden | III 424 |
| sj | wer? | III 424 |
| m-sj | womit? | III 425 |
| tsj | gehe! | I 126 |
| tsj | = sj - wer? | I 126 |
| tsj | leicht sein | I 128 |
| tsj | Unwohlsein | I 129 |
| tsj | Schnur | I 129 |
| tsj | leicht machen (Last) | IV 40 |
| hwj | bauen | III 248 |
| bsj | hervorquellen | I 474 |
| bsj | [Sonnengott] | I 475 |
| nhj | wach sein | II 287 |
| hsj | loben | III 154 |
| hsj | [der durch Statuenstiftung Ausgezeichnete] | III 157 |
| hsj | sich begeben nach | III 159 |
| hsj | [Gewässer] | III 160 |
| hsj.t | Gelobte | III 157 |
| m-hsj | entgegen, gegenüber | III 159 |
| hsj | schwach sein | III 398 |
| hsj | Schwacher | III 399 |
| hsj | = hsjw - [Pflanze als Brennmaterial] | III 399 |
| hsj | Beiname des Osiris | III 399 |
| hsj.t | Schwäche | III 399 |
| tsj | [Stelle, wo Toter Wasser trinkt] | V 402 |
| tsj | hochheben | V 405 |
| tsj | tadeln | V 408 |

| | | |
|-----------|---------------------------------------|---------|
| šj | sie (abh. pron. 3. fem. sg.) | IV 28 |
| šj | sie beide (pron. suff. 3. fem. dual.) | IV 28 |
| šj | = s — Mann | IV 29 |
| šj | unsicher gehen | IV 29 |
| šj.t | = šwr.t — Perle | IV 29 |
| wššj | verfallen sein (Gebäude) | I 260 |
| dr-r-šj | völlig | V 593 |
| hššj.t | [Pflanze] | III 234 |
| šj | eilen | IV 40 |
| wšj | sägen | I 358 |
| wšj | Fenster | I 359 |
| wšj | sehr | I 359 |
| wšj | [Titel] | I 359 |
| bšj.t | [fouerspeiende Schlange] | I 476 |
| hbšj.t | Ehefrau | III 66 |
| hbšj.t | [Körperteil des Menschen] | III 255 |
| hbšj.t | Hacke | III 256 |
| psj | kochen | I 551 |
| špsj | [Krug] | IV 451 |
| ššpsj | jemanden auszeichnen | IV 285 |
| mšj | gebären | II 137 |
| mšj | [Kleid] | II 143 |
| mšj | Kornart | II 143 |
| mšj.t | Fohlen (n-htr) | II 140 |
| mšj.t | [Fest] | II 143 |
| mšj.t | [Wasservogel] | II 143 |
| ij-mšj | Bezeichnung der Stiefmutter | I 37 |
| hmšj | sitzen | III 96 |
| h-hmšj | Ausdruck für „essen“ | I 219 |
| šmšj | gebären lassen | IV 141 |
| šmšj.t | Entbinderin | IV 142 |
| nšj | [Krankheit] | II 324 |
| nšj.t | [Krankheit] | II 324 |
| inšj | hellroter Leinenstoff | I 100 |
| inšj.t | [Horusaugs] | I 100 |
| nb.t-inšj | Beiname der Hathor, Sachmet-Bastet. | I 100 |
| hnšj.t | [Krankheit im Kopf] | III 300 |
| šnšj | preisen | IV 171 |
| ršj | südlich | II 452 |
| ršj | [etwas in einem Königsgrabe] | II 453 |
| ršj | sehr | II 453 |
| ršj.t | Wächterin (von Göttinnen) | II 451 |
| -ršj | Bezeichnung für Oberägypten | I 157 |
| šršj | aufwecken | IV 200 |
| hšj | singen | III 164 |
| hšj | frieren | III 166 |
| hšj | Frierender | III 166 |
| hšj | Frost | III 166 |
| hnj-n-hšj | Gesang | III 164 |
| nhšj | Neger | II 303 |
| nhšj.t | Negerin | II 303 |
| š-nhšj | Negerland | II 303 |
| šhšj | bezaubern | IV 220 |
| ššj | [böses Wesen] | IV 274 |
| ššj | [feines Kleid] | IV 540 |
| ššj.t | [offiziell Verwendetes] | IV 545 |
| hšj | sich beugen | V 139 |

| | | |
|---------------|-----------------------------------|---------|
| gšj | eilen | V 204 |
| gšj | rebellisch sein | V 206 |
| gšj | [Maß] | V 206 |
| dšj.t | Klagegeschrei | V 609 |
| šj | Bezeichnung für Philae | IV 415 |
| ššj.t | [Krankheit] | I 21 |
| ššj | leuchten (vom Stern) | III 426 |
| bšj | speien | I 477 |
| psj | (Substantiv) | I 560 |
| hpsj | schwerbewaffnet (vom König) | III 270 |
| nšj | [Gerät] | II 338 |
| ršj | Gipfel eines Berges | II 455 |
| wršj | Tagesdiensthabender | I 336 |
| wršj.t | [Ortsbezeichnung] | I 336 |
| ššj | nisten | III 485 |
| ššj.t | Geschriebenes | III 479 |
| ššj.t | Schreiberin (Frauentitel) | III 481 |
| ššj.t | Abend | IV 279 |
| ššj | [Seth] | I 136 |
| ššj | fortgehen | V 328 |
| ššj | [Gestein bei Elephantine] | V 330 |
| wššj | [weißer Stein bei Elephantine] | I 381 |
| ksj | Gestalt | V 15 |
| ksj | (Verbum) | V 17 |
| ksj | Vogel | V 17 |
| mj-kj | (mit pron. suff.) — alle, ganz | V 16 |
| škj.t | Verlust | I 21 |
| škj.t | [Gerät] | I 136 |
| škj | feierlicher Einzug des Königs | I 232 |
| škj | [Priester] | I 232 |
| škj.t | [Dienerin] | I 232 |
| pkj | [bewässertes Gebiet im Delta] | I 561 |
| rškj | [letzter Tag des Monats] | I 212 |
| rškj.t | Entschluß | I 212 |
| nb.t-rškj.t | [Binde beim Balsamieren] | I 212 |
| šrkj | [Sonnengott] | IV 203 |
| kj | aufschreiben | V 109 |
| kj.t | Achtung | V 110 |
| kj.t | Äffin | V 110 |
| mškj | [Mineral] | II 33 |
| kjkj | Affe | V 116 |
| njkjkj | Frau befruchten | II 346 |
| bkj | Terebinthe | I 482 |
| bkj | [größere Frucht] | I 482 |
| mkj | schützen | II 160 |
| hwj-mkj | selbständig machen | II 160 |
| inckj | [Seile am Schiff] | I 101 |
| hnckj.t | Bett | III 119 |
| hnckj.t | Schenkung | III 120 |
| ššn-n-hnckj.t | [Stoffbezeichnung] | III 120 |
| hnckj | [Kleid] | III 385 |
| šnckj | [Sonnengott] | IV 176 |
| šnckj.t | [Gefäß (Biermaß)] | IV 177 |
| hkj | [Schlange] | II 503 |
| hnckj.t | [mit Haarflechte versehenes Frau] | III 116 |
| hckj | Bezeichnung eines Vornehmen | III 164 |

| | | |
|-----------|--|--------|
| škj | [Gott, der Sonnenschiff zieht] | IV 310 |
| škj | Strohwisch | IV 311 |
| škj | untergehen | IV 311 |
| škj | vernichten | IV 312 |
| škj | Zeit verbringen | IV 314 |
| škj | Mehl | IV 314 |
| mškj | Gerücht | II 150 |
| kkj.t | Finsternis | IV 144 |
| gj | [Gebäck] | V 157 |
| gj.t | [offiziell verwendete Pflanze] | V 157 |
| šggj.t | Harz | I 168 |
| bšgj | müde sein | I 431 |
| imjw-bšgj | Bezeichnung der Toten | I 431 |
| šbšgj | müde machen | IV 87 |
| dšgj | Fledermaus | V 419 |
| šggj.t | [Teil einer Pflanze] | I 235 |
| wgj | kauen | I 376 |
| wgj | = wšg — [Fest] | I 376 |
| wgj.t | Unterkiefer | I 376 |
| wgj.t | Gekautes | I 376 |
| ngj | zerbrechen | II 348 |
| pgj | [von offener Wunde] | I 563 |
| wngj.t | [Gottheit] | I 325 |
| rgj | verbinden | II 459 |
| grgj | Lügner | V 190 |
| grgj.t | [Körperteil] | V 190 |
| drgj.t | [offiziell Verwendetes] | V 478 |
| dgj | sich verstecken | V 496 |
| dgj | sehen | V 497 |
| dgj | [Schutzgott des Osiris] | V 499 |
| dgj.t | [Göttin in Esne] | V 499 |
| dgj.t | Regenpfeifer | V 499 |
| tj | [Frucht] | V 237 |
| tj | zerstampfen | V 237 |
| tj | = tw — (pron. dem. fem. sg.) | V 237 |
| tj | als | V 237 |
| tj | = tr — (enkl. Part.) | V 238 |
| tj.t | [Isisblut-Symbol] | V 238 |
| tj.t | ^{1/4} des hkš.t | V 238 |
| tj.t | Bruch | V 238 |
| tj.t | [Maß für Räucherwerk] | V 238 |
| tj.t | [Material des Malers] | V 238 |
| tj.t | Figur, Gestalt | V 239 |
| tj.t | [Gemach im Tempel] | V 240 |
| šj | [Sonnenschiff] | I 22 |
| šj | sorgen für jemanden | I 24 |
| iš.tj | [Milchgott] | I 26 |
| dwš.tj | preisen | V 428 |
| šbš.tj | Zögling | IV 56 |
| šbš.tj | Bezeichnung des Sonnengottes | V 436 |
| šbš.tj | [Titel des Hohenpriesters von Memphis] | V 562 |
| mšj | (in einem Titel) | II 33 |
| mšj | Sonne und Mond als Himmelsaugen | II 11 |
| mšj.t | [Göttin des XII. Gaus von Oberägypten] | II 34 |
| mšj.t | Klagefrau | II 34 |
| hmšj | (von Wegen im Himmel) | III 95 |

| | | |
|-----------------|---|---------|
| hmšj | [Krankhaftes] | III 95 |
| emšj.tj | Hoden des Esels, des Seth | III 451 |
| emšj.tj | = smj.t — [Teil der meinhitischen Nekropole] | III 452 |
| emšj.tj | Ortsbezeichnung im Jenseits | III 452 |
| emšj.tj | Weg, Straße | III 452 |
| kmšj.tj | Götterbild im Tempel | V 38 |
| kmšj.tj | [Kleid] | V 38 |
| kmšj.tj | jemanden beklagen | V 38 |
| kmšj.tj | beide Klagefrauen | V 37 |
| kmšj.tj | Volk in Weihrauchländern | V 38 |
| hšj.tj | Hülle | III 35 |
| hšj.tj | Bewölkung am Himmel | III 35 |
| hšj.tj | [Augenkrankheit] | III 35 |
| hšj.tj | [Teil des inneren Tempels] | III 35 |
| hšj.tj | [über den Kopf des Feindes Geworfenes] | III 35 |
| hšj.tj | [Gott] | III 8 |
| hšj.tj | Herz | III 26 |
| hšj.tj | Schnuckstück in Herzform | III 28 |
| hšj.tj | = hš.t.t — bestes Salböl | III 28 |
| šmj-hšj.tj | Mitleid haben | IV 494 |
| šw.tj-hšj.tj.f | mutlos | III 27 |
| ršj-hšj.tj.f | sich sorgen um | III 27 |
| šrj-n-hšj.tj.f | nach jemandes Wunsch handeln | III 27 |
| rw.t-n-t-hšj.tj | [krankhafter Zustand des Herzens] | II 407 |
| šmn-hšj.tj | ermutigten | IV 132 |
| šrj-šhr-hšj.tj | jemanden betrüben | V 483 |
| wšj.tj | Bezeichnung der Sandalen | I 355 |
| hšj.tj | Unwetter | III 364 |
| hšj.tj | Beiname des Horus | III 361 |
| hšj.tj | Unwetter | III 363 |
| ššj.tj | Kinderpaar (Schu und Tefnut) | III 412 |
| ššj.tj | Beiwort des Königs als Erbe des Geb | III 412 |
| ššj.tj | viel | I 229 |
| nhšj.tj | [Wesen am Himmel] | II 343 |
| bkšj.tj | [Dekan] | I 482 |
| bkšj.tj | Bezeichnung der Hoden | I 482 |
| mkšj.tj | Bezeichnung des Osiris | II 162 |
| mkšj.tj | [Gott] | II 162 |
| ššj.tj | Veziel | V 343 |
| hšj.tj | Bezeichnung zweier Göttinnen in Heliopolis | III 204 |
| hšj.t-wšj.tj | [Dekan] | III 20 |
| šj | König sein | I 143 |
| šj | = šd — Kind | I 143 |
| šj | König | I 143 |
| šj.tj | Königin | I 143 |
| šjšj.tj | Wunderbarer | I 441 |
| šjšj.tj | Beiname des Amon | I 418 |
| šjšj.tj | Bezeichnung der Isis und Nephthys als Klagefrauen | III 7 |
| šjšj.tj | Nackter | III 14 |
| šjšj.tj | Leuchtende (Sonne und Mond) | III 15 |

| | | |
|-------------------------|--|------------------|
| h3j.tj | Bezeichnung der beiden Königsschlangen | III 15 |
| h3j.tj | Bezeichnung des Sonnengottes | III 15 |
| h3j.tj.t sr.w-mš3j.t | Bezeichnung der Hathor zur Huldigung erschienene Fürsten | III 15 II 156 |
| h3w.tj | [Sonnengott] | III 45 |
| šw3j.tj | Kaufmann | IV 434 |
| hrj-šw3j.tj | Handel treiben | IV 434 |
| ktw3j.tj | [Sonnengott] | V 145 |
| b3j.tj | Imker | I 434 |
| b3j.tj | König von Unterägypten | I 435 |
| b3j.tj | König von Unterägypten sein | I 435 I 435 |
| b3j.tj.t | Königin | I 435 |
| šf3j.tj | Angesehener | IV 459 |
| šf3f3j.tj | Angesehener | IV 461 |
| m3j.tj | Gleicher | II 39 |
| m3j.tj | Abschrift | II 39 |
| m3j.tj | Ebenbild | II 39 |
| b3-rm3j.tj | Bezeichnung des Sonnengottes | II 417 |
| šm3j.tj | Leiter | IV 129 |
| šm3j.tj.t | Bezeichnung einer Göttin | IV 129 |
| w3j.tj | Triumphator | I 315 |
| mn3j.tj | [Landmann] | II 77 |
| mrj.tj | Liebling | II 103 |
| drj.tj | Pylon | V 600 |
| h3j.tj | Günstling | III 158 |
| tp-n-šf3j.tj | Probe beim Rechnen | IV 41 |
| t3j.tj | niederschlagen | V 244 |
| h33j.tj | [Gott in Bestgestalt] | III 36 |
| h3šd3j.tj | (von Min) | III 335 |
| r3-š3j.tj | Gelenk | II 396 |
| m3š3j.tj | beide Wahrheiten (Göttinnen) | II 21 |
| m3š3j.tj | wahrhaftig | II 21 |
| m3š3j.tj | [Gewässer] | II 25 |
| w3š3j.tj | einzig, allein | I 278 |
| w3š3j.tj | Ziege | I 279 |
| w3š3j.tj | Bezeichnung des Löwen | I 279 |
| w3j.tj | [böses Wesen] | I 378 |
| w3j.tj | [Teil einer Pflanze, officinell verwendet] | I 380 |
| š3wtj | Bezeichnung des Horus (Harpunier) | I 29 |
| š3wtj | Würdenträger | I 29 |
| w3wtj | Verschwörer | I 245 |
| h3wtj | [Sonnengott] | III 51 |
| p3wtj | urzeitlich | I 496 |
| m3wtj | Arme (als Körperteil) | II 28 |
| m3wtj | Bezeichnung der Hoden | II 28 |
| šm3wtj | Bezeichnung des Amon | I 80 |
| šm3wtj | Bezeichnung des Königs | III 450 |
| h3wtj | Nackter | III 14 |
| h3wtj | Antlitz des Gottes | III 29 |
| h3wtj | erster | III 29 |
| h3wtj | Kämpfer | I 217 |
| h3wtj | männlich (vom Geschlecht) | I 217 |
| h3wtj | zanken | I 218 |
| šrj-š3wtj | Sohn | I 217 |
| hm.t-š3wtj | Ehefrau | I 217 |

| | | |
|----------|--|---------|
| š3wtj | Wächter | III 418 |
| š3wtj | hüten | III 418 |
| š3wtj | Siut (Stadt) | III 420 |
| k3wtj | Arbeiter | V 102 |
| šwtj | der, welcher nicht (neg. rel. masc. sg.) | I 46 |
| šwtj | Bezeichnung des Seth | I 48 |
| šwtj | Besitzloser | I 46 |
| šwtj.n.f | besitzlos | I 46 |
| m3wtj | Katzenköpfiger (Sonnengott) | II 42 |
| šwtj | inmitten von | I 76 |
| šwtj | Schriftstück | I 173 |
| šwtj | [Gott von Buto] | V 567 |
| šwtj | [Gottesbezeichnung] | II 207 |
| šwtj | Bezeichnung des Sonnengottes | II 207 |
| šwtj | Waschnapf | IV 421 |
| šwtj | Bote | III 44 |
| šwtj | Verabscheuter | I 454 |
| šwtj | gehört | I 174 |
| šwtj | Bote | I 304 |
| šwtj | [Beruf] | II 501 |
| šwtj | [Gestell für göttliche Vögel] | II 489 |
| šwtj | Läufer | III 69 |
| šwtj | [Gott] | V 537 |
| šwtj | Handwerker | III 86 |
| šwtj | städtisch | II 212 |
| šwtj | Wohlgeruch | II 217 |
| šwtj | Stadtgott | II 212 |
| šwtj | Stundenbeobachter | I 317 |
| šwtj | Träger (als Gottesbezeichnung) | II 420 |
| šwtj | Bezeichnung eines Falkenpaares | I 346 |
| šwtj | gebunden an Hörnern = wider Willen | II 223 |
| šwtj | [Teil der Körperglieder] | III 373 |
| šwtj | Kabinet (Teil des Palastes) | I 226 |
| šwtj | die zwei Löwen = Schu und Tefnut | II 403 |
| šwtj | Doppeltor am Palast | II 404 |
| šwtj | Fremder | II 405 |
| šwtj | außerhalb von, ohne von draußen kommen | II 404 |
| šwtj | Höhle des Löwen | II 409 |
| šwtj | Liebling | II 103 |
| šwtj | schmähende Bezeichnung des Apophis | III 324 |
| šwtj | [Berufsbezeichnung von Schiffahrt] | II 485 |
| šwtj | [Schlange] | II 482 |
| šwtj | Verwandter | II 114 |
| šwtj | Flachs ausreißer | III 49 |
| šwtj | Feldarbeiter | I 214 |
| šwtj | Sohn (als Erbe) | II 128 |
| šwtj | Thot | V 606 |
| šwtj | [Fest] | V 606 |
| šwtj | Lieblingsharpune | III 158 |
| šwtj | groß sein | IV 77 |
| šwtj | Perle, Kügelchen | IV 77 |

| | | |
|--------|--------------------------------------|---------|
| g3swtj | [Gott am Himmel] | V 156 |
| šwtj | ältester Sohn | I 378 |
| šwtj | [Sonnengott] | II 355 |
| šwtj | Ergebnis | IV 335 |
| šwtj | [Gott] | IV 27 |
| šwtj | Vielredner | II 182 |
| šwtj | Böser (von Seth) | V 549 |
| šwtj | [Sonnengott] | III 208 |
| šwtj | östlich | I 30 |
| šwtj | Ostwind | I 31 |
| šwtj | Osten | V 221 |
| šwtj | südöstlich | II 452 |
| šwtj | Verbrecher (Bezeichnung des Seth) | III 362 |
| šwtj | Wimper | V 154 |
| šwtj | Uschebti, Totenfigur | IV 435 |
| šwtj | [Krug] | IV 436 |
| šwtj | (Wesen im Jenseits) | II 200 |
| šwtj | Bezeichnung für Nechet und Buto | II 233 |
| šwtj | Uräen | II 234 |
| šwtj | Bezeichnung des Seth | II 242 |
| šwtj | Klagefrauen des Osiris | II 242 |
| šwtj | Bierkrug | II 243 |
| šwtj | Falke | IV 514 |
| šwtj | Beiwort des Chnum | V 53 |
| šwtj | Verwaltungsbeamter | V 54 |
| šwtj | Isis und Nephthys | III 61 |
| šwtj | Name eines Gottes | II 294 |
| šwtj | Böse bestrafen | III 257 |
| šwtj | Bezeichnung für Apophis | III 257 |
| šwtj | Mauer | IV 95 |
| šwtj | Totenfigur | I 373 |
| šwtj | Bezeichnung des Seth | III 362 |
| šwtj | revidieren | IV 36 |
| šwtj | Revision | IV 36 |
| šwtj | [vom Herstellen einer Statue] | IV 36 |
| šwtj | Revision abhalten | IV 36 |
| šwtj | [Gott] | II 432 |
| šwtj | Beiwort von Göttern (Nefertem u. a.) | III 69 |
| šwtj | Bezeichnung der Welt | III 69 |
| šwtj | aufgeblasen (von Luft) | IV 454 |
| šwtj | Harnblase | IV 454 |
| šwtj | Erster | V 294 |
| šwtj | [vom Schiffer] | V 295 |
| šwtj | [Gebäck] | V 447 |
| šwtj | jener (pron. dem. masc. sg.) | I 183 |
| šwtj | Brauer | I 183 |
| šwtj | [Schmuckband] | II 80 |
| šwtj | ohne maßig zu sein | IV 197 |
| šwtj | Mutterkorn | V 389 |
| šwtj | Feind | III 276 |
| šwtj | Feindin | III 277 |
| šwtj | feindlich sein gegen | III 277 |
| šwtj | Sünder | I 129 |
| šwtj | Bekrönter (Osiris) | I 23 |
| šwtj | [Urheber der Überschwemmung] | II 93 |
| šwtj | Vorsteher (einer Priesterphyle) | II 168 |
| šwtj | = mtr — richtig | II 169 |

| | | |
|--------------|--|---------|
| mtj | richtiges Quantum | II 169 |
| mtj | Strick | II 169 |
| mtj | Böser (Seth) | II 169 |
| mtj.t | Gradheit des Charakters | II 169 |
| mtj.t | = mtr — Plut | II 169 |
| im.tj | der (Wein) von Buto | I 78 |
| im.tj | Zögling | I 78 |
| nm3j.t | [Stein für Gefäße] | II 272 |
| hnm.tj | Dirnen | III 292 |
| hnm.tj | = hnm.tj — Nasenlöcher | III 293 |
| hnm.tj | Wärter eines Gotteskindes | III 293 |
| hnm.tj | Kind aufziehen | III 294 |
| hnm.tj | Nasenlöcher | III 376 |
| šnm.tj | [Tier] | IV 165 |
| hmhm.tj | Brüller [Bezeichnung des Löwen] | II 491 |
| knm.tj | Bezeichnung für böse Wesen | II 491 |
| knm.tj | [Pavian] | V 133 |
| knm.tj | Bezeichnung des Apophis | V 133 |
| hmtj | Finsterer, [Stern] | V 133 |
| hmtj | verjagen | III 80 |
| hmtj | [schmähende Bezeichnung für Feiglinge] | III 80 |
| šhm.tj | [Gott] | I 123 |
| šhm.tj | Doppelkrone | IV 250 |
| šhm.tj | mächtig | IV 251 |
| šsm.tj | [Horus] | IV 538 |
| šmtj | [als Götterbezeichnung] | IV 144 |
| šmtj | Richter | IV 144 |
| šmtj | (Verbum) | IV 144 |
| šmtj | = šdm — Schminke | IV 144 |
| km.tj | [großes Gefäß aus Granit] | V 128 |
| h3m.tj | Bezeichnung des Apophis gefangen sein | II 351 |
| ntj | [Gewebe] | II 351 |
| ntj | = nt — Gewässer | II 351 |
| ntj | den, welcher (rel.) | II 351 |
| ntj | Krokodil | II 355 |
| km3-ntj | Bezeichnung für Wasser | V 37 |
| hrj-ntj | Nilpferd | III 134 |
| šntj | zurücktreiben | I 102 |
| šntj | dieser? (pron. dem. masc. sg.) | I 206 |
| šntj | Göttin Anat | I 206 |
| wntj | [Gott] | I 325 |
| wntj | Bezeichnung des Apophis | I 325 |
| šwm.tj | Troglodyten | I 55 |
| šwm.tj | [Musikantin im Tempel] | I 55 |
| dwn.tj | Triumphator | V 433 |
| bn3j | [Pavian] | I 464 |
| bn3j | Brustwarzen (als Paar) | I 457 |
| bn3j | Geschlechtsteil des Weibes | I 458 |
| šbn.tj | Verbrecher | III 254 |
| šfd-n-šbn.tj | Verbrecherbuch des Gerichts | III 254 |
| dbn.tj | Bezeichnung für Sonne und Mond | V 437 |
| mn.tj | Nepf, Krug | II 86 |
| mn.tj | Schoß, auf dem das Kind sitzt | II 88 |
| mn.tj | Bergzüge im Osten und Westen des Nils | II 89 |

| | | |
|--------------|---|---------|
| mn.tj | Anteile | II 69 |
| mn.tj | = <i>mnq.t</i> — Brust | II 69 |
| imn.tj | westlich, Westen | I 86 |
| imn.tj | Westwind | I 86 |
| imn.tj | [heilige Schlange] | I 87 |
| t3-imn.tj | Westen | V 221 |
| r3j-imn.tj | südwestlich | II 452 |
| mh.tj-imn.tj | nordwestlich | II 125 |
| hmn.tj | [Schiff] | III 283 |
| smn.tj | Bezeichnung für Schu und Tefnut | IV 135 |
| smn.tj | Kundschafter | IV 135 |
| hpnm.tj | [göttliches Wesen] | II 489 |
| hntj | Feind in Krokodilsgestalt | III 121 |
| hntj | gierig sein nach | III 121 |
| hntj | [Tier mit Stacheln] | III 121 |
| hntj | bekleiden | III 121 |
| hntj | = <i>hntj</i> — schlachten | III 122 |
| hn.tj | [Gewässer am Himmel] | III 105 |
| hn.tj | [Vogel] | III 105 |
| hn.tj | Bereich, Frist | III 105 |
| hn.tj | Bezeichnung des Feindes des Re | III 106 |
| imj-hntj.f | der auf seinem Tragethron ist | III 122 |
| nm-hn.tj.s | ohne Ende | III 106 |
| shn.tj | [Torwächter im Jenseits] | IV 219 |
| hntj | = <i>stj</i> — [Farbstoff] | III 301 |
| hntj | = <i>rh.tj</i> — Bäcker | III 301 |
| hntj | Vorderseite | III 302 |
| hntj | vorn an | III 303 |
| hntj | vorn befindlich | III 304 |
| hntj | Süden (eines Landes) | III 306 |
| hntj | Vorhalle | III 307 |
| hntj | = <i>hnr</i> — Harem | III 307 |
| hntj | Bezeichnung für Krokodil | III 308 |
| hntj | = <i>hntj</i> — Statue | III 308 |
| hntj | Beiname des Osiris | III 308 |
| hntj | Kanal | III 308 |
| hntj | vorn sein | III 308 |
| hntj | stromauf fahren | III 309 |
| hntj.t | Fahrt nach Süden | III 310 |
| im.tj-hntj | Gau von Pelusium | III 305 |
| m-hntj | darin | III 302 |
| r-hntj | nach, vorn vor | III 303 |
| hr-hntj | in | III 303 |
| dr-hntj | früher | III 303 |
| hd-hntj | hin- und herziehen (Schmerzen) | III 309 |
| shntj | stromauf fahren lassen | IV 256 |
| hntj | Statue | III 385 |
| hntj | [Salbgefäß in Gestalt des opfernden Königs] | III 385 |
| mh.n.tj | Fährmann | II 133 |
| en.tj | Abbild | III 457 |
| hrj-bón.tj | [Beamtentitel des Ptah-tempels] | I 477 |
| méntj | Baugrube für Fundament | II 146 |
| mén.tj | Spinnerinnen (Isis und Nephtys) | II 144 |
| mén.tj | Harpunenjäger | II 145 |
| mén.tj | Bezeichnung eines Priesters in Edfu | II 145 |

| | | |
|--------------|--|---------|
| k3n.tj | [offizinell Verwendetes] | V 71 |
| 3ntj | = <i>3nj</i> — beschwören | IV 518 |
| 3ntj | ärgerlich sein | IV 518 |
| 3ntj | = <i>3nj</i> — Haar | IV 518 |
| 3ntj | [Reiher] | IV 519 |
| 3ntj | = <i>3nd.t</i> — Akazie | IV 519 |
| 3ntj | Bezeichnung für Isis und Nephthys | IV 497 |
| 3ntj.t | = <i>3ntj.t</i> — eine Kuhgöttin | IV 519 |
| n3ntj | wütend sein | II 341 |
| n3n.tj | wütend (König im Kampf) | II 341 |
| skntj | jemandem mißliebig machen vor jemandem | IV 318 |
| gnqn.tj | Laute (Musik) | V 177 |
| tnj | [Baum] | V 313 |
| tnj | [Sonnengott] | V 384 |
| 3rtj | zur Milch gehörig | I 116 |
| 3r.tj | beide Augen | I 106 |
| 3r.tj | Sonne und Mond (Himmelsaugen) | I 107 |
| b3n-3rtj | Milchkalb | I 469 |
| imj-3r.tj | Bezeichnung des Kapitäns | I 72 |
| sumw-3r.tj | Augenarzt | I 106 |
| anf-3r.tj | mit wutgeröteten Augen | III 459 |
| rdj-m-3r.tj | jemandem ein Gefühl einflößen | II 468 |
| 33-n-3r.tj | Augenlider | IV 9 |
| hntj-n-3r.tj | [Gott von Letopolis und Ombos] | III 306 |
| 3rtj | [Gewässer in Oberägypten] | I 213 |
| 3r.tj | Bezeichnung der Türflügel | I 209 |
| 3r.tj | [Träger der Königsschlangen] | I 42 |
| wrtj | [Gott Month] | I 336 |
| rw.tj-wr.tj | Doppeltor [Pylon] | II 404 |
| 3pr.tj | Bittsteller | IV 104 |
| n3-nw.tj | Beiname des Horus | II 197 |
| 3mr.tj | [mit Bogen bewaffneter Gott] | IV 482 |
| 3nr.tj | Stadt Pathyris | I 98 |
| 3nr.tj | Konditor | I 463 |
| rr.tj | Kind aufziehen | II 439 |
| wrr.tj | [Götterbezeichnung] | I 333 |
| mrr.tj | Geliebter (des Königs) | II 104 |
| 3rr.tj | Bezeichnung des Sonnengottes | V 62 |
| 3r.tj | Bezeichnung für Isis und Nephtys | II 418 |
| 3r.tj | zu Lande reisen | III 144 |
| 3r.tj | Augen des Horus | III 149 |
| 3r.tj | [widdergestaltiger Gott] | III 396 |
| 3rtj | [Gebäude] | III 396 |
| 3r.tj | [Gott] | III 392 |
| phr.tj | Reisender | I 543 |
| hr-w3r.tj | Beiname des Month | I 363 |
| d3r.tj | [Sonnengott] | V 492 |
| 3r.tj | die zwei Quellöcher des Nils | V 58 |
| 3r.tj | Türangeln | V 58 |
| 3r.tj | Hörner (an Krone des Amon) | V 134 |
| 3tr.tj | Bezeichnung für Ägypten | I 148 |
| 3tr.tj | Umgebung jemandes | I 148 |

| | | |
|------------|--------------------------------------|---------|
| m-3tr.tj | beiderseits | I 148 |
| tr.tj | [Gott] | V 386 |
| ntr.tj | Bezeichnung der zwei Uraen | II 362 |
| ntr.tj | [Haken bei der Mundöffnung] | II 366 |
| dr.tj | Falke | V 597 |
| dr.tj.t | Falkenweibchen | V 597 |
| ir.t-dr.tj | Armband | I 104 |
| htj | Bohren mit Drillbohrer | II 503 |
| htj.t | Bohrer des Drillbohrers | II 503 |
| 3bhtj | [Stein] | I 64 |
| htj | (Verbum vom Munde) | III 182 |
| htj | [Holz] | III 182 |
| htj | Rauch | III 182 |
| htj | = <i>h3tj</i> — [was Nut bedeckt] | III 182 |
| htj | = <i>htj</i> — Segel | III 182 |
| htj.t | Kehle | III 181 |
| htj.t | Bezeichnung der Lunge (Atmerin) | III 182 |
| htj.t | Schritt | III 182 |
| g3w-h3tj.t | ohne Atem (enge Kehle) | III 181 |
| npr-h3tj.t | Bezeichnung des Getreides | III 182 |
| 3htj | = <i>h3tj.t</i> — Kehle | I 123 |
| 3htj | [Gott in Bestgestalt] | I 123 |
| 3h.tj | Innenflächen der Oberschenkel | I 120 |
| 3h.tj | Isis und Nephtys stark sein | IV 52 |
| ph3tj | kräftig | I 540 |
| ph3tj | Löwe | I 540 |
| ph.tj | körperliche Kraft | I 539 |
| md.t-ph3tj | Ehrung | I 540 |
| rh-ph.tj.f | seiner Kraft bewußt | II 443 |
| mh.tj | nördlich | II 125 |
| 3-mh.tj | Unterägypten | II 125 |
| nh.tj | wünschen | II 303 |
| rh.tj | die beiden Frauen — Isis und Nephtys | II 441 |
| rh.tj | Bezeichnung zweier Schlangen | II 441 |
| rh.tj | Bäcker | II 459 |
| rh.tj | [Metall] | V 396 |
| dh.tj | Blei | V 606 |
| mdh.tj | Salböl | II 191 |
| htj | zurückweichen | III 342 |
| htj | einritzen | III 347 |
| htj | Graveur | III 348 |
| htj | sehen | III 348 |
| htj | [Schlange im Totenreich] | III 348 |
| 3h.tj | [feuerspeiende Schlange] | III 218 |
| 3h.tj | Horizontbewohner (von Göttern) | I 18 |
| 3h.tj | Ackerpflanzen | I 18 |
| 3h.tj.t | Beiname der Hathor von Dendera | I 18 |
| h33-3h.tj | Bezeichnung des Sonnengottes | I 17 |
| hr-3h.tj | Bezeichnung des Sonnengottes | I 18 |
| 3bh.tj | [Gott] | IV 92 |
| nh.tj | Riese | II 318 |
| 3nh.tj | Bezeichnung des Osiris | I 205 |

| | | |
|----------|---|---------|
| m3nh.tj | [Gott] | II 47 |
| rh3tj | Wäscher | II 448 |
| rh3tj | Bezeichnung für Isis und Nephtys | II 446 |
| 3h.tj | Schläger (vom König) | III 468 |
| 3h.tj | Vogelsteller | IV 263 |
| 3h.tj | Weber | IV 264 |
| 3h.tj | Verschnittener | IV 264 |
| 3h.tj | Eile! | IV 265 |
| 3h.tj | Feldbewohner | IV 231 |
| 3h.tj | [Gott im Amduat] | IV 232 |
| 3h.tj.t | Vogelstellerin | IV 263 |
| h.tj | Bast (als Amulettchnur) | III 359 |
| hnt-h3tj | Gott von Athribis | III 310 |
| hnt-h3tj | [Fest im 1. Monat der <i>smw</i> -Zeit] | III 310 |
| stj | (Substantiv in Zaubertext) | III 488 |
| stj | [Mineral aus Nubien] | III 488 |
| stj | Nubien | III 488 |
| stj.t | [Fest der Anukis von Amada] | III 439 |
| stj.t | Nubien | III 489 |
| t3-stj | Nubien | III 488 |
| 3s.tj | Ägypten | I 127 |
| 3s.tj | Matrosen der Götter | I 127 |
| pstj | Bezeichnung eines Dieners | I 551 |
| mns.tj | Beine | II 88 |
| hs.tj | Gunst | III 158 |
| hns.tj | Haarflechte | III 120 |
| hns.tj | Bezeichnung einer Schlange | III 121 |
| hns.tj.t | [Hathor] | III 121 |
| ts.tj | Beiwort des Osiris | V 405 |
| stj | schießen | IV 326 |
| stj | Pfeil | IV 328 |
| stj | werfen | IV 328 |
| stj | schütten | IV 328 |
| stj | ausgießen | IV 328 |
| stj | = <i>stj</i> — Samen ergießen | IV 329 |
| stj | spritzen | IV 329 |
| stj | knüpfen | IV 330 |
| stj | brennen | IV 330 |
| stj | strahlen | IV 330 |
| stj | (Gesicht) hinwenden | IV 332 |
| stj | [Backwerk] | IV 332 |
| stj | [Erzeugnisse der Bäckerei] | IV 332 |
| stj | [Stoff für Halskragen] | IV 334 |
| stj | Osirisbein | IV 334 |
| stj | [aus Zedernholz Hergestelltes] | IV 334 |
| stj | Thronfolger | IV 8 |
| stj.t | Heiligtum | IV 333 |
| stj.t | = <i>stj.t</i> — Göttin Satis | IV 333 |
| m-stj-n | gegenüber von | IV 332 |
| hr-stj | fünfarmiger Leuchter | III 395 |
| ndm-stj | Bezeichnung für Salbe, Weihrauch | II 381 |
| w3s.tj | ähebanisch, Thebaner | I 260 |
| w3s.tj | Bürger | I 260 |
| m3s.tj | [Schiffsteil] | II 367 |
| w3stj | amtliches Schreiben | I 327 |
| m3stj | = <i>m3stj</i> — [Flüssigkeit] | II 151 |

| | | |
|------------|---|---------|
| mštj | [Korb] | II 151 |
| mštj | [Schiff] | II 151 |
| mw-nw-mštj | [Flüssigkeit] | II 151 |
| imštj | [menschenköpfiger Horussohn] | I 88 |
| ns.tj | [offizinell Verwendetes] | II 324 |
| hštj | Beiname des Osiris | III 400 |
| hštj | traurig werden | III 400 |
| šštj | Sistrum spielen | IV 279 |
| gštj | Palette des Schreibers | V 207 |
| gštj | Bezeichnung der Hoden des Seth | V 208 |
| ndš.tj | Beiname des Osiris | II 386 |
| štj | Bezeichnung des Verstorbenen | IV 556 |
| štj.t | [Gegenstand] | IV 556 |
| štj.t | Führerin rudender Frauen | IV 556 |
| šš.tj | Handelswaren | I 134 |
| k.tj | [Schlange] | V 72 |
| šš.k.tj | [Bauarbeiter] | IV 26 |
| imk.tj | Beiname eines Gottes | I 101 |
| k.k.tj | Rinde | V 71 |
| mdktj | [Gefäß] | II 191 |
| ktj | Bezeichnung der Uräuschlange | V 115 |
| bik.tj | Bezeichnung für Dekangestirne | I 430 |
| fk.tj | Kahler | I 580 |
| mk.tj | Schützer | II 161 |
| šnk.tj | Dunkelheit | IV 176 |
| hmsk.tj | Bezeichnung des Hohenpriesters von Heliopolis | III 116 |
| sk.tj | [Schiff] | IV 315 |
| šbt.tj.t | [offizinell verwendete Pflanze] | IV 96 |
| šbt.tj | Vogelfänger | I 65 |
| imntj | Beiname des Sonnengottes | I 102 |
| šttj | (Substantiv) | III 489 |
| pnđ.tj | Sonnengott | I 511 |
| bhd.tj.t | Beiname der Hathor | I 470 |
| hr-bhd.tj | Beiname des Horus | I 470 |
| šd.tj | Zögling | IV 364 |
| šd.tj | Beiname des Sobek | IV 567 |
| šdšd.tj | warten | IV 569 |
| gd.tj | [Gott von Mendes] | V 630 |
| wšd.tj | Gemüsegärtner | I 267 |
| wšd.tj | Uräusschlangen (als Paar) | I 269 |
| šttj.šd.tj | Willkommen! | I 238 |
| pđ.tj | Barbar | I 570 |
| pđ.tj | Bogenschütze | I 570 |
| md.tj | Salbenbereiter | II 185 |
| nd.tj | Quirl | II 369 |
| nd.tj | Mägde | II 370 |
| nd.tj | fragen | II 371 |
| nd.tj | zu etwas Ernannter | II 374 |
| nd.tj | schützen | II 375 |
| nd.tj | Schützer | II 375 |
| nd.tj | Beiname des Osiris | I 207 |
| šnd.tj | [Tempelbeamter] | IV 522 |
| hd.tj | weiße Sandalen | III 210 |
| šd.tj | Kind | IV 377 |

| | | |
|----------|----------------------------------|---------|
| šd.tj.t | Mädchen | IV 377 |
| psd.tj | Beiname des Sonnengottes | I 558 |
| psd.tj | Pelikan | I 559 |
| hdđ.tj | Bezeichnung der Augen der Sonne | III 215 |
| šttj.t | Ammen | I 23 |
| šttj.tj | Betrüger | IV 32 |
| šttj.tj | [heiliges Bein des Osiris] | IV 32 |
| šttj | nehmen, in Besitz nehmen | I 149 |
| šttj | stampfen (von Pferd) | V 357 |
| šttj | Bezeichnung der Beine | V 357 |
| šttj | [Berufsbezeichnung] | I 485 |
| šttj | schlachten | III 122 |
| šttj | gründen | IV 177 |
| šttj.t | (Substantiv) | IV 180 |
| šttj | [Götterfeind in Krokodilgestalt] | IV 520 |
| šttj | Feindschaft | IV 520 |
| šttj | säen | IV 346 |
| šttj | Samen ergießen | IV 347 |
| šttj | Duft | IV 349 |
| šttj | [in offizineller Verwendung] | IV 350 |
| šttj | [Frucht] | IV 350 |
| šttj | bestaunen | IV 350 |
| šttj | = šttj — Krug | IV 350 |
| šttj.t | Same (Sperma) | IV 348 |
| šttj.t | Göttin Satis | IV 348 |
| mšš-šttj | [13. Mondmonatstag] | II 10 |
| šttj.t | Grab des Sokar | IV 559 |
| šttj | Gabe | V 419 |
| šttj | hier | V 420 |
| šttj | fünf | V 420 |
| šttj | Kräuter | V 421 |
| šttj-dj | [Nekropole bei Dendera] | III 220 |
| šttj | [Ortsbezeichnung] | I 35 |
| šttj.t | [Tier] | V 15 |
| šttj | taub sein | I 151 |
| šttj | spenden | I 152 |
| šttj.t | Mädchen | I 151 |
| bjdj | [Augenkrankheit] | I 445 |
| djdj | [rotfärbendes Mineral] | V 421 |
| wđj | legen | I 385 |
| wđj | Schiff staken | I 387 |
| nwdj | [göttliches Wesen] | II 225 |
| bdj | = bjdj — [Augenkrankheit] | I 487 |
| bdj | Thron | I 487 |
| ndbj | Flechter, Friseur | II 246 |
| fdj | ausreißen (Pflanzen) | I 582 |
| šfdj.t | Bahre | IV 462 |
| mdj | bei | II 176 |
| mdj | Bezeichnung des Sonnengottes | II 177 |
| mdj | Bezeichnung des Seth | II 177 |
| wn-mdj.f | er hat | II 177 |
| mn-mdj.f | er hat nicht | II 177 |
| hr-mdj | ferner | II 177 |
| mdj | [Teil des Wagens] | I 187 |
| ndj | niederwerfen | II 367 |
| ndj | [Sonnengott] | II 367 |
| ndj.t | [Todesort des Osiris] | II 367 |

| | | |
|------------------------|--|---------|
| ndj.t | (Substantiv) | II 367 |
| hndj | [Gewässer] | III 314 |
| rdj | geben | II 464 |
| rdj.t | [Körperteil] | II 463 |
| rdj.t | Pflanze | II 463 |
| m-rdj | laß nicht zu, daß | II 468 |
| tm-rdj | nicht zulassen, daß | II 468 |
| n-rdj | nicht zulassen, daß | II 468 |
| nn-rdj.t | ohne zu gestatten, daß | II 468 |
| r-rdj.t | damit | II 468 |
| hdj | etwas umspannen | III 205 |
| hdj | schlaff werden | III 205 |
| hdj | nordwärts reisen | III 334 |
| whđj | Leidende | I 356 |
| šhdj | Frevler | IV 267 |
| šdj | Füße in Bewegung setzen | IV 367 |
| šdj.t | Schwanz (als Kleidungsstück) | IV 365 |
| mšdj | [Metallgefäß] | II 153 |
| šdj | nehmen | IV 580 |
| šdj | graben | IV 563 |
| šdj | retten | IV 563 |
| šdj | lesen | IV 563 |
| šdj | säugen | IV 564 |
| šdj | Nilgott | IV 565 |
| šdj | Graben (militärisch) | IV 567 |
| šdj | Acker | IV 567 |
| šdj | [Behälter] | IV 568 |
| šdj.t | Schutthaufen | III 212 |
| šdj.t | [heilige Kuh] | IV 565 |
| šdj.t | [Gewässer] | IV 567 |
| šdj.t | = šptj.t — Körperteil des Menschen (Harnblase) | IV 568 |
| šdj | Palast | IV 568 |
| ššdj | Juwelier | II 342 |
| ndj | umhergehen | V 78 |
| km ^c -n-kdj | [Steinarbeiter] | III 282 |
| hm ^c -kdj.t | Alexandria (Rakote) | II 403 |
| rdj | fahren | IV 308 |
| ddj | Schlangennamen | V 502 |
| šdj | Arm | I 156 |
| šdj | jemandem unterstellt sein | I 157 |
| šdj | Gegend | I 157 |
| šdj | Zustand | I 158 |
| šdj | Portion | I 158 |
| šdj | Napf | I 158 |
| šdj | Schriftstück | I 158 |
| šdj | Deichsel | I 159 |
| šdj | Fußspur | I 159 |
| šdj | eingedämmter Kanal | I 159 |
| šdj | Dolmetscher | I 159 |
| šdj | [Anrede an Krankheitsdämon] | I 159 |
| šdj | niederwerfen | I 159 |
| šdj | [Mond] | I 159 |
| šdj | [Ackererzeugnis] | I 159 |

| | | |
|----------------------|-----------------------------------|---------|
| daj.t | Hände | V 502 |
| dđj | dauern | V 628 |
| dđj.t | Beiname der Isis und Nephthys | V 626 |
| dđj.t | [Nekropole von Heliopolis] | V 630 |
| šdđj | dauern lassen | IV 395 |
| wšđj.t | Säulenhalle | I 269 |
| wđj | senden | I 397 |
| wđj | Reise | I 398 |
| wđj | [Fische] | I 399 |
| wđj.t | Ausfahrt, Reise | I 398 |
| wđj.t | Mehlgehalt des Brotes | I 399 |
| rwđj | [Schutzgott des Osiris] | II 413 |
| pđj | wetzen | I 568 |
| npđj | Messer | II 250 |
| dmdj | [Schutzgott des Osiris] | V 462 |
| dmdj.t | Tag der Versammlung | V 461 |
| dmdj.t | Frist | V 461 |
| dmdj.t | (in unklarem Zusammenhang) | V 462 |
| dmdj.t | [Göttin] | V 463 |
| ndj | feindlich | II 369 |
| ndj.t | Schlechtigkeit | II 369 |
| ndj.t | Schale, Gefäß | I 208 |
| ndj.t | Rindvieh | I 326 |
| wndj.t | [Thot] | I 578 |
| frđj | [offizinell Verwendetes] | II 93 |
| šrw-mndj | Bezeichnung des Osiris | III 211 |
| hdj | zerstören, schädigen | III 212 |
| hdj | [Göttin] | III 208 |
| hdj.t | Niedermetzelung | III 213 |
| hdj.t | [Gerät im Schiff] | III 213 |
| šhdj.t | Tempel, Palast | IV 228 |
| hdj | Reichtum, reich | III 355 |
| hdj | Helfer | I 538 |
| pšđj | hassen | II 154 |
| mšđj | Verabscheutes, Gehäßtes | II 154 |
| kdj | [Teil der thebanischen Nekropole] | V 82 |
| mdj | Peitschenschnur | II 175 |
| šdj | Haus | I 159 |
| šdj | Sängerin | I 159 |
| šdj | Raum im Hause | I 160 |
| šdj | Glied | I 160 |
| šdj | [Seil am Schiffsmast] | I 161 |
| šdj | Acker | I 161 |
| sm ^c | jemandem eine Darbietung machen | III 448 |
| sm ^c .t | [Gebäck] | III 448 |
| km ^c | Beiname des Horus | V 37 |
| šm ^c | mit kräftigem Arm | V 367 |
| šm ^c .t | (Anfangsformel des Buches) | III 25 |
| šm ^c .t.t | Fürstin | III 26 |
| šbj. ^c | geleiten | III 431 |

| | | | | | |
|------------------------|--------------------------------|--------|--------------------|----------------------------------|---------|
| šš-n-š ^c .t | demotische Schrift | IV 418 | ng ^c | = n ^c g — zerkleinern | II 349 |
| š ^c | Kehle | I 229 | nt ^c | einrichten | II 355 |
| wš ^c | kauen | I 370 | ht ^c | = h ^c t — Bett | III 181 |
| wš ^c .t | [juckende Körperstelle] | I 370 | id ^c | klug | I 153 |
| mš ^c | Heer | II 155 | š ^c | Sturmwind | V 533 |
| mš ^c | Kriegsschiff | II 156 | š ^c | stürmisch sein | V 534 |
| mš ^c | Expedition | II 156 | š ^c | Ackerarbeit | V 534 |
| mš ^c | marschieren | II 156 | š ^c | [Speise] | V 534 |
| mš ^c | abschneiden | II 156 | š ^c | = š ^c r — suchen | V 534 |
| mš ^c | [Vogel] | II 156 | š ^c | Fische fangen | V 534 |
| mš ^c .t | = mš ^c — Heer | II 156 | š ^c | wüst liegen | V 534 |
| nš-n-mš ^c | gemeiner Soldat | I 201 | š ^c .t | [offizinell Verwendetes] | V 535 |
| mr-mš ^c | General | II 155 | š ^c .t | (Verbum) | V 541 |
| rmf-mš ^c | gemeiner Soldat | II 424 | wš ^c | trennen, richten | I 404 |
| šš ^c | Beiwort des Seth | IV 281 | wš ^c | offenbar sein | I 406 |
| k ^c | = k ³ c — ausspeien | V 18 | wš ^c | [göttliches Wesen] | I 406 |
| k ^c | [kostbares Mineral] | V 18 | wš ^c | Urteil | I 407 |
| nk ^c | [Brot besonderer Form] | II 343 | wš ^c | Bezeichnung des Seth | I 407 |
| nk ^c | [Bausausdruck] | II 343 | wš ^c | [Art des psn-Brotens] | I 407 |
| nk ^c | ausreißen (Herz) | II 343 | wš ^c | grauer Kranich | I 407 |
| nk ^c | [eßbarer Teil einer Pflanze] | II 343 | wš ^c .t | [Flöte] | I 407 |
| nk ^c | Wehen (bei Geburt) | II 343 | wš ^c .t | Messer | I 406 |
| šk ^c | ausspeien lassen | IV 304 | wš ^c .t | (Substantiv) | I 407 |
| dk ^c | glätten (Holz) | V 495 | wš ^c .t | geschiedene Frau | I 407 |
| | | | | Schreiberpalette | I 407 |

21

| | | | | | |
|------------|--------------------------|---------|----------------|---------------------------------|--------|
| w | Wachtelkücken | I 243 | irj-išw.t | Amt ausüben | I 29 |
| w | Bezirk | I 243 | bšw | Erzausbeute | I 438 |
| w | (Negation des Verbotes) | I 243 | bšw | Bergwerk | I 438 |
| w | sie (pron. suff. 3. pl.) | I 243 | hšw | wunderbare Dinge | I 441 |
| šw | Länge | I 4 | nšw | Steinbock | II 202 |
| šw | jemanden anmelden | I 5 | šb-nšw | Bezeichnung des Jahres | I 173 |
| šw | Todesfall | I 5 | ššw | [heiliger Falke] | IV 29 |
| šw | = šw — Böses | I 5 | ššw | [14. Tag des Mondmonats] | IV 31 |
| šw.t | Länge | I 4 | ššw | [17. Tag des Mondmonats] | IV 31 |
| šw.t | Spende | I 5 | tšw | Zahnschmerzen | V 241 |
| šw.t | Altar | I 5 | šw | Größe | I 163 |
| šw.t | [Tempelgemach] | I 5 | šw | Differenz | I 164 |
| r-hn.tj-šw | für lange Zeit | III 106 | wšw | wehe! | I 245 |
| r-šw | ganz | I 4 | wšw | seit langem, von fern | I 245 |
| nw-r-šw | ganze Schöpfung | II 216 | wšw | Brandung | I 249 |
| ššf-šw | spenden | I 5 | wp-wš.w.t | Upwaut | I 304 |
| m-šw | tot | I 5 | pr.t-wp-wš.w.t | [Fest des Upwaut] | I 525 |
| rj-šw | Tura | II 393 | wšw | Glanz der Sonne | I 250 |
| bšw.t | Manneskraft | I 417 | šw | Notabeln | I 454 |
| wšš.w | Masttiere | I 369 | hšw | taumeln (vom Gang) | III 50 |
| šw | Lobpreis | I 28 | hšw | Fäulnisgeruch | III 51 |
| šw | [offizinell Verwendetes] | I 28 | šw | Umgebung | IV 62 |
| šw | Greis | I 29 | irj-šw | vorbeigehen | IV 61 |
| šw.t | Alter | I 28 | šw | Armer | IV 435 |
| šw.t | Greisin | I 29 | twš.w | [woran der König sorgend denkt] | V 248 |
| šw.t | Greise, Alte | I 29 | twš.w | Böses | V 248 |
| šw.t | [Gerät] | I 29 | twš.w | Schwellung | V 251 |
| šw.t | Würde | I 29 | twš.w | (Substantiv) | V 251 |
| šw.t | Vieh | I 29 | twš.w | [Salböl] | V 251 |
| šw.t | Ägypten | I 26 | twš.w.t | | |

| | | | | | |
|-------------------------|--|---------|-----------|--|---------|
| dwš.w | Morgenfrühe | V 422 | imšw | Zelt | I 81 |
| dwš.w | einrichten | V 428 | hr-imšw | Lager aufschlagen | I 81 |
| dwš.w | Verehrer | V 429 | hmš.w | [pflanzlicher Stoff] | III 94 |
| dwš.w.t | [weibliches göttliches Wesen (Tänzerin)] | V 424 | hmš.w | [Krankheit im Unterleib] | III 94 |
| dwš.w.t | Hymnen | V 428 | smšw | Vereinigung | III 450 |
| hr-šš-dwš.w | übermorgen | IV 12 | smšw | [Kleidungsstück] | III 452 |
| bšw | Seelen, Ruhm | I 413 | smš.w | Zweige der Bäume | III 452 |
| bšw | [Schiff] | I 418 | smš.w.t | Genossin (Bezeichnung der Königin) | III 450 |
| bšw | [Gefäß für Medikamente] | I 418 | kkw-smš.w | Dämmerung | V 143 |
| bšw | (Substantiv) | I 418 | šmš.w | Elend | IV 471 |
| bšw.t | [von Abteilungen eines großen Sarges] | I 418 | šmš.w | Blume | IV 472 |
| tp-š-bš.w | [Dekan] | I 414 | kmš.w | Worfler | V 34 |
| šš ^c -bš.w.š | [Hathor] | I 414 | kmš.w | [Soldaten] | V 38 |
| tp-bš.w | [Dekan] | IV 238 | kmš.w | Herolde | V 38 |
| gm-bš.w.š | [Hathor] | V 144 | tmš.w.t | [etwas Krankhaftes] | V 308 |
| šš ^c -bš.w | [Fährmann im Jenseits] | I 419 | dmš.w | [Gott mit Pfeilen] | V 453 |
| ibšw | Tänze | IV 26 | nšw | Lufthauch | II 200 |
| ibšw | Mähneschaf | I 62 | nšw | [barbarische Truppen] | II 200 |
| šbš.w | Lehrer | IV 85 | nšw.t | [Pflanze] | II 200 |
| šbš.w | Lehre | IV 85 | šš-nšw | Atemluft | II 200 |
| š.t-šbš.w | Schule | IV 85 | imj-nšw.t | Bezeichnung einer Schlange | II 200 |
| šbh.w-šbš.w | Tau | V 28 | štm-rš.w | Münder verstummen lassen | III 197 |
| gbš.w | Schuld | V 164 | nršw | Steinbock | II 280 |
| dbš.w | Ersatz | V 558 | hšw | Nachbarschaft | II 477 |
| dbš.w | Schmückung mit der roten Krone | V 561 | hšw | Zeit | II 478 |
| dbš.w | Blätter | V 562 | hšw | Verwandte | II 479 |
| dbš.w | [Gerät, auf das man Speisen legt] | V 562 | hšw | Not | II 479 |
| dbš.w.t.t | [Schlange] | V 562 | hšw.t | Tod der Feinde (durch Feuer) | II 479 |
| r-dšbš.w | an Stelle von | V 559 | imj-hšw.f | der derzeitige | II 478 |
| rdj-r-dšbš.w | bezahlen | V 560 | irj-hšw | Besitz ergreifen | II 478 |
| pšw | Urgestalt | I 495 | m-hšw | in der Nähe | II 477 |
| pšw | [etwas, das sich nicht zu sagen ziemt] | I 498 | n-hšw.f | seinerzeit | II 478 |
| pšw.t | Urzeit | I 496 | r-hšw | in der Nähe | II 477 |
| pšw.t | Urgöttin | I 497 | hhšw | Flüchtling | I 467 |
| pšw.t | Last | I 498 | khš.w | [Wesen am Himmel] | V 137 |
| hpšw.t | [Krankhaftes] | III 366 | hšw | Nackter | III 14 |
| tpš.w | Kopfhaut | V 295 | hšw | Zuwachs | III 18 |
| tpš.w | [Krankheit am Kopf] | V 295 | hšw | [Augenkrankheit] | III 18 |
| tpš.w | [offizinell Verwendetes] | V 295 | hšw | [Krankheitserscheinung] | III 18 |
| tpš.w | [Frucht] | V 295 | hšw | Reichtum | III 18 |
| tpš.w.t | [Bestandteil von Medikamenten] | V 295 | hšw | Finsternis | III 18 |
| fšw | Lieferung von Speisen | I 575 | hšw.t | (Substantiv) | III 14 |
| fšw | Macht | I 575 | hšw.t | Antlitz des Gottes | III 28 |
| fšw | Bedrohung | I 575 | hšw.t | Erste | III 29 |
| hfš.w | Schlange | III 72 | hšw.t | [die vor dem Hauptgott gehenden Nebengötter] | III 29 |
| m-hfš.w | in demütiger Haltung | III 73 | hšw.t.t | [offizinell Verwendetes] | III 19 |
| mšw.t | Neuheit | II 26 | ntj-hšw | Nackter | III 13 |
| mšw.t | Neuland | II 27 | imj-hšw | vermehrte! | I 77 |
| mšw.t | Stock | II 27 | rdj-hšw | etwas mehr tun | III 17 |
| mšw.t | Halm des Getreides | II 27 | m-hšw | mehr als | III 17 |
| mšw.t | Refrain eines Liedes | II 27 | m-hšw | abgesehen von | III 17 |
| mšw.t | Strahlen | II 28 | štp-n-hšw | Verband | IV 341 |
| ur-mšw | Hoherpriester in Heliopolis | I 329 | rj-hš.w.t | Bezeichnung der Nilmündungen | III 24 |
| m-mšw.t | neu* | II 26 | hšw | Waffen (allgemein) | I 216 |
| n-mšw.t | neu | II 27 | šw | Pfeilmacher | I 216 |
| imšw | Glanz der Sonne | I 80 | pr-šhšw | Zeughaus | I 216 |
| imšw | [rote Farbe] | I 80 | | | |

| | | |
|--------------|--|---------|
| šh3.w | [Krankheit der weiblichen Geschlechtsorgane] | IV 210 |
| h3w | Fleischstücke als Opfer | III 220 |
| h3w | Kornmesser | III 223 |
| h3w | = h3w — zerkleinern | III 225 |
| h3w | Haut und Abfall von Kleintieren | III 225 |
| h3w | Schale | III 225 |
| h3.w | Blätter des Lotus | III 219 |
| h3.w | [Dekasterne] | III 220 |
| h3.w | Kräuter | III 221 |
| h3.w | [wohriechende Substanzen aus Punt] | III 221 |
| h3.w | [Zubehör der Lampe] | III 221 |
| h3w.t | Fell | III 225 |
| h3w.t | Opferplatte | III 226 |
| h3w.t | [Gerät aus Kupfer zu Tausenden] | III 227 |
| m-h3.w | [Dekan] | III 219 |
| h3.t-h3.w | [Dekane] | III 20 |
| phw3-h3.w | [Dekane] | I 537 |
| h3.t-h3.w | [Reichsgöttin von Unter-ägypten] | I 143 |
| hrw-n-h3.w.t | [5. Tag des Mondmonats] | III 226 |
| w3w | Zehennägel (eines Gottes) | I 355 |
| m3w | ['Tier] | II 131 |
| m3w.t | Wiegeergebnis | II 131 |
| m3w.t | Zollstationen auf dem Fluß | II 131 |
| n3.w | [Haarschmuck] | II 306 |
| n3.w | [Stadt] | II 306 |
| šh3.w | Andenken | IV 233 |
| šh3.w | Notizen | IV 234 |
| šh3.w | = šh3.w — Totensprüche zerstoßen (Medikamente) | IV 234 |
| h3w | [offizinell Verwendetes] | III 361 |
| h3w | (Substantiv) | II 133 |
| š3w | Zauberer | III 415 |
| š3w | bewachen | III 416 |
| š3w | Wächter | III 418 |
| š3w | schmähende Bezeichnung des Apophis | III 418 |
| š3w | langsam gehen | III 418 |
| š3w | zerbrechen | III 419 |
| š3w | abschneiden | III 419 |
| š3w | [Gewebe oder Kleid] | III 419 |
| š3w | Balken | III 419 |
| š3w | Zweige der Bäume | III 419 |
| š3w | Sais | III 420 |
| š3.w | Finsternis | III 412 |
| š3w.t | Bewachung | III 418 |
| š3w.t | [Körperteil des Menschen] | III 419 |
| rmf-š3w | Gefangener | II 424 |
| h3.w | [Gewässer am Himmel] | III 160 |
| h3w | [offizinell verwendeter Teil eines Baumes] | III 332 |
| h3w | [Pflanze (als Brennmaterial)] | III 332 |
| š3w | Sättigung | IV 15 |
| š3w | [Bauteil] | IV 17 |
| š3.w.t | Gebäude eines Ortes | IV 14 |
| šphr-š3.w.t | Wanddekorateur (im Tempel) | IV 14 |
| šwš3w | Onanierer (von Atum) | I 57 |

| | | |
|------------|--|---------|
| b3w | [Schurz] | I 476 |
| šš3.w | Kuhantilope | IV 543 |
| šš3.w | Geschicklichkeit | IV 544 |
| šš3.w | Diagnose | IV 544 |
| šš3.w | Bezeichnung der Zunge | IV 545 |
| š3w | wert | IV 404 |
| š3w | behandeln (eine blutende Wunde) | IV 405 |
| š3w | [Erkrankung in den Augen] | IV 406 |
| š3.w | [offizinell verwendete Pflanze] | IV 400 |
| š3.w | Kot des Menschen | IV 402 |
| š3.w | Schicksal | IV 403 |
| š3.w | Gewicht | IV 404 |
| š3w.t | Uniefe | IV 401 |
| š3.w.t | [eßbare Gartenpflanze] | IV 400 |
| r3-š3.w | [Vogel] | II 399 |
| š3w.t | übermäßiges Kindergeschrei | I 229 |
| rn.w-š3.w | andere, nicht genannte Personen | II 427 |
| wš3w | Verleumdungen | I 370 |
| wš3w | Nacht | I 370 |
| nb.t-wš3w | [8. Stunde im Amduat] | I 370 |
| šš3.w | [Gott] | IV 280 |
| m-šš3.w | im Gegensatz zu [Gebäck] | IV 281 |
| h3.w | Höhe | V 8 |
| h3.w | = h3 — Urhügel | V 4 |
| h3.w | [Flußschiff] | V 14 |
| h3.w | Geist, Eigenschaft (pl.) | V 90 |
| h3.w | Nahrung | V 91 |
| h3.w | [in Liste von Gartenprodukten] | V 94 |
| h3.w | [Früchte] | V 96 |
| h3w.t | [etwas Schlechtes] | V 102 |
| h3.w.t | Gewerke | V 100 |
| hm-k3.w | Stiftung für die Versorgung des Grabes | III 90 |
| š3j-k3.w | Sattwerden | IV 15 |
| nhb.w-k3.w | Bezeichnung des Sonnengottes | II 291 |
| nhb-k3.w | mit Nahrung versehen | II 291 |
| nhb-k3.w | [Neujahrsfest] | II 292 |
| k3k3w.t | [etwas Krankhaftes] | V 109 |
| h3.w | Zauberer | III 177 |
| h3.w | Name der Krone von Oberägypten | III 177 |
| h3w.t | Zauberei | III 177 |
| ur-h3.w | Beiname von Göttern | I 328 |
| wr.t-h3.w | Bezeichnung der Uräuschlange | I 328 |
| mnh-h3.w | mit wirksamem Zauber | II 85 |
| tk3.w | Flamme | V 331 |
| g3w | staunend blicken | V 151 |
| g3w | eng sein | V 151 |
| g3w | Mangel | V 152 |
| g3w | niederstürzen (Feinde) | V 153 |
| g3w | träge | V 153 |
| g3.w | = gj.w — [wohriechende Pflanze] | V 151 |
| g3w.t | Mangel | V 152 |

| | | |
|---------------|---------------------------------------|---------|
| g3w.t | Engpaß? | V 152 |
| g3w.t | Abgaben | V 153 |
| g3w.t | Bündel | V 153 |
| g3w.t | Kasten | V 153 |
| g3w.t | Särge der Apisstiere | V 153 |
| m-g3w.f | wenn man es nötig hat | V 152 |
| g3g3w | staunend blicken | V 157 |
| g3g3w.t | Erstaunen | V 157 |
| g3g3w.t | [Göttin] | V 157 |
| m-g3g3w.t | staunend | V 157 |
| ig3w | Bezeichnung des Anubis | I 140 |
| bg3w | Geschrei | I 482 |
| bg3w | Schiffbrüchiger | I 482 |
| pg3w | Waschgerät | I 563 |
| ng3w | [Rind] | II 349 |
| ng3.w | Mangel | II 349 |
| hg3w | [Gefaß] | III 180 |
| hg3w | Festplatz | III 180 |
| šg3w.t | Staunen | IV 320 |
| šdg3w.t | Staunen | IV 373 |
| š3.w | Götterkleider | V 232 |
| š3.w | Erde | V 219 |
| š3.w | Hitziger | V 229 |
| š3.w | Hitze | V 229 |
| h3.t-š3.w | Bezeichnung von Räucherwerk | III 22 |
| šft.w-nw-š3.w | [Krankheitserscheinung der Vulva] | III 444 |
| bk3-š3.w | Vorrat an Nahrungsmitteln | I 481 |
| ht3.w | Flecken (im Gesicht) | III 182 |
| ht3.w | Segel | III 182 |
| ht3.w.t | Segel | III 182 |
| f3j-h3.w | segeln | I 574 |
| r3-š3.w | Totenreich | II 398 |
| šš3.w | Geheimnis | IV 553 |
| šš3.w | [Nutzholz] | IV 555 |
| m-šš3.w | im Verborgenen | IV 554 |
| š3w | [Titel] | V 349 |
| š3w | Buch | V 349 |
| š3w | stehlen | V 350 |
| š3w | Luft | V 350 |
| š3w | [als Beischrift zu Gegenständen] | V 353 |
| š3.w | [im Zauber (pl.)] | V 342 |
| š3.w | [Spiel] | V 343 |
| š3.w | [Pflanze] | V 353 |
| š3w.t | Wiedererstattungswert für Gestohlenes | V 350 |
| š3w.t | Segel | V 353 |
| š3w.t | [etwas Unrechtes] | V 353 |
| š3w.t | [Gerät aus Holz] | V 353 |
| š3w.t | = tw3.t — Öl | V 353 |
| f3j-š3w | segeln | I 574 |
| rđj-š3w | begnadigen | V 352 |
| hrw-š3w | [Krankhaftes im Unterleib] | III 149 |
| ht-š3w | Mastbaum | III 342 |
| m-š3.w | diebisch | V 350 |
| šš3.w | Ziehen | IV 355 |
| šš3.w | Mordversuch | IV 357 |
| d3w | [göttliches Wesen] | V 414 |
| d3w.t | Zittern | V 415 |

| | | |
|----------|--|---------|
| šd3.w | Zittern | IV 366 |
| m-šd3.w | zitternd | IV 366 |
| d3w | Leinenzeug | V 519 |
| d3w | [Sandbank im Amduat] | V 519 |
| d3w | Abend oder Nacht des Neujahrstages | V 520 |
| d3.w | Unrecht | V 518 |
| r3-d3w | Kampf | II 399 |
| r-d3w.t | gemäß. . . | V 520 |
| d3d3.w | Topf | V 532 |
| d3d3.w.t | Schichten [einer Ziegelmauer] | V 532 |
| šnd3d3.w | [offizinell verwendete Flüssigkeit] | IV 185 |
| m-šd3.w | lügnerisch | I 241 |
| wd3w | Heil | I 401 |
| wd3w | Amulett, Schutzmittel | I 401 |
| md3.w | Widersacher | II 187 |
| šd3w | Schatzmeister | V 638 |
| šd3.w | Bewahrung | IV 379 |
| šd3.w.t | Siegelung | IV 379 |
| šw | sein (Verbum) | I 42 |
| šw | = wj — ich (abh. pron. 1. sg.) | I 43 |
| šw | Buckliger | I 43 |
| šw | [Fährmann] | I 43 |
| šw | = šw.tj — Harpunierer | I 43 |
| šw | kommen | I 44 |
| šw | Insel | I 47 |
| šw | Vieh | I 47 |
| šw | abrennen | I 48 |
| šw | [Hund] | I 48 |
| šw | Bezeichnung des Thot | I 48 |
| šw | Böses | I 48 |
| šw | klagen | I 48 |
| šw.t | [Gerät] | I 43 |
| šw.t | die, welche nicht (neg. Rel. fem. sg.) | I 45 |
| šm-šw | hin- und hergehen | IV 462 |
| hr-šw | Frevler | I 48 |
| mr-šw | [heilige Barke von Aphroditopolis] | II 104 |
| šhm-šw.t | [Insassen des Sonnenschiffs] | I 49 |
| šjw | Haarflechten | I 27 |
| b3jw | Loch, Wasserloch | I 417 |
| p3jw | Bezeichnung für Geflügel | I 494 |
| sm3j.w | Bundesgenossen (Substantiv) | III 450 |
| h3j.w | Bezeichnung für Raubvögel | III 16 |
| k3jw | = k3j — hinkommen | V 7 |
| k3jw | landfremder Vagabund | V 7 |
| š3jw | Schlepper des Sonnenschiffs) | IV 354 |
| d3jw | Leinenstoff als Ballen | V 417 |
| d3j.w | Widersacher | V 517 |
| h3d3jw | [Denkmal] | III 237 |
| c3jw | [etwas Schlechtes] | I 169 |
| p3w3w | Holzwürmer | I 498 |
| šw3w | [Hund] | I 50 |
| šw3w | klagen | I 50 |

| | | |
|-------------|---------------------------------------|---------|
| njujw | [offizinell verwendete Pflanze] | II 203 |
| njujw | fröhlich sein | II 203 |
| nuej.w | [goldhaltige Flüsse] | II 221 |
| thaw.jw | Libyer | V 394 |
| hrujw | Streit | III 326 |
| huajw | Bezeichnung für Rinder | III 45 |
| nsu.jw | [Diener] | II 334 |
| dujw | [Krug aus Ton] | V 551 |
| duj.w | Zuruf | V 551 |
| h3bj.w | [sichelförmige Göttin] | III 362 |
| h3bj.w | Bezeichnung für Feinde | III 42 |
| nbjw | Schützer | II 245 |
| nbj.w | Ertrunkene (in Unterwelt) | II 236 |
| nbjw.t | Bezeichnung einer Göttin | II 244 |
| hrj-nbj.w | Obergoldschmied | II 241 |
| mr-nbj.w | Vorsteher der Goldschmiede | II 241 |
| hbj.w | [Götter, die Gemetzelt anrichten] | II 486 |
| stbj.w | Empörung | IV 88 |
| stbj.w | Halsband | IV 438 |
| dbj.w.t | [Teile der Wagendeichsel] | V 435 |
| wpjw | [Gott] | I 302 |
| hrpj.w | Ertrunkene in der Unterwelt | II 501 |
| hpjw | [göttliche Schlange in Heliopolis] | II 489 |
| hpjw | Dahingehen | III 259 |
| hpjw | [Göttin im Osirisgefolge] | III 259 |
| stspj.w | Verhaftete | IV 534 |
| htpj.w | Friedfertige | III 194 |
| fjw | sich ekeln | I 576 |
| mjw | ein solcher | II 38 |
| mjw | (unverständliches Wort im Zaubertext) | II 41 |
| mjw | Kater | II 42 |
| mjw | [Gerät aus Metall] | II 42 |
| mjw | Frisur | II 42 |
| nmj.w | Bezeichnung der Schiffe | II 265 |
| hmj.w | Übel | III 281 |
| hmj.w | böses Wesen | III 281 |
| h3f.t-hmj.w | [11. Stunde der Nacht] | III 281 |
| smj.w | [Barke der Götter] | IV 121 |
| smj.w | Schreien des Säuglings | IV 129 |
| smj.w | Segelleine | IV 130 |
| smj.w | Peitsche, Gerät zum Prügeln | IV 130 |
| smkj.w | [Wesen im Totenreich] | IV 318 |
| smj.w | schlechte Menschen | V 302 |
| hmj.w | [böse Wesen in Unterwelt] | III 198 |
| imj.w | Stadtgenossen | V 456 |
| sdmj.w | [die das Verhör Abhaltenden] | IV 388 |
| njw | Lufthauch | II 200 |
| njw | Strauß (Vogel) | II 202 |
| njw | [Topf] | II 202 |
| njw | [eine der 8 Urgottheiten] | II 202 |
| njw.t | = njj.t — [Haus] | II 200 |
| njw.t | [eine der 8 weiblichen Urgottheiten] | II 202 |
| hn-injw | [süße Speise] | II 492 |

| | | |
|--------------|--|---------|
| bnjw | Dattelsaft | I 402 |
| mnjw | Hirt | II 74 |
| mrjw | Hirtenzelt | II 75 |
| mnjw.t | Hafen | II 74 |
| hmnj.w | [8 Urgötter von Heropolis] | III 283 |
| nnjw | Bezeichnung eines Getränkes | II 276 |
| nnj.w | Müde | II 275 |
| wnnj.w | Menschen | I 310 |
| hnjw.t | Jublerin | II 492 |
| shnjw | Verweilen | IV 254 |
| enj.w | Dahingegangene | III 456 |
| knj.w | Weber | V 50 |
| knj.w | Tragsessel | V 51 |
| knj.w | Garben | V 52 |
| knj.w | Bezeichnung für Sumpfvögel | V 52 |
| knj.w | Bezeichnung für Örtlichkeit an Königstempel. | V 52 |
| knj.w | Verleumdung | V 132 |
| dnj.w | Anteil | V 406 |
| dnj.w.t | Geschrei | V 406 |
| idnjw | Matte | I 154 |
| dnj.w | [Gerät] | V 575 |
| irj.w | Bezeichnung für Kleider | I 105 |
| irj.w | Bezeichnung für Feinde | I 113 |
| nrjw | [Krankheit des Uterus] | II 279 |
| hrj.w | Bezeichnung der Sterne | III 142 |
| hrj.w | [esbares Geflügel] | III 142 |
| nd.t-hrj.w | [Göttin der 1. Nachtstunde] | III 142 |
| hrj.w | Truppen | III 323 |
| shrj.w | Bezeichnung der Feinde | III 258 |
| hrj.w | Bezeichnung der Menschen | III 392 |
| srjw | [Schlange] | IV 193 |
| nrj.w | [Priester des Re] | II 364 |
| nrj.w | Bezeichnung der Sterne | II 365 |
| ndrj.w | Bezeichnung des Jägers | II 365 |
| hwj | [Schlange als feindliches Wesen] | II 483 |
| hwj | [böses Tier] | II 484 |
| hwj.t | [den Toten bedrohendes Wesen] | II 484 |
| imj-hjw | halt! | I 77 |
| isjw.t | alte Kleider, Lumpen | I 128 |
| hsj.w | Selige | III 156 |
| sp.t-n-haj.w | [Nekropole von Theben] | IV 98 |
| sjw | jemandem einen Höheren melden | IV 34 |
| rsj.w | [Gewässer am Himmel] | IV 34 |
| sjw | Südbewohner | II 453 |
| wnsjw | prahlen | I 229 |
| sejw | Wolfshund | I 325 |
| sejw | [Schlechtes, das Cirkumpolarsterne nicht tun können] | III 485 |
| kjw | [Augenleiden] | V 17 |
| kjw | sich verneigen vor | V 110 |
| kjw | Affe | V 110 |
| mkj.w | [Soldaten] | II 161 |

| | | |
|-----------------------------------|---------------------------------|---------|
| gj.w | [wohlriechende Pflanze] | V 157 |
| igj.w | [gekenterte (Wesen im Armduat)] | I 140 |
| tjw | wahrlich | V 242 |
| tjw | [offizinell Verwendetes] | V 242 |
| tjw.t | = tw.t — Sandalen | V 242 |
| irj-tjw | zustimmen | V 242 |
| Bezeichnung eines Empörers | | I 2 |
| Beiwort von Sterngöttern | | IV 62 |
| [feines Leinen] | | III 35 |
| [feines Leinen] | | III 28 |
| Oasenbewohner | | I 348 |
| [kämpfende Götter] | | III 236 |
| [Götter] | | II 57 |
| Schlepper (von Sonnenschiff) | | IV 354 |
| Mitglieder eines Götterkollegiums | | V 530 |
| Widersacher | | V 519 |
| [strafende Götter (die Pfähler)] | | II 73 |
| Einer (Zahlbegriff) | | I 279 |
| Verbündete jemandes | | III 450 |
| Schmerzen beseitigen | | II 479 |
| = hwtj — [Berufsbezeichnung] | | II 479 |
| = h3j.t — Vorhalle | | II 479 |
| Vorfahren | | III 29 |
| Männer | | I 217 |
| Verwestes | | I 48 |
| [Gott] | | I 48 |
| Städter | | II 213 |
| Bezeichnung eines Fremdvolk | | III 373 |
| Schutzgötter | | III 246 |
| Ostbewohner | | I 31 |
| Osten | | I 31 |
| Hinrichtung | | III 257 |
| zwei Rippenstücke (Speise) | | IV 438 |
| [Personenbezeichnung] | | IV 438 |
| Koptos | | V 163 |
| [den Mond verehrendes Wesen] | | IV 537 |
| [Wesen am Himmel] | | V 206 |
| Opferbringende | | III 195 |
| Bezeichnung für Götter | | I 183 |
| Soldatenkind | | II 80 |
| [Krankheitserscheinung im Bauch] | | IV 455 |
| Kreta | | V 122 |
| [Seeschiffe] | | V 122 |
| Henker | | II 264 |
| [feindliche Wesen] | | II 271 |
| Ägypter | | V 128 |
| die, welche (pl.) | | II 355 |
| [Harz] | | I 206 |
| Westbewohner | | I 86 |
| Beiname des Totengottes | | I 86 |
| Befehlshaber | | III 122 |
| Anfang eines Landes | | III 306 |
| Stoff für Kleider | | III 308 |

| | | |
|----------|---|---------|
| psdntjw | Tag des Neumondes | I 559 |
| irtjw | [Frucht] | I 116 |
| irtjw | [blaue Farbe] | I 116 |
| irtjw | [blaues Leinenzeug] | I 116 |
| irtjw | [Erscheinung an eiternden Geschwulsten] | I 116 |
| irtjw | Trauer | I 116 |
| irtjw | paß auf! | I 116 |
| irtjw | [Fremdvolk] | I 116 |
| mspr.tjw | [Arbeiter] | II 144 |
| mr.tjw | [Gewässer bei Heliopolis] | II 98 |
| dr.tjw | Vorfahren | V 597 |
| mh.tj.w | Nordbewohner | II 126 |
| htjw | die hinter jemandem Befindlichen | III 344 |
| htjw | Tenne | III 349 |
| htjw | Getreide | III 349 |
| htjw | Größenverhältnisse eines Baues | III 349 |
| htjw | Terrasse mit Treppe | III 348 |
| h3-h3j.w | Zwergengland | I 18 |
| sh.tjw | [Nilgott] | IV 232 |
| sh.tjw | [Rinder] | IV 232 |
| mshtjw | [Haken bei Mundöffnung] | II 149 |
| mshtjw | [Sternbild des Großen Bären] | II 149 |
| stj.w | Nubier | III 488 |
| hba.tj.w | Bärtige (Puntier) | III 255 |
| ksa.tj.w | = ks.t — Nubier | V 134 |
| ta.tj.w | Bezeichnung der Feinde | V 409 |
| stj.w | Schützen | IV 327 |
| stj.w | Bezeichnung der Beduinen Asiens | IV 328 |
| m3d.tjw | [Gottheiten] | II 32 |
| h3d.jt.w | Barbaren | III 236 |
| m3stjw | Abkömmling (eines Gottes) | II 151 |
| m3stjw.t | [Hathor] | II 151 |
| ns.tjw | [Pflanze] | II 324 |
| nd3.tjw | [göttliche Wesen] | II 385 |
| stjw | Hinterteil des Ruder-schiffes | IV 556 |
| stjw | = stw — Schildkröte | IV 556 |
| stjw | (trans. Verbum, vom Körperteil, das jemanden quält) | IV 556 |
| stjw | [Teil des Körpers] | IV 556 |
| stjw | Bezeichnung des Totenreichs | IV 556 |
| stj.w | Kuchen | IV 556 |
| ktjw.t | Feuerstelle zum Kochen | V 145 |
| hntjw | Schlächter | III 122 |
| st.tjw | Asiaten | IV 348 |
| stjw | Verstümmelung | I 35 |
| stjw | [Götter] | III 444 |
| stj.w | Feinde | IV 520 |
| dj.w.t | Fünfhundert | V 420 |
| dj.w.t | Worflerin | V 421 |
| m3djw | Diener, die Speisen zutragen | II 35 |
| sw | [Kranich] | I 170 |
| sw | [Krankhaftes Verhalten des Herzens] | I 170 |

| | | |
|-----------------------|-------------------------------------|---------|
| 'w.t | [Szepter] | I 170 |
| 'w.t | Kleinvieh | I 170 |
| 'w.t | Sünde | I 171 |
| ir ^c w | an der Seite jemandes | I 170 |
| dmd ^c .w.t | [Osiris] | I 160 |
| }'w | Futteral für Schreibzeug | I 3 |
| }'w | [Teil eines Tempels] | I 3 |
| m}'w | Richtigkeit | II 23 |
| m}'w | Kostbarkeiten | II 23 |
| m}'w | Wind | II 23 |
| m}'w | Schiffsteil | II 25 |
| m}'w | [Holz] | II 25 |
| rdj-m}'w | richtige Leitung geben | II 23 |
| k}'w | Erbrochenes | V 8 |
| 'cw | schlafen (nur in Neg.) | I 169 |
| 'cw | [krankhaftes Verhalten des Herzens] | I 169 |
| nb-}'w | Beiname des Sonnengottes | I 3 |
| i}'w | mit Gips verschmieren | I 40 |
| w}'w | Alleinsein | I 277 |
| h}'w.t | Jubel | III 41 |
| nb.t-h}'w.t | Bezeichnung der Hathor | III 41 |
| m-h}'w.t | freudig | III 41 |
| šh}'w | [Kulthandlung] | IV 238 |
| h}'w | Stücke von etwas | III 364 |
| w}'w | Einsamkeit | I 277 |
| w}'w | [Offizier] | I 280 |
| w}'w | Einzigster | I 277 |
| hnp-ib-mr.f-w}'w | [stierköpfiger Gott] | III 290 |
| hmš-w}'w | unverheiratet sein | I 277 |
| iw}'w | Erbe | I 50 |
| iw}'w | Ring als Auszeichnung | I 51 |
| db}'w | Vorwurf | V 567 |
| db'.w.t | älterer Name der Stadt Buto | V 567 |
| hrj.db}'w | Getadelter | V 567 |
| p}'w | Peuer | I 503 |
| hp}'w | [Heilmittel, das gekaut wird] | III 366 |
| šm}'w | Oberägypten | IV 472 |
| šm}'w | Sänger | IV 478 |
| tj-šm}'w | Oberägypten | V 227 |
| iwnuw-šm}'w | Hermónthis (Verbum) | IV 473 |
| n}'w | [Schlange] | II 207 |
| n}'w | [etwas Unrechtes] | I 509 |
| pn}'w.t | [Ehrentitel für Beamte] | I 509 |
| wr-pn}'w | [krankhafter Zustand (Beine, Herz)] | III 112 |
| hn}'w | Kajüte | IV 504 |
| šn}'w | Polizisten | IV 506 |
| šn}'w | Hinderung | IV 506 |
| šn}'w | [eine Handlung (in Titeln)] | IV 506 |
| šn}'w | [offiziell verwendete Pflanze] | IV 506 |
| šn}'w | Wolken | IV 507 |
| šn}'w | Magazin | IV 507 |
| šn'.w.t | [Fron] | IV 506 |
| nn-šn}'w | ungehindert | IV 506 |
| mr-šn}'w | [Titel] | IV 506 |
| r}'w | [Gott im Amduat] | II 403 |
| kr}'w | Schild | V 59 |

| | | |
|--------------|--------------------------------------|---------|
| kr}'w | Schildhalter | V 59 |
| šw} | Stab | III 39 |
| h}'w | Flotte | III 39 |
| hšf.w-n-h}'w | [Augenkrankheit] | III 337 |
| tm-h}'w | [Osiris] | V 306 |
| dnš-h}'w | [heilige Schlange] | V 469 |
| šj-h}'w.f | sich zusammenreißen | IV 25 |
| h}'w | Standort | I 220 |
| h}'w | Denkstein | I 221 |
| h}'w | Nacken | I 222 |
| h}'w | Reiher | I 222 |
| h}'w | Bezeichnung heiliger Schlangen | I 222 |
| h}'w | Beistand | I 222 |
| h}'w | Hindernisse | I 222 |
| h}'w | Lebenszeit | I 222 |
| h}'w | Haufen, Fülle (von Speisen) | I 220 |
| h}'w | Aufgang der Gestirne | III 241 |
| h}'w | Kronen | III 241 |
| h}'w | Bezeichnung für Krokodil | III 242 |
| h}'w | [Strafart für Böse] | III 242 |
| h}'w | Geräte | III 243 |
| hb-n-h}'w | Krönungsfest | III 58 |
| n.t-h}'w | Bezeichnung der Hathor | I 190 |
| mfb-h}'w | malachitglänzend | II 58 |
| tj-h}'w | Waffenträger | III 243 |
| š'w.t | Kuchen | IV 421 |
| wšh-n-š}'w | [Halskragen] | IV 421 |
| wš'w | Jucken (als Krankheit) | I 370 |
| mš}'w | Reisende | II 156 |
| nš'w.t | Tracht der Sykomore (Substantiv) | II 343 |
| q}'w | V 536 | |
| q'.w.t | gedörrte Fische | V 535 |
| wd}'w | [offiziell Verwendetes] | I 407 |
| wd'.w.t | abgetrenntes Glied | I 407 |
| nd}'w | [Alterserscheinung] | II 377 |
| w | = w - Bezirk | I 289 |
| w | singen | I 289 |
| w | [Gottheit] | I 289 |
| w | [als Frauenbezeichnung] | I 289 |
| w.t | [Hathor] | I 289 |
| nb.t-w | Bezeichnung des Feldes | II 232 |
| iw | wehe! Wehgeschrei | I 48 |
| iw | [Fährmann am Himmel] | I 48 |
| šjw.w | Ankläger | IV 34 |
| šj.w-h}'w.w | hoch und niedrig | V 3 |
| mw.w | Tänzer beim Leichenbegängnis | II 53 |
| hmww | geschickt, kunstfertig | III 82 |
| hmww | Kunstfertiger | III 83 |
| hmww | Werkstatt | III 86 |
| hmww | Künste | III 86 |
| šmw.w | Sommerschiffe | IV 481 |
| nn.w.t | [weibliches Gegenstück zum Urwasser] | II 215 |
| sm}-nw.w | Bezeichnung der Überschwemmung | III 448 |
| mn-hr-nw.w | Ständer für Wasserspende | II 63 |
| hnk-nw.w | [Priester in Hermónthis] | III 118 |
| hnw.w | Gefäße | III 107 |
| rw | Gebiete | II 408 |

| | | |
|--------------|--|---------|
| mšw.t-hprw.w | Frühgeburt | III 266 |
| šrw | Farbe | V 601 |
| šrw | Rippengegend am Körper [Teil der Pyramide] | V 602 |
| šrw | Bezeichnung für kämpfende Stiere | III 45 |
| phww | Ende (des Landes) | I 538 |
| phww | nördliches Ende | I 538 |
| phww | Sumpfgbiet an Delta-küste | I 538 |
| hw | böse Handlungen | III 247 |
| hw | Fische | III 247 |
| hw.w | = šj.w - Fleischstücke | III 247 |
| šw.w | emporstehend (von Geschwulst) | IV 431 |
| šw.w | trockenes Land | IV 430 |
| šw.w | [Kraut] | IV 434 |
| šw.w | Bezeichnung von Göttern | I 475 |
| šw.w | Rufer (bei Arbeit) | II 180 |
| šw.w | Wesen | V 80 |
| m-hnw.du.w | inmitten der Berge | III 371 |
| wndw | Art | I 326 |
| wndw | Bezeichnung für Speisen | I 326 |
| bw | Ort | I 450 |
| bw | Stück (in Zählungen) | I 452 |
| bw | nicht | I 453 |
| bw.t | [Fisch] | I 453 |
| bw.t | Abseheu | I 453 |
| bw.t | [Leute bei Wüstenexpedition] | I 454 |
| kjj-bw | Ausland | I 452 |
| ist-bw | nicht wahr? | I 453 |
| šbw | Aufhören | I 6 |
| šbw | Elefant | I 7 |
| šbw | Elefantenzahn | I 7 |
| šbw | Elephantine | I 7 |
| šbw | [offiziell Verwendetes] | I 7 |
| šbw.t | Gestalt | I 8 |
| nn-šbw.f | ohne aufzuhören | I 6 |
| n-šbw | um zu | I 7 |
| rw-šbw | Löwe | II 403 |
| wšbw | Damm (Körperteil) | I 251 |
| šbw | Mahlzeit | IV 410 |
| šbw | [Fayanceschmuckstück] | IV 410 |
| šbw | [Titel] | IV 410 |
| šbw | (Substantiv) | IV 410 |
| šbw | [Art der Tötung] | IV 410 |
| šbw | [Angestellte] | V 154 |
| šbw.w.t | [Früchte] | V 522 |
| šbw | (Substantiv) | I 61 |
| šbw | [Pflanze] | I 62 |
| šbw | Zufluchtstätte (bildlich) | I 62 |
| šbw-ib.w | mutlos | IV 374 |
| šphr-ib.w | jemandem die Herzen zuwenden | IV 106 |
| 'bw | Schmutz | I 174 |
| 'bw | [Vogel] | I 175 |
| 'bw | Reinigung | I 175 |
| 'bw | Lattich | I 176 |
| 'bw | Kornaufhäufer | I 176 |
| 'bw.t | [Gabel als Szepter] | I 176 |
| 'bw.t.t | Beiname der Reichsgöttin von Oberägypten | I 174 |

| | | |
|--------------------|--|---------|
| m}'bw.f | eigenmächtig | I 175 |
| hr}'bw.f | eigenmächtig | I 175 |
| w}'bw | [Kleid für Götter] | I 283 |
| w}'bw.t | Fleischstücke (Koll.) | I 284 |
| h}'bw | [Gerät] | III 42 |
| šbbw | [Seil am Schiff] | I 63 |
| 'wbbw | [Fische] | I 172 |
| nb.w | Herr | II 272 |
| nb.w | Herren | II 231 |
| nb.w | alle | II 234 |
| nb.w | [offizinell verwendete Pflanze] | II 242 |
| nb.w | [hölzernes Gerät] | II 242 |
| nb.w.t | Bezeichnung der griechischen Inselwelt | II 227 |
| h}w-nb.w.t | Bewohner der griechischen Inselwelt | III 11 |
| wšd-wr-h}w-nb.w.t | Ägisches Meer | III 11 |
| dbn-phr-h}w-nb.w.t | Bezeichnung des Ägäischen Meeres | III 11 |
| šnbw | [Altstadt von Memphis] | I 95 |
| šnbw | Böses, Schmutz | I 95 |
| 'nnbw | [Vogel] | I 192 |
| hnbw | Schiff der Sonne | III 113 |
| hnbw | Bezeichnung der Sonnenstrahlen | III 113 |
| rbw | Libyen | II 414 |
| hbw | Zerstörung | II 486 |
| thb.w | Eindickung eines Heilmittels | V 321 |
| nbb.w | Abgabe von Rindern | II 293 |
| nbbw.t | Nackenswirbel | II 292 |
| nbbw.t | Lotussäule | II 294 |
| nbbw.t | [offizinell Verwendetes] | II 294 |
| hbw | [offizinell verwendete Pflanze] | III 251 |
| nbbw.t | [Göttin] | II 308 |
| ihbw | (Substantiv) | I 126 |
| šhb.w | Trankmittel | IV 269 |
| šsb.w | Rechnung | III 167 |
| šsb.w | Diener | III 168 |
| šsb.w | viereckige Felder, auf Boden zu zeichnen | III 167 |
| njs-hsb.w | rechnen | III 167 |
| šbw | reffen (Segel) | IV 439 |
| šbw | Nahrung | IV 437 |
| wšbw | Anwalt | I 372 |
| wšbw | (Substantiv) | I 372 |
| bjj-wšbw | [Arbeiter, die Grüfte aus-hauen] | I 372 |
| šb.w | Beliebtheit | V 24 |
| šb.w | [Pflanze] | V 25 |
| ššb.w | Abkühlung | IV 305 |
| gb.w | [Gebäude] | V 163 |
| šb.w | [Erzeugnis des Wadi Natrún] | V 261 |
| šb.w | Sohle | V 361 |
| šb.w | Sandalenmacher | V 363 |
| šb.w | = šb - [Gefäß] | V 364 |
| šbw.t | Sohle | V 361 |
| šbw.t | [Schiffsteil] | V 363 |
| hrj-tbw.t | Sandalenträger | III 380 |
| db.w | Holz des Bogens | V 434 |

| | | |
|-------------|--|---------|
| db.w | Ufer | II 434 |
| idbw | Bezeichnung eines Minerals | I 153 |
| idbw | [vom Munde] | I 153 |
| ndbw.t | Fundamente ganz (in Ortsbezeichnungen) | II 368 |
| hr-ndbw.t.f | (Substantiv) | II 368 |
| indbw | Einkünfte | V 553 |
| db.w | [Teil des Wagens] | V 553 |
| db.w | [Vogel] | IV 228 |
| shdb.w | dieser (pron. dem. masc. sg.) | I 505 |
| pw | wer? | I 506 |
| pw | Opferspeisen | I 506 |
| r3-pw | oder | II 396 |
| mj.t.t-pw | ebenfalls | II 40 |
| ep-pw | vielleicht | III 438 |
| nfr-pw | nicht | II 257 |
| sh-pw | Türhüter im Himmel | III 466 |
| nt-pw | es stimmt (in Rechnungen) | II 351 |
| qd-pw | das heißt . . . | V 625 |
| h3pw | [Teil des Tempels] | III 230 |
| k3p.w | Dach eines Hauses | V 104 |
| k3p.w | Bezeichnung eines Krankheitsdämons | V 105 |
| k3p.w | [Vogel] | V 105 |
| k3p.w | Vogelfänger | V 105 |
| k3p.w | Bezeichnung des Krokodils | V 105 |
| k3p.w | [9. Tag des Mondmonats] | V 105 |
| ipw | Abgaben, Steuern | I 67 |
| ipw | Aktenstücke | I 67 |
| ipw | [Getränk] | I 67 |
| ipw | Panopolis (Achmim) | I 69 |
| ipw | diese (pron. dem. pl.) | I 69 |
| šjp.w | Revision | IV 36 |
| pw | Durchschreiten | I 179 |
| wpw | außer | I 301 |
| wpw | Leichenöffner | I 302 |
| wpw | Richter (Götterbeiname) | I 302 |
| wpw.t | Untergebene | I 303 |
| wpw.t | Schar von Frauen bei Begrüßung | I 303 |
| wpw.t | Auftrag | I 303 |
| h3pw | seltene Aussprüche | III 260 |
| h3pw.t | Fremdartiges (Gedanken, Worte) | III 260 |
| npw | (Verbum von Gefäßen als krankhafter Zustand) | II 248 |
| inpw | Bezeichnung für Kind | I 96 |
| inpw | Anubis | I 96 |
| inpw.t | [Göttin] | I 96 |
| wt-inpw | [Totenpriester] | I 379 |
| wnpw | Sieg | I 319 |
| rnw | frisch (vom Wasser) | II 433 |
| rnw.t | Unterhalb jemandes | II 435 |
| rnw.t | Früchte und Pflanzen | II 435 |
| šnp.w | Wunden | IV 162 |
| rpw | = r3-pw — oder | II 414 |
| rpw | verwesen (von der Leiche) | II 414 |
| rpw.t | [Säufte] | II 414 |

| | | |
|-------------|---|---------|
| rpw.t | vornehme Frau | II 415 |
| mwo-irpw | Weihwasser | I 115 |
| hrpw | Bezeichnung für Ländereien | III 329 |
| hrpw | Schlägel (zum Einschlagen des Landespflockes) | III 326 |
| hrpw | Behörden | III 328 |
| hrpw.t | pflichtmäßige Lieferungen | III 329 |
| drpw | Speise | V 477 |
| hp.w | Erlasse | II 488 |
| šmn-hp.w | Gesetze erlassen | IV 133 |
| n3pw | früher Morgen | II 284 |
| ih3t-n3pw | Frühmahlzeit (Substantiv) | II 284 |
| šhp.w | rudern | IV 207 |
| qšr-hp.w.t | [Augenkrankheit] | III 68 |
| hpw | Bringer (von Vieh in Kästen) | III 259 |
| šhp.w | | IV 240 |
| šhp.w.t | Schwimmer an Harpune | IV 240 |
| hp.w | Figuren als Ornamente | III 365 |
| sp.w | [Krankheit] | III 439 |
| n3pw | Wunden | II 319 |
| ššpw | [Gott] | IV 534 |
| ššpw | Ader | IV 535 |
| htp.w | gutes Wetter | III 194 |
| štp.w | Auserlesenes | IV 338 |
| štpw | Last | I 24 |
| štpw.t | Last | I 24 |
| dp.w | Schiff | V 446 |
| dp.w | Steuerruder | V 447 |
| dp.w | [Teil des Mastbaumes] | V 447 |
| w3pw | Aufwärter | I 388 |
| nfw | Schiffer | II 251 |
| hrj-nfw | Oberbootsmann | II 251 |
| infw | Augenausfluß | I 96 |
| šnfw | [Kuchen] | III 291 |
| hrjfw.t | [Kuchen] | III 291 |
| krf.w | Falten des Gesichts | V 60 |
| šbj-krf.w | segeln | III 431 |
| šjfw | Ursprungsstellen (des Nordwindes) | III 273 |
| wšfw | Fauler | I 357 |
| hšfw | [Gott mit Wurfspieß] | III 333 |
| hšfw | stromauf fahren | III 337 |
| hšfw | [doppelter Schiffsteil] | III 338 |
| hšfw | Nähen | III 337 |
| hšfw | Türen des Himmels | III 337 |
| hšfw.t | [Schiffsteil] | III 338 |
| hšfw.t | Beutel für Weihrauch | III 338 |
| m-hšfw | Hände preisend entgegen-gestreckt | III 337 |
| qšf.w | [Gefäß] | V 609 |
| hmt-nw-qšfw | [ärztliche Behandlungsweise] | III 284 |
| šfw | anschwellen | IV 455 |
| šfw | [offiziell Verwendetes] | IV 456 |
| šfw.t | Schwellung | IV 455 |
| irj-šfw | [sündhafte Handlung] | IV 455 |
| tfw | [gute Eigenschaft] | V 299 |
| mw | Wasser | II 50 |
| mw | [Kleiderstoff] | II 53 |

| | | |
|------------|--|---------|
| mw.t | Bezeichnung einer Göttin (personifizierter Same) | II 53 |
| mw.t | Geier, Geiergöttin | II 53 |
| mw.t | Mutter | II 54 |
| mw.t | [Teil von Pflanzen] | II 55 |
| mw.t | Gewicht der Waage | II 55 |
| imj-mw | Wassertiere | I 74 |
| wj-mw.f | beidlich werden | II 52 |
| hrj.t-mw | Schiff | III 134 |
| hrj.w-mw | Schiffe | III 134 |
| inw-mw | Wasserträger | I 92 |
| hnp-mw | Wasser trinken | III 291 |
| š3-n-mw | Wasserschwall | IV 13 |
| šp.t-n-mw | Ufer | IV 100 |
| gp-n-mw | Wolkenbruch | V 165 |
| igp-n-mw | Wolkenbruch | I 140 |
| š3r-n-mw | Wassernot | IV 19 |
| šd3-n-mw | verborgenes Wasserloch | IV 371 |
| š3-n-mw | Brunnen | III 332 |
| wjn-mw | untreu werden | I 272 |
| hr-mw | jemandem ergeben sein | II 52 |
| h3j-hr-mw | jemandem ergeben sein | II 472 |
| ij-hr-mw | jemandem ergeben sein | II 52 |
| in3j-hr-mw | jemandem ergeben sein | III 374 |
| htp-hr-mw | jemandem ergeben sein | III 190 |
| wn-hr-mw | jemandem ergeben sein | II 52 |
| hnd-hr-mw | jemandem ergeben sein | III 313 |
| hr.t-mw | Vogelteich im Geflügelhof | III 134 |
| wšh-mw | Wasserspender | II 51 |
| dwš-mw.t.f | schakalsköpfiger Horus-ohn | V 429 |
| šmw | Glut | I 10 |
| šmw.t | Verfärbung | I 10 |
| šmw | [offiziell Verwendetes] | I 168 |
| šmw.t | [Feldpflanze] | I 168 |
| h3mw | Leiden (Substantiv) | II 481 |
| h3mw | Geflügelhöfe | II 481 |
| h3mw | Fischer | III 32 |
| irp-h3mw | [Weinsorte] | III 32 |
| h3mw | (Substantiv) | III 231 |
| š3mw | Länder durchziehen | IV 411 |
| š3mw | [großer Krug] | IV 411 |
| š3mw | schmutzige Wäsche | IV 411 |
| š3mw | [offiziell Verwendetes] | IV 411 |
| k3mw | Gärtner | V 106 |
| š3mw | (Substantiv) | V 233 |
| šbj-š3mw | lange leben | III 431 |
| šmw | Eier | IV 76 |
| šmw | [Wehgeschrei] | I 77 |
| šmw | [Schiff] | I 78 |
| šmw | = im3w — Zelt | I 78 |
| šmw | [offiziell Verwendetes] | I 186 |
| mšmw | [Tier] | I 186 |
| mšmw | in Einlegearbeit | IV 45 |
| mšmw | roh, ungekocht | II 55 |
| šmw | [Krankheit] | I 11 |
| nmw | Zwerg | II 267 |
| nmw.t | Vogelnetz | II 267 |
| wnmw | Fütterung (des Viehs) | I 321 |
| nmnmw | Schlafzustand | II 268 |
| hnmw | Geruch | III 293 |
| hnm.w | Rudel (Wild) | III 381 |

| | | |
|-----------------------|---|---------|
| hnm.w | Chnum | III 381 |
| h3h-nm.w | [heilige Barko im Gau von Elephantine] | III 203 |
| šnm.w | Speisung, Fütterung | IV 164 |
| hr-hpd-n-hnmw.t | [Pfeil] | III 271 |
| rmw | Weinen | II 417 |
| rmw | Weinender | II 417 |
| šsp-rmw | beidlich werden | II 417 |
| wh ^c -rm.w | Fischer | I 350 |
| hrmw | Geflügelhof | II 501 |
| whmw | Sprecher (als Titel) | I 344 |
| whmw | Bezeichnung des Himmels | I 345 |
| hmw | Steuerruder | III 80 |
| hmw | [Getreide] | III 82 |
| hmw | vierzig | III 82 |
| hmw | herstellen | III 82 |
| hm.w | [Krankheit] | III 80 |
| hm.w | [Körperteil eines Hundes] | III 81 |
| hm.w | [Pflanze] | III 81 |
| hmw.t | [offiziell Verwendetes] | III 81 |
| hmw.t | Kunstfertigkeit | III 84 |
| hmw.t | Künstlerschaft | III 85 |
| irj-hmw | steuern | III 81 |
| irj-hmw | Steuermann | I 104 |
| wr-hrp-hmw.t | [Titel des Hohenpriesters von Memphis] | I 329 |
| n3mw | Retter | II 297 |
| h3mw | Staub | III 277 |
| h3mw | Götterbilder | III 280 |
| š3hm.w | [Fledermaus] | IV 24 |
| ihmw | Bezeichnung der Feinde Ägyptens | III 280 |
| šhmw | Machtwesen | IV 245 |
| h3mw | Blätter einer Pflanze | I 226 |
| h.t-hmw | Örtlichkeit am Himmel | I 226 |
| wsmw | [Körperteil des Menschen] | I 357 |
| šsm.w | [Gott der Wein- und Ölpressen] | IV 537 |
| šm.w | Kraut | IV 119 |
| mšm.w | Landbezeichnung | II 144 |
| šsm.w | Bild | IV 546 |
| šsm.w.t | Entzündung | IV 545 |
| šmw | Sommer | IV 480 |
| šmw | Ernte | IV 481 |
| šmw | [Fremdland im Süden] | IV 481 |
| šm.w | Gang | IV 465 |
| šm.w | Hitze | IV 469 |
| ššn-n-šmw | Sommerlotus | III 486 |
| ht-n-šmw | Brennholz | IV 469 |
| nšmw.š | Fischschuppen | II 340 |
| šsm.w | Begleitung | IV 287 |
| šsm.w | Führer | IV 288 |
| šsm.w | [Beischrift zum Sämann vor den Widdern] | IV 289 |
| šsm.w | Kultbild | IV 281 |
| šsmw.t | [Uräusschlange] | IV 289 |
| ikmw | Traurigkeit | I 136 |
| kmw | [offiziell Verwendetes] | V 130 |
| gm.w | Schwäche | V 169 |
| tm.w | Menschheit | V 305 |
| t3-tm.w | alle Menschen | V 304 |
| šmw | Gott Atum | I 144 |

| | | |
|-----------------------------------|-------------------------------------|---------|
| <i>itmw</i> | Atemnot | I 144 |
| <i>pr-itmw</i> | Pithom | I 144 |
| <i>hbmw.t</i> | [weibliche göttliche Person] | III 198 |
| <i>štm.w</i> | Vernichter | IV 224 |
| <i>dm.w.t</i> | Verletzung | V 451 |
| <i>hdmw</i> | Fußschmel | II 505 |
| <i>šdm.w</i> | Schminkmittel | IV 370 |
| <i>nw</i> | [Topf] | II 213 |
| <i>-nw</i> | (masc. des Ordinalbildungssuffixes) | II 213 |
| <i>nw</i> | (Pl. des Genetivwortes) | II 213 |
| <i>nw</i> | dieses (pron. dem. pl.) | II 216 |
| <i>nw</i> | Wüste | II 217 |
| <i>nw</i> | [Geste der Begrüßung] | II 217 |
| <i>nw</i> | schwach | II 217 |
| <i>nw</i> | Unrecht | II 217 |
| <i>nw</i> | [Vogel] | II 217 |
| <i>nw</i> | [Wohlriechendes aus Punt] | II 218 |
| <i>nw</i> | sehen | II 218 |
| <i>nw</i> | Blick | II 218 |
| <i>nw</i> | [Göttin] | II 218 |
| <i>nw</i> | Jäger | II 218 |
| <i>nw</i> | Zeit | II 219 |
| <i>nw</i> | Zeit verbringen | II 219 |
| <i>nw</i> | (vom Zustand des Mundes im Alter) | II 220 |
| <i>nw</i> | umhüllen | II 220 |
| <i>nw</i> | zurückkehren | II 220 |
| <i>nw.t</i> | Dorf, Stadt | II 210 |
| <i>nw.t</i> | Theben | II 211 |
| <i>nw.t</i> | Stadt (als Gottheit) | II 212 |
| <i>nw.t</i> | unterer Himmel (als Göttin) | II 213 |
| <i>nw.t</i> | (fem. des Ordinalbildungssuffixes) | II 213 |
| <i>nw.t</i> | Nut | II 214 |
| <i>nw.t</i> | Himmel | II 214 |
| <i>nw.t</i> | Schriftzeichen (Dächsel) | II 215 |
| <i>nw.t</i> | Dächsel | II 216 |
| <i>nw.t</i> | Garn | II 217 |
| <i>nw.t</i> | [Gewebe] | II 217 |
| <i>nw.t</i> | = <i>nwd.t</i> -- Windel | II 217 |
| <i>nw.t</i> | Bund für Flachs | II 217 |
| <i>nw.t</i> | Mistkugel des Skarabäus | II 217 |
| <i>nw.t</i> | [Holz] | II 217 |
| <i>nw.t</i> | Zeit | II 220 |
| <i>nw.t.t</i> | [Göttin im Amduat] | II 213 |
| <i>ih-nw</i> | [Rind] | II 218 |
| <i>irj-nw</i> | Zeit verbringen | II 219 |
| <i>thj-nw</i> | Zeit verpassen | II 219 |
| <i>sj-nw</i> | wann? | III 425 |
| <i>pr-nw</i> | [Reichsheiligtum von Buto] | I 517 |
| <i>hkj-nw.t</i> | Dorfschulze | II 212 |
| <i>w^r.tw-šj-n-nw.t</i> | Bezirksvorsteher | I 288 |
| <i>n^h-n-nw.t</i> | Bürger | I 200 |
| <i>n^h.t-n-nw.t</i> | Städterin | I 201 |
| <i>hn-n-nw.t</i> | Aufgangsort der Sonne | II 492 |
| <i>hb-šd-nw.t</i> | [28. Tag des Monats] | III 60 |
| <i>h^s.t-nw.t</i> | [Art des Spinnens] | III 159 |

| | | |
|--------------------------|--|---------|
| <i>m}nw</i> | Westgebirge | II 29 |
| <i>prw-m}nw</i> | [Deltastadt] | II 29 |
| <i>h}nw</i> | Welle | II 481 |
| <i>irj-h}nw</i> | fluten | II 481 |
| <i>k}n.w</i> | Garten | V 107 |
| <i>q}n.w</i> | junge Leute | V 524 |
| <i>inw</i> | Gaben | I 91 |
| <i>inw</i> | Bote | I 91 |
| <i>inw</i> | [Gerät zum Ziegelstreichen] | I 92 |
| <i>inw</i> | Beispiel | I 92 |
| <i>inw</i> | [etwas Süßes] | I 95 |
| <i>inw.t</i> | Schiffsladung | I 92 |
| <i>inw.t</i> | Fähre | I 92 |
| <i>inw.t</i> | körperlicher Schmerz | I 93 |
| <i>hbj-inw</i> | Gaben sammeln | III 252 |
| <i>hjn.w</i> | böse Taten | I 444 |
| <i>wr-bjn.w.f</i> | [heilige Schlange im XI. Gau von Unterägypten] | I 444 |
| <i>m}nw</i> | (Beischrift zu Beuteln) | II 44 |
| <i>m}nw</i> | [Halbedelstein] | II 44 |
| <i>m}nw</i> | Hirt | II 74 |
| <i>m}nw.t</i> | Haufen | II 74 |
| <i>šjn.w</i> | Eilbote | IV 39 |
| <i>šnw</i> | [Steine] | I 189 |
| <i>šnw</i> | Zierrat (eines Gefäßes) | I 189 |
| <i>š^h.šnw</i> | abgewendet dastehen | I 188 |
| <i>š^h.nw</i> | Kummer | I 41 |
| <i>wnw</i> | Pförtner | I 312 |
| <i>wnw</i> | Kind (im Mutterleib) | I 315 |
| <i>wnw</i> | Nachtruhe | I 315 |
| <i>wnw</i> | Sehen | I 315 |
| <i>wnw</i> | Hermopolis | I 315 |
| <i>wnw</i> | [Gewässer im Delta] | I 315 |
| <i>wnw</i> | Gefäße (für Bier) | I 315 |
| <i>wnw.t</i> | Stunde | I 316 |
| <i>wnw.t</i> | Dienstleistung | I 317 |
| <i>wnw.t</i> | Bezeichnung der Uräusschlange | I 317 |
| <i>m-tj-wnw.t</i> | jetzt | I 316 |
| <i>imj-wnw.t</i> | Stundenbeobachter | I 316 |
| <i>m-wnw.t</i> | zeitweise | I 316 |
| <i>inw</i> | Beiname des Sonnengottes | I 52 |
| <i>inw</i> | Heliopolis | I 54 |
| <i>inw</i> | [Stab] | I 55 |
| <i>rpw.t-inw.t</i> | [Göttin] | II 415 |
| <i>h}p.t-šw.t-m-inw</i> | [4. Stunde der Nacht] | III 31 |
| <i>šwnw</i> | Betrüger | I 172 |
| <i>pr-m-nomw</i> | [Lotus] | I 528 |
| <i>wnwn.w</i> | Astronom | I 318 |
| <i>wnwn.w.t</i> | Name der Schlange | I 318 |
| <i>hwn.w</i> | junge Krokodile | III 53 |
| <i>šwnw</i> | [Gefäß] | III 427 |
| <i>šwnw</i> | Arzt | III 427 |
| <i>šwnw</i> | leiden | III 428 |
| <i>šwn.w</i> | Festung | IV 69 |
| <i>šwn.w</i> | Syene | IV 69 |
| <i>šwn.w</i> | [Gewässer] | IV 69 |
| <i>šwn.w</i> | (Verbun) | IV 69 |
| <i>šwn.w</i> | Kampfstier | V 359 |
| <i>šwn.w</i> | Unterschied | V 360 |
| <i>šwn.w</i> | [Gewässer in Oberägypten] | V 360 |
| <i>bnw</i> | Phönix | I 458 |

| | | |
|--------------------|--|---------|
| <i>bnw</i> | Pavian | I 458 |
| <i>bnw</i> | [Krankheit] | I 458 |
| <i>bnw</i> | Müller | I 458 |
| <i>bnw</i> | [Körperteil] | I 459 |
| <i>bnw.t</i> | Entzündung | I 458 |
| <i>bnw.t</i> | [harter Stein] | I 458 |
| <i>bnw.t</i> | [von geilen Tieren, die sich beriechen] | I 459 |
| <i>bnw.t</i> | Bezeichnung des Seth | I 459 |
| <i>ibnw</i> | [Mineral (Alaun)] | I 63 |
| <i>wbnw</i> | Strahlen der Sonne | I 294 |
| <i>wbnw</i> | Osten | I 294 |
| <i>wbnw</i> | Schwanzende (des Stiers) | I 294 |
| <i>wbnw</i> | Wunde | I 294 |
| <i>hbnw</i> | Hauptstadt des XVI. Gaus von Oberägypten | III 63 |
| <i>šbn.w</i> | [Fisch] | IV 89 |
| <i>m-šbn.w</i> | verschiedener Art | IV 441 |
| <i>dbn.w</i> | Kreis, Umkreis | V 436 |
| <i>šbn.w</i> | [Antilope] | V 568 |
| <i>pnw</i> | Maus | I 508 |
| <i>št-pnw</i> | [Pflanze] | I 136 |
| <i>šd-pnw</i> | [Pflanze („Mäuse-schwanz“)] | I 508 |
| <i>hpnw</i> | [Schlange] | II 489 |
| <i>fnfnw</i> | Lohn | I 576 |
| <i>hfn.w</i> | Hunderttausende | III 74 |
| <i>hfn.w</i> | Bezeichnung für Schlangen | III 74 |
| <i>šfn.w</i> | ärgerlich | IV 115 |
| <i>šfn.w</i> | [Kleines Wüstentier] | V 206 |
| <i>hfn.w</i> | [Berufsbezeichnung] | V 33 |
| <i>mnw</i> | Leiden | II 67 |
| <i>mnw</i> | Aufenthalt | II 69 |
| <i>mnw</i> | Denkmal | II 69 |
| <i>mnw</i> | Statue | II 71 |
| <i>mnw</i> | Obelisk | II 71 |
| <i>mnw</i> | Bäume | II 71 |
| <i>mnw</i> | Bezeichnung einer wohlriechenden Pflanze | II 71 |
| <i>mnw</i> | [Gewässer mit Wasser-pflanzen] | II 72 |
| <i>mnw</i> | Keule | II 72 |
| <i>mnw</i> | [kostbarer Stein] | II 72 |
| <i>mnw</i> | = <i>mnw</i> -- Festung | II 72 |
| <i>mnw</i> | Faden | II 72 |
| <i>mnw</i> | [Schiff] | II 72 |
| <i>mnw</i> | Gott Min | II 72 |
| <i>mn.w</i> | Kohlenfeuer | II 69 |
| <i>mnw.t</i> | = <i>mn^s</i> -- Taube | II 79 |
| <i>imnw</i> | Bezeichnung des spukenden Toten | I 84 |
| <i>imnw</i> | [Gott] | I 85 |
| <i>imnw</i> | sich Behauptender (Kampfstier) | I 85 |
| <i>rmnw.t</i> | gleicher Rang | II 420 |
| <i>hmnw</i> | Hermopolis | III 283 |
| <i>hmn.w</i> | acht | III 282 |
| <i>rj-hmn.w</i> | Achtelkornmaß | III 282 |
| <i>šmn.w</i> | Bezeichnung des Sonnengottes | III 163 |
| <i>šmn.w</i> | [Mahlzeit] | III 163 |
| <i>šmn.w</i> | Holme der Leiter | IV 135 |
| <i>šmn.w</i> | Stützen (des Himmels) | IV 135 |
| <i>šmn.w</i> | [Personenbezeichnung] | V 131 |
| <i>nnw</i> | Wasser | II 215 |
| <i>nn.w</i> | = <i>nn.w</i> -- Urwasser | II 274 |
| <i>nn.w</i> | Müdigkeit | II 275 |
| <i>nn.w.t</i> | [Personenbezeichnung] | II 276 |
| <i>nn.w.t</i> | (Substantiv, ein Zustand) | II 275 |
| <i>šnnw</i> | [Fruchtbaum] | I 192 |
| <i>hbnw.t</i> | [Brot] | III 63 |
| <i>hfnw.t</i> | [Früchte] | III 273 |
| <i>mnw</i> | Festung | II 82 |
| <i>šmnw</i> | [Gott] | III 453 |
| <i>rnw.t</i> | Jubel | II 435 |
| <i>rnn.t-rnw.t</i> | Bezeichnung des Welterschöpfers | II 437 |
| <i>hnnw</i> | Störung | III 383 |
| <i>hnn.w</i> | Störenfried | III 383 |
| <i>hnn.w</i> | [offiziell Verwendetes] | III 384 |
| <i>hnn.w</i> | [Gott] | III 384 |
| <i>šnn.w</i> | kaufen | III 461 |
| <i>šnnw</i> | [wohlriechende Pflanze] | IV 157 |
| <i>šn.w</i> | Zweiter | IV 149 |
| <i>šn.w</i> | zweitrangig | IV 150 |
| <i>šn.w</i> | zweiter sein | IV 150 |
| <i>šnn.w.t</i> | Verehrung | IV 166 |
| <i>sp-šn.w</i> | Missetat | IV 150 |
| <i>mšpr-šn.w</i> | [16. Tag] | II 144 |
| <i>gnw</i> | Fett zwischen Eingeweiden | V 176 |
| <i>tnw</i> | [Gewässer] | V 313 |
| <i>rnw</i> | = <i>rnn</i> -- junger Mann | II 429 |
| <i>rnw.t</i> | mutterloses Mädchen | II 429 |
| <i>hnw</i> | [Topf] | II 493 |
| <i>hnw</i> | Hohlmaß von 0,45 l. | |
| <i>hnw</i> | „Hin.“ | II 493 |
| <i>hnw</i> | jubeln | II 493 |
| <i>hnw</i> | Jubel | II 493 |
| <i>hnw</i> | [Gewässer im XIII. Gau von Oberägypten] | II 493 |
| <i>hnw</i> | = <i>h}nw</i> -- Wellen | II 493 |
| <i>hnw</i> | Anhänger jemandes | II 494 |
| <i>hnw.t</i> | [Schlange eines Gottes] | II 494 |
| <i>ikdw-hnw</i> | Töpfer | II 493 |
| <i>ih-hnw</i> | Jauchzen | I 118 |
| <i>rj-hnw</i> | Wadi Hammamat | II 398 |
| <i>hnhnw</i> | [Gewässer im Jenseits] | II 496 |
| <i>hnhnw</i> | [Barke] | II 496 |
| <i>rhnw</i> | [Krankheitserscheinung] | II 440 |
| <i>hnw</i> | [schlechte Eigenschaft] | III 104 |
| <i>hnw</i> | Topf | III 107 |
| <i>hnw</i> | Barke des Soker | III 109 |
| <i>hnw</i> | Bezeichnung eines Heiligtums | III 110 |
| <i>hn.w</i> | Aufkommen des Windes | III 103 |
| <i>hnw.t</i> | [Gefäß für Bier und Wein] | III 106 |
| <i>hnw.t</i> | Herrin | III 107 |
| <i>hnw.t</i> | Sargkasten | III 109 |
| <i>hnw.t</i> | Horn | III 109 |
| <i>hnw.t</i> | Deiche | III 110 |
| <i>hnw.t</i> | [Krankheit] | III 110 |
| <i>hnw.t</i> | [offiziell Verwendetes] | III 110 |
| <i>šhnw</i> | zurücktreiben | IV 219 |

| | | |
|------------|---|---------|
| šhn.w | Verpachtung | IV 217 |
| šhn.w | Libyen | V 394 |
| šhn.w | [Gott] | III 286 |
| šhn.w | Musikant (beim Darbringen des Sistrums) | III 286 |
| šhn.w | [18. Tag des Monats] | III 286 |
| šhn.w | Sackträger | III 286 |
| šhn.w | = nšn — Kind | III 286 |
| šhn.w | Ruheplatz (Bezeichnung für Bauten) | III 288 |
| šhn.w | Musikantin (beim Darbringen des Sistrums) | III 286 |
| nšn.w | Brut der Rnn.w.t.t | II 312 |
| nšn.w | Kindheit | II 312 |
| nšn.w | [Brote] | II 312 |
| špr-nšn.w | als Kind aufwachsen | II 311 |
| šhn.w | Suchen | III 470 |
| m-šhn.w | in Gesellschaft von . . . | III 470 |
| šhn.w | Genosse | IV 254 |
| šhn.w | [Gott] | IV 254 |
| šhn.w | Inneres | III 368 |
| šhn.w | Wohnort | III 369 |
| šhn.w | Gewässer | III 373 |
| šhn.w | Ruderer | III 375 |
| šhn.w | Speisen | III 373 |
| wj-t-šhn.w | Innenseite | III 369 |
| rj-t-šhn.w | Innenseite | III 369 |
| m-šhn.w | im Inneren von | III 370 |
| r-šhn.w | hinein | III 372 |
| pj-šhn.w | [Kanal von Edfu] | III 373 |
| wn-šhn.w | leuchten | I 313 |
| šnw | [Gutes] | I 129 |
| šnw.t | [Böses] | I 129 |
| šnw | sich trennen von jemandem | IV 157 |
| šnw | Bedürftigkeit | IV 157 |
| šnw | sehend machen | IV 157 |
| šnw | [wohlriechende Pflanze] | IV 157 |
| šnw | Lotusszepter | IV 157 |
| šn.w | Geschwister | IV 151 |
| šn.w | [Krug] | IV 155 |
| šn.w | [Weinsorte] | IV 155 |
| šn.w | Opferbrote | IV 155 |
| šn.w | Gabe (vom Felde) | IV 155 |
| šn.w | Zunge | IV 155 |
| šnw.t | Geschwister | IV 152 |
| šn.w.t | [Palast] | IV 152 |
| šn.w.t | Schlangensteine | IV 153 |
| šn.w.t | [Fest des 6. Tages des Monats] | IV 153 |
| šn.w.t | Bezeichnung für Ägypten | IV 153 |
| šnw.t.t | [kriechende Pflanze] | IV 157 |
| kbb-šnw.f | [falkenköpfiger Horussohn] | V 31 |
| pj-s-šnw | die zwei Parteien | III 405 |
| s.t-šnw | Isis und Nephtys | III 406 |
| mšnw | Harpunierer, Harpunen-jäger | II 145 |
| šsn.w | Sperling | V 69 |
| šnw | Strick | IV 509 |
| šnw | Netz | IV 509 |
| šnw | Gabe | IV 509 |
| šnw | Leute | IV 512 |

| | | |
|--------------|--|---------|
| šn.w | Umkreis | IV 491 |
| šn.w | Krankheit | IV 495 |
| šn.w | amtliche Meldung | IV 496 |
| šn.w | Beschwörer | IV 496 |
| šn.w | Gras (Rinderfutter) | IV 502 |
| šnw.t | Scheune | IV 510 |
| šnw.t | Hofstaat | IV 511 |
| mr-šnw | Bezeichnung nubischer Vornehmer | IV 509 |
| šwtj-hbn-šnw | unbestechlich | IV 509 |
| šrj-šn.w | Akten durchsehen | IV 499 |
| ršnw | = ršw.t — Freude | II 455 |
| ršnw | = nšn — Wut | II 455 |
| ššn.w | [Seile am Schiff] | IV 293 |
| ššn.w | Fische | IV 294 |
| šn.w | viele | V 46 |
| šn.w | die Vielen | V 47 |
| šn.w | Gespann | V 47 |
| šn.w | Bezeichnung für unfruchtbare Ackerstelle | V 48 |
| šh.w.t-šn.w | Ehrung | V 43 |
| mdu-šn.w | Ehrung | V 43 |
| šrp-šn.w | Reiterei, Streitroß | III 329 |
| šknw | [Gewässer bei Mendes] | I 235 |
| šknw | Hacke | I 140 |
| nkn.w | [Gott im Amduat] | II 347 |
| šknw | Lobpreis | III 179 |
| šknw | [eines der 7 heiligen Öle] | III 180 |
| škn.w | [offiziell Verwendetes] | III 180 |
| škn.w | [Gott] | III 180 |
| škn.w.t.t | [göttliche Schlange] | III 180 |
| wšj-šknw | preisen | I 369 |
| šwš-šknw | Hymnen anstimmen | IV 64 |
| škn.w | Menschenopfer (beim Kult) | V 335 |
| šn.w | Zweige | V 174 |
| šn.w | [Vogel] | V 174 |
| šn.w | Ständer für kleine Schalen | V 174 |
| šn.w | [Gewässer] | V 174 |
| šn.w.t | Annalen | V 173 |
| tn.w | Korb | V 310 |
| šnw | Widersacher | I 145 |
| šnw | Schwierigkeiten (in Büchern) | I 146 |
| šnw | [Gott] | I 146 |
| šnw | Asche | I 146 |
| šnw | Loch (einer Schlange) | I 146 |
| wš-šnw | schwierige Stellen erklären | I 146 |
| wtnw | [Wesen am Himmel] | I 381 |
| štnw | sich widersetzen | I 179 |
| mtnw | Erzeugnisse (des Landes) | II 170 |
| mtnw | beschriften | II 170 |
| mtnw.t | Belohnung | II 170 |
| šmt.nw | Dritter | III 284 |
| šmt.nw | [dritter Monat einer Jahreszeit] | III 284 |
| šmt.nw | Gehilfe jemandes | III 284 |
| šnw | Erhabenheit | V 375 |
| šnw | zählen | V 376 |
| šnw | Zahl | V 376 |
| šnw | jedesmal, wenn | V 377 |
| šnw.t | Zählung | V 378 |
| šnw.t | Bezeichnung für Rinder | V 379 |
| šnw.t | [Fest] | V 378 |

| | | |
|-----------|---------------------------------------|---------|
| šsb-šnw.t | zählen, berechnen | V 379 |
| štnw | Frevler | I 486 |
| štnw | Bedrängnis | I 486 |
| štnw | Palästina und Syrien | II 460 |
| štn.w | [weiße Krone] | IV 359 |
| štn.w | Gekrönter | IV 359 |
| štn.w | [krankhafter Zustand] | IV 359 |
| šnw | Weihgeschenk | V 464 |
| šnw | Flicken (aus Stein) | V 464 |
| šnw.t | Familie | V 464 |
| šnw | Vertreter | I 154 |
| šnw | Last | I 390 |
| šnw | Gewicht an der Lotschnur | I 390 |
| šnw | Opferer | I 392 |
| ms-wšnw | Opferbringer | II 135 |
| šnw | [Schriftstück] | I 583 |
| šnw | vierter | I 583 |
| šnw.t | [Göttin] | II 506 |
| šnw | Tenne | V 575 |
| šnw | [Gans] | V 575 |
| šnw | [Pflanze] | V 575 |
| šnw | Flut | I 409 |
| šnw | [Teil des Himmels] | II 403 |
| šnw | Löwe | II 403 |
| šnw | [Stoff] | II 403 |
| šnw | Scheintür | II 403 |
| šnw | Tor | II 404 |
| šnw | = rj.t — Gericht | II 404 |
| šnw | Außen | II 404 |
| šnw | Tanz | II 407 |
| šnw | Löwe | V 342 |
| šnw | draußen | II 404 |
| šnw | hinaus | II 405 |
| šnw | außen vor . . . | II 405 |
| šnw | Binse | I 32 |
| šnw | [Gott des Binsengefeldes] | I 32 |
| šnw | Binsengefelde | I 32 |
| šnw | Binsensee | I 32 |
| šnw | [Armband] | I 252 |
| šnw | Lusthaus | II 30 |
| šnw | Gasse | III 232 |
| šnw | Syrien | III 232 |
| pj-šnw | Bezeichnung des Mittelmeeres | III 232 |
| šnw | Fesseln | III 422 |
| šnw | Wünsche erfüllen | IV 19 |
| šnw | [Augenkrankheit] | IV 411 |
| šnw | [ägyptische Grenzfestung gegen Asien] | V 355 |
| šnw | betragen (an Zahl) | I 111 |
| šnw | Verfertiger (Berufsbezeichnung) | I 113 |
| šnw | jemandes Pflicht | I 113 |
| šnw | Geschöpf | I 113 |
| šnw | Abgaberinder | I 114 |
| šnw | [Speise] | I 115 |
| šnw | Bez. für Frauen | I 114 |
| šnw | [Teil des Schiffes] | I 114 |
| šnw | Zeremonien vollziehen | I 113 |
| šnw | Viehsteuer entrichten | I 114 |
| šnw | mit dem Wesen (des N. N.) ausstatten | I 180 |
| šnw | Zeremonien vollziehen | III 379 |

| | | |
|-----|----------------------------------|---------|
| šnw | [heilige Schlange] | V 614 |
| šnw | [10. Tagesstunde] | IV 332 |
| šnw | [Gott] | I 114 |
| šnw | [Baum] | I 210 |
| šnw | Tor (Bauteil) | I 210 |
| šnw | [Krankheitserscheinung] | I 210 |
| šnw | in der Nähe | I 41 |
| šnw | Übereilung | I 287 |
| šnw | [Vogel] | II 209 |
| šnw | Teich | I 332 |
| šnw | [Fährmann am Himmel] | II 223 |
| šnw | sich an etwas freuen | V 387 |
| šnw | arm sein | III 55 |
| šnw | übel reden | III 56 |
| šnw | Schwacher | III 55 |
| šnw | [offiziell Verwendetes] | III 56 |
| šnw | Schlechtigkeit | III 56 |
| šnw | Schlechtigkeit | III 56 |
| šnw | Vorwurf | III 56 |
| šnw | [Vogel] | III 429 |
| šnw | Aufstieg, Herausgehen | I 526 |
| šnw | Lieferungen | I 526 |
| šnw | Überschuß | I 526 |
| šnw | Ackerboden nach Überschwemmung | I 527 |
| šnw | [Getränk] | I 531 |
| šnw | Fesseln | I 531 |
| šnw | Tempel | V 199 |
| šnw | Ausrüstung | I 181 |
| šnw | Schmucksachen | I 181 |
| šnw | [21. Tag des Monats] | I 181 |
| šnw | [Ackerland im Gau von Theben] | III 267 |
| šnw | jetzt Lebende | III 265 |
| šnw | Entstandenes | III 265 |
| šnw | [8. Stunde des Tages] | III 267 |
| šnw | Gestalt annehmen, sich verändern | III 266 |
| šnw | [11. Stunde des Tages] | II 244 |
| šnw | [11. Stunde der Nacht] | IV 160 |
| šnw | Geschöpfe | IV 242 |
| šnw | Bitte | IV 104 |
| šnw | Bittsteller | IV 104 |
| šnw | Angreifer | IV 104 |
| šnw | Bitten anhören | IV 104 |
| šnw | beten | IV 104 |
| šnw | Bitten erfüllen | IV 104 |
| šnw | bitten | IV 104 |
| šnw | (Substantiv) | IV 445 |
| šnw | Jünglinge | II 258 |
| šnw | Schätze | II 259 |
| šnw | Basis eines Bauwerks | II 260 |
| šnw | Fehlbetrag | II 263 |
| šnw | Wohltaten | II 259 |
| šnw | junge Mannschaft | II 258 |
| šnw | jemanden preisen | II 260 |
| šnw | Jungmannschaft des Heeres | III 52 |
| šnw | [Baum] | II 420 |
| šnw | Beiname des Osiris | I 311 |
| šnw | preisen | I 383 |
| šnw | Bezeichnung für heiliges Schiff | I 383 |

| | | |
|-----------------------------|--|---------|
| knh.w | Finsternis | V 133 |
| knhw | [24. Tag des Mondmonats] | V 133 |
| rh.w | Leute | II 441 |
| mrhw | [Gott in Stiergestalt] | II 112 |
| hhw | [Urgottheit] | III 152 |
| hhw.t | [weibliche Urgottheit] | |
| | vgl. hwhw — Flut | III 152 |
| thhw.t | Jauchzen | V 395 |
| hnm-thhw.t | voll Freude sein | V 395 |
| šhw | Dreck | IV 211 |
| šhw | Vorrat | IV 212 |
| šhw | = ikhw — Beil | I 22 |
| ikhw | Beil | I 138 |
| khkh.w | [im Steinbruch Tätige] | V 67 |
| gh.w | [Krankheit] | V 190 |
| thw | sich freuen | V 389 |
| thw | Freude | V 389 |
| mr-w ⁶ r.t-n-thw | [Titel] | V 389 |
| idhw | Sumpfgbiet des Deltas | I 155 |
| wdhw | Spende | I 393 |
| hšbd-wdhw | blaues Glas, Lapislazuli | III 334 |
| ddh.w | Zemmermann | V 635 |
| mdhw | befreit sein von | III 190 |
| hw | [Fächer] | III 245 |
| hw | Schutz | III 246 |
| hw | Blume o. ä. für Kränze | III 147 |
| hw | [Teil des toten Feindes, den Schlange frißt] | III 247 |
| hw | Art | III 216 |
| hw | = hwj — schützen | III 217 |
| hw.t | Befreiung von Abgaben | III 246 |
| hw.t | [Göttin] | III 246 |
| hw.t | Palast des Königs | III 247 |
| hw.t | Himmel | III 247 |
| hw.t.t | [eines der Tore im Jenseits] | III 247 |
| ntj-hw | verehrt (Titel der römischen Kaiser) | III 245 |
| šj-hw | Wedelträger | III 246 |
| nšm-wdš-hw.f | [heilige Barke im Gau von Koptos] | II 339 |
| šhw | Macht (eines Gottes) | I 15 |
| šhw | Glanz (der Sonne) | I 33 |
| imšhw | Würdiger | I 82 |
| imšhw.t | Ehrwürdige (fem.) | I 92 |
| ššhw | Sterne | I 19 |
| šhw | verklärende Sprüche | IV 24 |
| šhw | Verehrung | I 125 |
| šhw | Ofenheizer | I 223 |
| šhw | [Gewässer] | I 224 |
| šhw | [Krankheit] | I 224 |
| šhw.t | Feuerbecken | I 224 |
| mhmhw.t | Portulak (Art Blume) | II 131 |
| nhw | Schützer | II 304 |
| nhw.t | Klage | II 305 |
| nhw | Lebende | I 201 |
| nhw | Sterne | I 204 |
| hn-nhw | [Pflanze] | III 100 |
| wnhw | Kleidung | I 324 |
| fnhw | [syrisches Volk] | I 577 |
| mnhw | Trefflichkeit | II 86 |
| rhw.t | Klageweiber des Osiris | II 446 |

| | | |
|-----------|--|---------|
| mrhw | Bedürfnisse | II 112 |
| rt-hhw | Halsband | I 104 |
| ihhw | Dämmerung | I 126 |
| ihhw | Bezeichnung eines göttlichen Wesens | I 126 |
| bhhw | Feuer (aus dem Munde) | I 471 |
| šhw | schützen | IV 238 |
| šhw | Bezeichnung der Milch = šhw} — ableugnen | IV 238 |
| šhw | Breite | IV 228 |
| šhw | Hof | IV 229 |
| thw | [Gewässer] | V 325 |
| th.w | Trinker | V 325 |
| th.w | [wohlriechende Pflanze] | V 325 |
| uth.w | Flüchtling | I 381 |
| dh.w.t | Steinblöcke | V 484 |
| nhw.t | Ausspeien | II 318 |
| sw | = šš.w — Zeit | III 426 |
| sw | [Fisch] | III 426 |
| sw.t | Weizen | III 426 |
| pšw.t | Ohnmacht o. ä. | I 499 |
| pšw.t | Brauerinnen | I 499 |
| hšw | Lache (Wasser) | III 233 |
| šw | Schilfrohr | I 127 |
| šw.t | Altes | I 128 |
| mšw.t | [weiße Krone] | II 44 |
| hwsu | [etwas, das im Steinbruch erbaut wird] | III 249 |
| swsw | [Gewässer] | III 429 |
| bsw | [Krankheit] | I 475 |
| bsw | [etwas, das man nicht sagen darf] | I 475 |
| hbsw.t | Bart der Götter | III 255 |
| msw.t | [Speise aus Weizen] | II 136 |
| hnsu | [Gott] | III 299 |
| hnsu.t | [Göttin] | III 300 |
| hsw | = hšjj — Gelobter | III 156 |
| hsw | Gunst | III 157 |
| hsw | [Zauberspruch zum Schutz auf Wasser] | III 160 |
| hsw.t | = hšj.t — Gelobte | III 156 |
| hsw.t | Gunst, Belohnung | III 157 |
| wšj-hsw.t | Beifall spenden | I 369 |
| rdj-hsw.t | Gunst erweisen | III 158 |
| šhs.w | Läufer | III 473 |
| ss.w | Staub | III 474 |
| šškw.t | [Erzeugnis des Wadi Natrün] | IV 27 |
| bgsw | (Substantiv) | I 483 |
| šw | Versteifung im Nacken | V 409 |
| šw | Befehlshaber | V 402 |
| šw | Verleumder | I 384 |
| wšw | Tragstangen | I 384 |
| šs.w | Aufrichtung | IV 361 |
| šs.w | Wolken | IV 361 |
| ds.w | [Gemüse] | V 485 |
| šw | = šjw — melden | IV 57 |
| šw | = šb} — Stern | IV 57 |
| šw | Zeit | IV 57 |
| šw | Monatstag | IV 58 |
| šw | [Pflanze] | IV 58 |
| šw | [Opfergegenstand aus Byblos] | IV 58 |

| | | |
|------------|--|---------|
| šw | er (abh. pron. 3. masc. sg.) | IV 59 |
| šw | und da, und so | IV 59 |
| šw | [Ente] | IV 59 |
| šw | schädlich für | IV 59 |
| šw | Leichengeruch | IV 60 |
| šw | = šš.w — Ersatz | IV 60 |
| šw.t | [in einer Werkzeugliste] | IV 57 |
| šw.t | = šw.t — Weizen | IV 57 |
| šw.t | [etwas Krankhaftes am Finger] | IV 57 |
| šw.t | [Binse] | IV 58 |
| šw.t | Schaden | IV 59 |
| šw.t | [Körperteil des Rindes] | IV 60 |
| šw.t.t | voller Ersatz für Horusauge zu seiner Zeit | III 426 |
| r-šw.f | wissend | II 445 |
| rhw-šw | Karnak | I 66 |
| šp.t-šw.t | Vogelmist | I 20 |
| ššw | [Himmel] | I 33 |
| hšj-hššw.t | Hyksos | III 171 |
| šš.w | Schreiten | IV 412 |
| šš.w | Beduinen | IV 412 |
| hntšw | Eidechse | III 122 |
| ššw | Säge | V 527 |
| ššw | Ersatz | I 131 |
| ššw | Produkte eines Landes | I 131 |
| ššw | kaufen | I 131 |
| ššw | verkaufen | I 131 |
| rdj-r-ššw | [Pflanze aus dem Wadi Natrün] | II 45 |
| mšw.t | Natrün | II 205 |
| nšš.w | Rufer | V 243 |
| šš.w | [Stöcke] | I 57 |
| šš.w | Waage | I 476 |
| šš.w | [Krankheit] | III 67 |
| šš.w | Paket | III 66 |
| šš.w | Stück Zeug | III 256 |
| šš.w | Landmesser | V 262 |
| šš.w | [Erzeugnis des Wadi Natrün] | I 552 |
| šš.w | Kochung, Backen | IV 448 |
| šš.w | Vornehmer | IV 450 |
| šš.w | Herrlichkeit | II 142 |
| šš.w | Erzeugnis | II 139 |
| šš.w | Geschöpfe, Kinder | II 140 |
| šš.w | Nachkommenschaft | II 140 |
| šš.w | Geburt | II 141 |
| šš.w | Gestalt | II 142 |
| šš.w | Abendbrot | III 398 |
| šš.w | wiedergeboren werden als Kind (vom Mond) | II 270 |
| šš.w | [Krankheit an der Vulva] | IV 142 |
| šš.w | ältester . . . | IV 143 |
| šš.w | alt werden | IV 485 |
| šš.w | Gefolgsmann | IV 487 |
| šš.w | Gefolge | IV 487 |
| šš.w.t | Gefolge | IV 487 |
| šš.w | Böses | V 370 |
| šš.w | = šb} — (Verbum) | IV 324 |
| šš.w | Flamme | II 324 |
| šš.w | [Krankheit am Nackenwirbel] | II 324 |
| šš.w | Waffen | II 324 |
| šš.w | König von Oberägypten | II 325 |
| šš.w | Kronprinz | II 415 |

| | | |
|------------------------|-----------------------------------|---------|
| hlp-dj-nšw.t | Totenopfer | III 187 |
| mšw-nšw.t | Prinzen und Prinzessinnen | II 139 |
| w ⁶ b-nšw.t | Leibarzt | I 283 |
| nn-nšw.t | Herakleopolis | II 272 |
| h.t-nn-nšw.t | Herakleopolis | III 3 |
| hnn-nšw.t | Herakleopolis | II 272 |
| gš-pr-nšw.t | Staatsverwaltung | V 198 |
| rh-nšw.t | Bekannter des Königs | II 446 |
| rhw.t-nšw.t | [Frauentitel] | II 447 |
| ššw | Hoden | I 100 |
| ššw | = nšw.t — König | I 100 |
| ššw | Reliquienkasten von Abydos | I 100 |
| ššw | Chons | III 300 |
| šš.w | Lobpreis | IV 171 |
| šš.w | Gewichte am Netz | V 469 |
| šš.w | Wachen | II 451 |
| šš.w | Südwind | II 453 |
| šš.w | Traum | II 452 |
| šš.w | [Substantiv] | II 452 |
| šš.w | Süden | II 453 |
| šš.w | Most | II 112 |
| šš.w | Sarg | V 65 |
| šš.w | [Tierart] | I 65 |
| šš.w | Böswilligkeiten | V 138 |
| šš.w | Sänger | III 165 |
| šš.w | [Gott] | III 165 |
| šš.w | [Raubvogel] | V 172 |
| šš.w | [Teil des Auges] | III 400 |
| šš.w | [Gebäck] | I 472 |
| šš.w | Umhegung | IV 275 |
| šš.w | [Zierat aus Metall] | IV 275 |
| šš.w | Rückenmark | I 480 |
| šš.w | Verneigung | V 140 |
| šš.w | sich bücken | IV 533 |
| šš.w | in Verbeugung | V 140 |
| šš.w | Nachbarn | V 195 |
| šš.w | [Gebäck] | V 197 |
| šš.w | Salbe | V 202 |
| šš.w | [äußerliche Krankheit bei Frauen] | V 203 |
| šš.w | Dolch | I 432 |
| šš.w | Gurt aus Leder | I 236 |
| šš.w | Schlachtung (von Tieren) | I 377 |
| šš.w | Rippenstück | I 567 |
| šš.w | Deltaküste | I 567 |
| šš.w | Ausgezeichnete | II 183 |
| šš.w | rufen | V 609 |
| šš.w | Niedrigkeit | II 385 |
| šš.w | leer sein | IV 426 |
| šš.w | Nichtshabender | IV 427 |
| šš.w | leermachen | IV 428 |
| šš.w | unbeschriebener Papyrus | IV 428 |
| šš.w | Gott Schu | IV 429 |
| šš.w | trocken werden | IV 429 |
| šš.w | trocken | IV 429 |
| šš.w | Trockenes (Baumteil) | IV 430 |
| šš.w | Licht | IV 430 |
| šš.w | leuchten (von Augen) | IV 431 |
| šš.w | Schirm | IV 432 |
| šš.w | [Krug für Bier] | IV 433 |
| šš.w | (Substantiv) | IV 433 |
| šš.w | Esel | IV 433 |

| | | |
|-------------|---------------------------------|---------|
| šw | (Substantiv) | IV 434 |
| šw.t | Feder | IV 423 |
| šw.t | [menschliche Körperseite] | IV 425 |
| šw.t | Nachbarn | IV 426 |
| šw.t | Gesamtheit der Pyramiden | IV 426 |
| šw.t | [offizinell Verwendetes] | IV 428 |
| šw.t | Schatten | IV 432 |
| šw.t.t | Bezeichnung weiblicher Personen | IV 433 |
| tp-šw | Mühe | V 292 |
| m-tp-šw | in unordentlichem Zustand | IV 427 |
| n-tp-šw | ohne Mühe | IV 427 |
| m-šw | wegen | IV 432 |
| šb-šw.t | [Horus von Edfu] | IV 18 |
| išw | Ausgespienes | I 134 |
| šw.t | Geschrei eines Kindes | I 227 |
| šwš.w.t | Stricke (zum Binden) | IV 76 |
| bšw | Erbrechen | I 478 |
| bšw | [Feuerstein] | I 478 |
| šbš.w | Ekelerregendes | IV 93 |
| špšw.t | [Tier] | I 182 |
| špšw.t | Bezeichnung für Ägypten | III 270 |
| mšw | Dolch | II 157 |
| nš.w | [Krankheitserscheinung] | II 338 |
| nš.w | [Topf] | II 338 |
| nšw.t | Nasenschleim | II 338 |
| ršw | sich freuen | II 454 |
| ršw.t | Freude | II 454 |
| n q-m-ršw.t | fröhlich | II 379 |
| ššw | froh machen | IV 201 |
| ššw | sich lösen von etwas | III 485 |
| ššw | (in unklarem Zusammenhang) | III 485 |
| ššw | = šš.w – Silberscheibe | III 485 |
| šš.w | Tusche | III 481 |
| šš.w | Sumpfvögel | III 484 |
| rj-šš.w | Schriftstück | II 395 |
| nb-šš.w | Beiname des Thot | III 479 |
| pr-n-šš.w | Bibliothek | III 479 |
| šš.w | Silberscheibe | IV 280 |
| šš.w | [Brot] | IV 280 |
| mššw.t | [Krankheit] | II 158 |
| nšš.w | [Krankheit an der Schläfe] | II 342 |
| kšw | [offizinell Verwendetes] | V 142 |
| iš.w | Ausgewanderte | V 329 |
| kšš.w | Kadesch | V 82 |
| škw | Mehl | I 21 |
| škw | Beutmacher | III 34 |
| škw | Einkünfte | I 232 |
| škw | [Gewässer am Himmel] | I 234 |
| škw | [Holz] | I 234 |
| škw | = škj – Schiff | I 234 |
| škw | kentern | I 234 |
| škw | = šg – (Verbum) | I 235 |
| kwkw | [Früchte] | V 21 |
| nkw | [Krankheit] | II 343 |
| nkw.t | [Früchte] | II 343 |
| nkw.t | Feuchtigkeit | II 343 |
| rkw | Widersacher | II 456 |
| rkw | Feindschaft | II 456 |
| rkw.t | Krankheit | II 457 |
| rmt-rkw | feindseliger Mensch | II 452 |
| rkw | Striemen | I 216 |

| | | |
|-------------|--|---------|
| šrk.w | Atmen | IV 203 |
| ššk.w | Abgehauenes | III 169 |
| dkw | Pulver, Mehl | V 494 |
| dk.w | barfüßig | V 495 |
| kw | du (pron. abs. 2. masc. sg.) | V 115 |
| škw | (Verbum vom Herzen) | I 22 |
| škw.t | [Krankheit] | I 22 |
| bškw | Arbeiter | I 430 |
| bškw | Steuern | I 428 |
| bškw.t | Dienerschaft | I 430 |
| rj-škw | Arbeit | II 395 |
| škw | Feinde | III 363 |
| škw | Steinbruch | I 139 |
| škw | (Substantiv) | I 139 |
| škw.t-škw | [Speise] | I 139 |
| nkw.t | Messer | II 205 |
| nk.w | Begatter, Beischläfer | II 345 |
| škw | Waagschale | III 120 |
| škw.t | Bett | III 119 |
| škw | Stelle, an der die Sonne untergeht | IV 175 |
| škw | Dunkel | IV 176 |
| škw.t | [Gegenstand aus Holz] | V 134 |
| škw | [Osirispriester in Abydos] | III 164 |
| škw | Kampfgewühl | IV 313 |
| škw.t-škw.f | unzerstörbar | IV 313 |
| škw | Finsternis | V 142 |
| škw | [einer der 8 Urgötter] | V 144 |
| škw | Bezeichnung des Überschwemmungswassers | V 144 |
| škw.t | Finsternis | V 144 |
| škw | Weiser | I 140 |
| škw | [Berufsbezeichnung] | V 331 |
| škw | [Gewässer bei Anaris] | V 625 |
| gw | [Stier] | V 159 |
| gw | = gjw – [wohlriechende Pflanze] | V 159 |
| gw | [Pferde] | V 159 |
| šgw.t | [offizinell Verwendetes] | I 34 |
| šgw | [Nutzholz aus Asien] | V 356 |
| nšgw | Mehl | II 210 |
| šgw.t | Unterkiefer | I 376 |
| šgw | [Vogel] | V 155 |
| šgw | [Nutzholz] | I 551 |
| tw | diese (pron. dem. fem. sg.) | V 244 |
| tw | man (pron. suff. 3. pl.) | V 245 |
| tw | abgesehen von | I 272 |
| škw.t | zum Trotz | III 253 |
| škw | damit | III 431 |
| škw | Kundschafter | III 31 |
| škw | Gleicher wie | II 40 |
| škw | veranlasse! | I 77 |
| škw | damit | III 431 |
| škw | ältester Sohn | I 377 |
| škw | [Löwengestaltiger Gott] | V 260 |
| škw | Gleichheit | V 257 |
| škw | entsprechend | V 257 |
| škw | Querhölzer der Tür | III 72 |
| škw | Mastfuß | III 72 |
| škw | vor | III 275 |
| škw | Same (Sperma) | II 169 |
| škw | Gift | II 169 |
| škw | etwas mit Pulver bestreuen | V 309 |

| | | |
|-----------|---|---------|
| tmtw | Pulver | V 309 |
| ntw | sie (pron. abs. 3. pl.) | II 355 |
| rđj-in.tw | schicken | I 91 |
| šntw | zuvor | III 304 |
| wšr.tw | Vorsteher | I 288 |
| šr.tw | Ausspruch, Orakel | III 318 |
| ht.w | Tier | II 503 |
| šntw | hinter | III 344 |
| šntw | hinter jemandem Be- | III 344 |
| šntw | findliche | III 341 |
| šntw | Holzsachen | III 347 |
| šntw | hinter | III 347 |
| šntw | Stärke, Siege | II 317 |
| šntw | Befestigung | II 317 |
| šntw | Siegesbeute | II 317 |
| šntw | Steifheit | IV 170 |
| šntw | Unordnung | IV 171 |
| šntw | Gedärme | II 135 |
| šntw | Backwerk | IV 332 |
| šntw | bewundern | IV 334 |
| šntw | (in unklarem Zusammenhang) | IV 334 |
| šntw | [Gott mit Speer] | IV 327 |
| šntw | Strahlen | IV 331 |
| šntw | [Beutel] | II 152 |
| šntw | Schildkröte | IV 557 |
| šntw | [Pflanze] | IV 557 |
| šntw | Feuerstelle (zum Kochen) | V 145 |
| šntw | Kessel | V 145 |
| šntw | Stückchen | II 348 |
| šntw | [Seeschiffe] | IV 315 |
| šntw | Arming | II 150 |
| šntw | Bezeichnung der Fische | I 581 |
| šntw | Bezeichnung des Fischer- | III 32 |
| šntw | netzes | III 215 |
| šntw | [Gott] | V 357 |
| šntw | du (pron. abs. 2. masc. sg.) | V 357 |
| šntw | = tw – diese (pron. dem. sg. fem.) | V 359 |
| šntw | Anteil | V 359 |
| šntw | [Beamter] | I 23 |
| šntw | Richtstätte | I 35 |
| šntw | Boden | III 423 |
| šntw | [Ortsbezeichnung] | IV 414 |
| šntw | Dieb | I 150 |
| šntw | Bezeichnung der Giftschlange | I 485 |
| šntw | Bezeichnung einer unheilbaren Krankheit | I 485 |
| šntw | Bösewicht | I 485 |
| šntw | Entzündungen (med.) | I 356 |
| šntw | [Bezeichnung besonderer Toten in Unterwelt] | IV 266 |
| šntw | Grundstück | IV 568 |
| šntw | lederner Wasserschlauch | IV 560 |
| šntw | [Teil des Schiffes] | IV 560 |
| šntw | Retter | IV 563 |
| šntw | Ackerstücke | IV 568 |
| šntw | [Schmuckband] | II 343 |
| šntw | Bildner | V 74 |
| šntw | Urgebung | V 81 |
| šntw | Umrißzeichnung | V 81 |
| šntw | Bezeichnung des Euphrats | II 52 |
| šntw | bemalt | V 81 |

| | | |
|------|---|---------|
| šntw | [Schlange] | IV 357 |
| šntw | Sämann | IV 347 |
| šntw | = šntw – Schildkröte | IV 559 |
| šntw | gewölbtes Dach zwischen Wänden (Holz) | IV 560 |
| šntw | Empörung | I 479 |
| šntw | Empörer | I 479 |
| šntw | sich empören | I 479 |
| šntw | Erzeuger, Vater | I 382 |
| šntw | Gezeugter, Sohn | I 382 |
| šntw | Wütender | I 24 |
| šntw | [Stätte im Totenreich] | I 35 |
| šntw | [Fisch], [Sonnengott] | I 168 |
| šntw | (Substantiv) | II 35 |
| šntw | Medament (bei Theben) | II 35 |
| šntw | Halle | V 527 |
| šntw | [Vogel] | I 152 |
| šntw | Seuche | I 152 |
| šntw | Mannschaft | I 151 |
| šntw | [Göttin] | I 152 |
| šntw | [Fisch] | I 237 |
| šntw | [Ortsbezeichnung] | IV 423 |
| šntw | Ungenaugigkeit | II 225 |
| šntw | Geflügel | I 9 |
| šntw | Möbel (allg.) | I 70 |
| šntw | [Gott des XX. Gaus von Unterägypten] | IV 111 |
| šntw | vier | I 582 |
| šntw | Papyrus (als Schreibmaterial) | IV 461 |
| šntw | Stab | II 178 |
| šntw | sprechen | II 179 |
| šntw | Wort | II 180 |
| šntw | (Substantiv) | II 179 |
| šntw | jemandem unterstellt sein | III 394 |
| šntw | [19. Tag des Mondmonats] | IV 388 |
| šntw | sagen | V 625 |
| šntw | befehlen | I 396 |
| šntw | Befehl | I 396 |
| šntw | Feuer bohren | III 426 |
| šntw | Sitz | III 314 |
| šntw | [Berufsbezeichnung] | III 314 |
| šntw | [Teil der Barke „Ruderbänke“] | III 314 |
| šntw | Treppe | II 462 |
| šntw | junge Leute | III 397 |
| šntw | Kindheit | III 398 |
| šntw | Thron | I 470 |
| šntw | [Teil des Himmels] | IV 224 |
| šntw | Entzündungen (med.) | I 356 |
| šntw | [Bezeichnung besonderer Toten in Unterwelt] | IV 266 |
| šntw | Grundstück | IV 568 |
| šntw | lederner Wasserschlauch | IV 560 |
| šntw | [Teil des Schiffes] | IV 560 |
| šntw | Retter | IV 563 |
| šntw | Ackerstücke | IV 568 |
| šntw | [Schmuckband] | II 343 |
| šntw | Bildner | V 74 |
| šntw | Urgebung | V 81 |
| šntw | Umrißzeichnung | V 81 |
| šntw | Bezeichnung des Euphrats | II 52 |
| šntw | bemalt | V 81 |

| | | |
|-------------|------------------------------------|---------|
| ss-kdw.t | Maler | III 480 |
| ikd.w | Bildner | I 138 |
| skd.w.t | Fahrt | IV 309 |
| hddw.t | Hungersnot | II 506 |
| dd.w | [geringe Götter] | V 627 |
| gd.w | Busiris | V 630 |
| 3.w-n-ddw.t | Ölbaumpflanzung | V 216 |
| mqd.w | [Körperteil einer Schlange] | II 193 |
| r-mqdw | gemäß o. ä. | II 192 |
| dw | Berg | V 541 |
| dw | schlecht | V 545 |
| dw | Schlechter (Apophis) | V 547 |
| dw | Schlechtes | V 548 |
| dw | Salbgefäße | V 549 |
| dw | Messer | V 550 |
| dw.t | Burg | V 545 |
| dw.t | Schlechtes | V 547 |
| tpj-dw | [Nekropolenbeamter] | V 292 |
| tp-dw | [Teil der Nekropole] | V 292 |
| m-dw | in böser Weise | V 549 |
| m-dw.t | in böser Weise | V 548 |
| w3dw | grüne Schminke | I 267 |
| w3dw | rohes Fleisch | I 268 |
| h3dw | [Teig zu Brot] | III 237 |
| n3dw | [Körperteil] | III 206 |
| 3dw | [Fisch] | I 240 |
| w3dw | [frei umherschweifende Rinder] | I 398 |
| w3dw | [Feldfrucht] | I 407 |
| nw3dw | Antilope | II 226 |
| nw3dw | (Substantiv) | II 226 |
| hw3dw | [Fischer] | III 250 |
| dw3dw | schlecht | V 552 |
| dw3dw | Schlechter (Totenrichter, Apophis) | V 552 |
| bdw | [Vogel] | I 488 |
| bdw | [Fisch] | I 8 |
| 3bdw | Abydos | I 9 |
| 3bdw | Abydener | I 9 |
| pdw | [Speise] | I 571 |
| pdw | Bezeichnung der Überschwemmung | I 571 |

| | | |
|-----------|---|---------|
| imw-pdw.t | Beiname des Chnum | I 146 |
| sfdw | Pyparusrolle | IV 462 |
| mqf.w.t | Tiefe | II 184 |
| dmf.w | Addierer | V 462 |
| dmf.w | [Gott, auf Kleidern sitzend] | V 462 |
| dmf.w.t | Menge (von Menschen) | V 461 |
| nd.w | beschützen | II 375 |
| nd.w | Schutz | II 375 |
| ndw.t | Müllerin (Mehl mahlende) | II 370 |
| ndw | Sonnenglanz | I 207 |
| ndw | [Krug] | I 207 |
| ndw | [Salbe] | I 208 |
| muk-ndw | Spiel | I 207 |
| wndw | [Rinder] | I 326 |
| wndw | [Ziege] | I 326 |
| wndw.t | Schiffsbauch | I 326 |
| wndw.t | Leute, Angehörige | I 326 |
| 3nd.w | Furchtsamer | IV 184 |
| 3nd.w.t | Furcht | IV 184 |
| 3ndw.t | Königsschurz | IV 522 |
| rdw | Flüssigkeit | II 469 |
| wrdw | Ermüdeter | I 338 |
| wrdw | unnützig Bemühung | I 338 |
| hdw | Zwiebeln | III 212 |
| hdw | [offizinell Verwendetes] | III 212 |
| hdw | Bezeichnung der Milch | III 212 |
| hdw.t | Licht | III 208 |
| phdw | Stuhl mit Lehne | I 542 |
| shdw | Bezeichnung des Sonnengottes (Erleuchter) | IV 226 |
| shdw | Sterne | IV 227 |
| shdw | Augenkrankheit (albugines oculorum) | IV 227 |
| shdw.t | Licht | IV 226 |
| hdw | [Fische] | III 355 |
| hdw | [Wasservogel] | III 355 |
| sdw | schlecht machen | IV 380 |
| ddw | mahlen | V 502 |
| hdw | (Substantiv) | II 506 |
| hdw.t | Licht | III 215 |

| | | |
|---------|---|---------|
| w3b | [Seil am Schiff] | I 251 |
| w3.t | Anhöhe | I 251 |
| w3b.t | [der auf dem Kopf auf-sitzende Kronenteil] | I 251 |
| 3b3b | (Verbum) | I 8 |
| n3b.t | Locke | II 200 |
| h3b | schicken | II 479 |
| h3b | (intr. Verbum von Krankheiten) | II 481 |
| sh3b | Verwaltung | IV 207 |
| h3b | Nilpferd | III 229 |
| h3b | chrfürchtig gebückt sein = h3b — Nacken | III 229 |
| h3b | [Teil des Streitwagens] | III 229 |
| h3b | krumm sein (von verletztter Nase) | III 361 |
| h3b | Sichel | III 361 |
| h3b | Nacken | III 362 |
| h3b.t | „Draht“ der roten Krone | III 362 |
| h3b.t | Unrecht | III 362 |
| h3b.t.t | Bezeichnung der roten Krone | III 362 |
| 3b3b | fließen, rinnen | III 420 |
| 3b3b | Schakal | III 420 |
| 3b3b | = 3bj — wie ein Schakal durchziehen | III 420 |
| 3b3b | Richter | III 421 |
| 3b3b | Freudensitz | III 421 |
| 3b3b | = 3bj — rinnen, fließen | III 420 |
| 3b3b | jemanden verweilen lassen | IV 17 |
| 3b3b | jemandes Herz erfreuen | IV 17 |
| 3b3b | bunt | IV 17 |
| 3b3b.t | bunte Kuh | IV 18 |
| 3b3b.t | bunte Schlange | IV 18 |
| 3b3b | Tisch mit Speisen | IV 410 |
| 3b3b | Bezeichnung für Feinde [von Beförderung der Königsboten | IV 410 |
| 3b3b.t | [Schiff] | IV 410 |
| 3b3b.t | [Pflanze] | IV 410 |
| m33b | Schöpfrinne | II 155 |
| k3b | zusammenfalten | V 8 |
| k3b | verdoppeln | V 8 |
| k3b | Windung | V 8 |
| k3b | Darm | V 9 |
| k3b | = kb — kühlen | V 11 |
| k3b.t | Brust | V 11 |
| k3b.t | Knie | V 11 |
| k3b.t | Scheitel (Körperteil) | V 11 |
| m-k3b | im Inneren von | V 10 |
| 3k3b | verdoppeln | IV 303 |
| g3b | = gb — Arm (Körperteil) | V 154 |
| g3b | [Gebäck] | V 154 |
| g3b.t | Arm (Körperteil) | V 154 |
| g3b.t | Blatt (einer Pflanze) | V 154 |
| 33b | [Gefäß] | V 354 |
| 33b.t | Getreidedarlehn | V 354 |
| d3b | Feige | V 417 |
| d3b | [Überschrift zu einem Spiel mit Stäben] | V 418 |
| d3b | Mangel | V 522 |
| d3b | begrüßen | V 522 |
| mq3b | schöpfen | II 189 |

| | | |
|------------|----------------------------------|---------|
| mq3b.t | Schöpfkelle | II 188 |
| mq3b.t | [Teil des Schiffes] | II 189 |
| ib | Herz | I 59 |
| ib | feindlich | I 60 |
| ib | Bezeichnung des Apophis | I 60 |
| ib | [Laubbaum] | I 60 |
| ib | Sistrum | I 61 |
| ib | Böckchen | I 61 |
| ib | = ibr — Salbe | I 61 |
| ib | Durstiger | I 61 |
| ib | vermuten | I 61 |
| ib | [silberner Toilettegegenstand] | I 61 |
| ib | [Teil des Vogelnetzes] | I 61 |
| ib | [Titel oder Amtsbezeichnung] | I 62 |
| ib.t | Weg | I 61 |
| ib.t | = iwb.t — Brotkrume | I 61 |
| ib.t | Durst | I 61 |
| ib.t | [Teil einer Pflanze] | I 62 |
| r3-ib | Magen | II 393 |
| 3-ib | hochmütig | I 162 |
| w3-ib | klug | I 290 |
| kf3-ib | sparsam | V 120 |
| im3-ib | froh sein | I 79 |
| im3-ib | beliebt | I 79 |
| h3-ib | [gute Eigenschaft] | III 12 |
| ph3-ib | kundig | I 542 |
| ph3-ib | beiter | I 542 |
| ph3-ib | Frohsinn | I 542 |
| tk3-ib | [gute Eigenschaft eines Beamten] | V 330 |
| pg3-ib | offenherzig | I 562 |
| 3-ib | [gute Eigenschaft] | V 342 |
| w3-ib | froh | I 400 |
| rdj-wq3-ib | mitteilen | I 400 |
| sw3-ib | mitteilen | IV 80 |
| 3-ib | erfreuen | I 39 |
| 3wj-ib | fröhlich sein, erfreuen | I 4 |
| 33wj-ib | jemandes Herz erfreuen | IV 17 |
| imj-ib | Liebding | I 72 |
| imj-ib | Verstand | I 72 |
| imj.t-ib | Gedanke | I 72 |
| nj-ib | Liebding | I 60 |
| irj-ib | [Wein] | I 106 |
| prj-ib | Mut verlieren | I 524 |
| hrj-ib | in der Mitte befindlich | III 137 |
| mhj-ib | vergeßlich sein | II 122 |
| rdj-ib | gehen | I 60 |
| pr-ib | kühn, tapfer | I 528 |
| m3-ib | sündlos | II 14 |
| wh-ib | klug | I 348 |
| 3w.t-ib | Fröhlichkeit | I 4 |
| 3w.t-ib | [Amulett] | I 4 |
| 3w.t-ib | [Myrrhe] | I 5 |
| hmww-ib | erfinderisch | III 83 |
| dw.t-ib | Traurigkeit | V 549 |
| wrdw-ib | [Osiris] | I 338 |
| 33b-ib | Herz erfreuen | IV 17 |
| skbb-ib | erfreuen | IV 305 |
| snb-ib | froh sein | IV 158 |
| 3p-ib | verständig | I 66 |
| 3p-ib | Beiname des Thot | I 66 |
| hrp-ib | entschlossen | III 327 |

b

| | | |
|--------|-----------------------|-------|
| b | = bw — Ort, Stelle | I 410 |
| b | Böses | I 410 |
| b | Bezeichnung des Seth | I 410 |
| 3b | aufhören | I 6 |
| 3b | mit Brandmal stempeln | I 6 |
| 3b | Brandstempel | I 6 |
| 3b | Fingernagel | I 7 |
| 3b.t | Familie | I 7 |
| 3b.t | [Gegenstand] | I 7 |
| 3b.t | (Substantiv) | I 7 |
| g33b.t | [Vogel] | V 149 |
| 33b | übelriechend o. ä. | I 29 |
| 33b | Linke (linker Arm) | I 30 |
| 33b.t | linke Seite | I 30 |

| | | |
|-----------|----------------------------------|---------|
| 33b.t | Osten | I 30 |
| 33b.t | linkes Auge | I 30 |
| 33b.t.t | Osten | I 31 |
| 33b.t.t | linkes Auge | I 31 |
| hrj-33b.t | Bezeichnung des Mondes | III 134 |
| 33b.t | [Gott] | IV 171 |
| 33b | [Baum] | I 167 |
| 33b | wohlgefällig sein | I 167 |
| 33b | schenken | I 167 |
| 33b | Spende | I 167 |
| 33b.t | Waschkrug | I 167 |
| w3b | Wurzel | I 250 |
| w3b | [offizinell verwendete Pflanzen] | I 250 |

| | | |
|----------------|----------------------------|---------|
| štp-ib | auszeichnet, klug | IV 338 |
| wf-ib | sich freuen | I 319 |
| wf-ib | Freude | I 319 |
| šrf-ib | eifrig | IV 195 |
| rdj-m-ib | auf einen Gedanken bringen | II 468 |
| 'm-ib | geheimhalten, bereuen | I 184 |
| hnm-ib | Horz erfreuen | III 379 |
| šhm-ib | kühn | IV 246 |
| šm-ib | Maßstab | IV 466 |
| šm.t-ib | Herzschlag | IV 466 |
| ndm-ib | sich freuen | II 380 |
| ndm-ib | Fröhlichkeit | II 380 |
| n-ib | damit | I 60 |
| 'wn-ib | habgierig | I 172 |
| 'wn.t-ib | Habsucht | I 172 |
| mn-ib | standhaft | II 62 |
| šmn-ib | ermutigten | IV 132 |
| bjn-ib | Unverschämter | I 485 |
| dndn-ib | zornmütig | V 472 |
| dndn-ib | Wut | V 472 |
| djr-ib | sich beherrschen | V 418 |
| šnfr-ib | Herz erfreuen | IV 163 |
| mr-ib | Mitleid haben | II 95 |
| hr-ib | Mitte | III 136 |
| hr.t-ib | Brust | III 138 |
| hr.t-ib | Mittelsaal | III 138 |
| h.t-ib-šr.t-ib | Athribis | III 3 |
| nrj-šr-ib | schrecklich sein | II 277 |
| mj-šr-ib | wohlgefällig | II 14 |
| wšb-šr-ib | erfreulich | I 250 |
| m-šr-ib | inmitten von | III 136 |
| mn-šr-ib | ärgerlich sein | II 67 |
| šr.t-ib | Herzensbedürfnis | III 319 |
| phr-ib | Anteil nehmen | I 545 |
| wšr-ib | tapfer | I 361 |
| šr-ib | aufreichtigen Herzens | II 173 |
| r-šr-ib-f | nach seinem Wunsche | V 588 |
| wšh-ib | freundlich sein | I 256 |
| b'h-ib | [Krankheit] | I 449 |
| tp'h-ib | mutig | V 296 |
| m'h-ib | Vertrauen haben | II 118 |
| m'h-ib | Vertrauter | II 118 |
| m'h-ib | [Thot] | II 119 |
| šb-ib | klug, wohlgesinnt | I 13 |
| hšh-ib | vorschnell | III 233 |
| šp'mh-ib | sich vergnügen | IV 252 |
| šh'mh-ib | Erheiterung | IV 253 |
| fnh-ib | klug | I 577 |
| wš-ib | frohlocken | I 383 |
| s.t-ib | Liebingsort | IV 4 |
| nj-š.t-ib | Liebling | II 196 |
| šm-ib | sich freuen | I 11 |
| šm-ib | sich an etwas erfreuen | IV 483 |
| hns-ib | engherzig | III 116 |
| pš-ib | sich sehnen nach | I 499 |
| šš-ib | sich selbst beherrschend | IV 26 |
| 'k-ib | Eingeweihter | I 231 |
| r'k-ib | widersetzlich | II 456 |
| h'k-ib | Empörer | III 363 |
| mšš-ib | Beiname der Sachmet | II 142 |
| twt-ib | klug | V 258 |
| m-mt.t-ib | aus vollem Herzen | II 168 |

| | | |
|--------------|--------------------------|---------|
| wmt-ib | tapfer | I 306 |
| hnt-ib | froh sein | III 309 |
| dnd-ib | zornwütig | V 579 |
| rwf-ib | beharrlich | II 411 |
| wrd-ib | müde werden | I 338 |
| hd-ib | froh | III 207 |
| pš-ib | [Flüssigkeit] | I 497 |
| dn-ib | [Gefäß] | V 575 |
| hšj.t | Schatten | III 225 |
| ibjb | Liebling | I 63 |
| mjb.t | Beil | II 42 |
| njb | [Holz] | II 201 |
| nnjb | [wohlriechendes Harz] | II 276 |
| 'b | Horn (Rind, Widder) | I 173 |
| 'b | = i'b — vereinigen | I 174 |
| 'b | prahlen | I 174 |
| 'b | Feind | I 174 |
| 'b | Krokodil | I 174 |
| 'b | [Sündhaftes] | I 174 |
| 'b | rein sein | I 175 |
| 'b | [Priestertitel] | I 175 |
| 'b | (Verbum) | I 176 |
| 'b | [Windhund] | I 175 |
| 'b | [Heiligtum] | I 176 |
| 'b | = i'b — Napf | I 176 |
| 'b.t | Weberin | I 175 |
| 'b.t | [Spiel mit Stöcken] | I 175 |
| 'b.t | Krug | I 176 |
| 'b.t | [Körner] | I 176 |
| 'b.t | [etwas bei Mundöffnung | I 176 |
| mr-'b | Verwendetes] | I 176 |
| m-'b | [Titel] | I 173 |
| wbn-'b.f | zusammen mit | I 174 |
| | Bezeichnung des Sonnen- | |
| | gottes | I 295 |
| šb.t | Schädigung | I 3 |
| šb | harken (Getreide) | I 40 |
| šb | Napf | I 40 |
| šb | vereinigen | I 40 |
| 'cb | kämmen | I 189 |
| w'cb | reinigen, rein sein | I 280 |
| w'cb | Reinheit | I 282 |
| w'cb | Reiner | I 282 |
| w'cb | Priester | I 282 |
| w'cb | Priester sein | I 283 |
| w'cb | reine Stätte | I 284 |
| w'cb | Fleischstück (zum Opfer) | I 284 |
| w'cb.t | Priesterin | I 283 |
| w'cb.t | [Kleid für Götter] | I 283 |
| w'cb.t | Balsamierungsstätte | I 284 |
| w'cb.t | Bezeichnung für Himmel | I 284 |
| w'cb.t | Fleischstück (zum Opfer) | I 284 |
| w'cb.t | Speisen | I 284 |
| w'cb.t | geopfert werden | I 281 |
| mš-w'cb | Abaton | I 26 |
| šš.t-w'cb.t | [3. Schalttag] | V 156 |
| gšš.t-w'cb.t | [Priestertitel] | I 282 |
| 'š-w'cb | reinigen | IV 66 |
| šw'cb | Bezeichnung für Natron | IV 67 |
| 'cb | (Substantiv) | I 178 |
| 'cb | = 'b' — prahlen | I 178 |
| 'cb | scheinen (von Sonnen- | |
| | strahlen) | I 178 |

| | | |
|-------|-----------------------------|---------|
| 'cb | regelmäßig (vom Jahres- | |
| 'cb | verlauf) | I 178 |
| 'cb.t | (Substantiv) | I 178 |
| 'cb.t | [Handlung beim Töpfern] | I 178 |
| 'cb | berühren | III 42 |
| 'cb | spielen | III 42 |
| 'cb | = šw'cb — reinigen | IV 43 |
| 'cb | Holz zuschneiden | IV 43 |
| 'cb | verschnittener Stier, Be- | |
| | zeichnung des Mondes | IV 44 |
| 'cb | geschmückt sein | IV 44 |
| 'cb | Schmuck | IV 44 |
| 'cb | [Brot] | IV 44 |
| 'cb | [Schutzgeist] | IV 42 |
| 'cb | schwärzen (mit Kohle) | V 536 |
| 'cb | kohlenschwarz (vom Haar) | V 536 |
| 'cb | [in Gerätelisten bei Toten- | |
| | zeremonie] | V 536 |
| 'cb | = d'cm — Szepter | V 536 |
| 'cb | Kohle | V 536 |
| 'cb | Holzkohlen | V 536 |
| 'cb | Ruß | V 537 |
| 'cb | [Teil des Kypthi] | V 537 |
| 'cb | [Teil des Brotes] | I 51 |
| 'cb | Perseabaum | IV 435 |
| 'cb | [Halsband] | I 455 |
| 'cb | Kette am Schmuckstück | I 455 |
| 'cb | Kehle | I 455 |
| 'cb | [Gerät beim Nilpferd- | |
| | harpunieren] | I 455 |
| 'cb | [Pflanze] | I 455 |
| 'cb | [Nische in der Wand] | I 455 |
| 'cb | = ššj.t — Trinkstelle im | |
| | Fluß | I 455 |
| 'cb | (Verbum) | I 8 |
| 'cb | Kämpfer | III 230 |
| 'cb | Ähre | V 304 |
| 'cb | [Käfer] | I 63 |
| 'cb | glattstreichen (beim | |
| | Töpfern) | I 178 |
| 'cb | klopfen (an die Tür) | I 178 |
| 'cb | ernten | I 178 |
| 'cb | Sonne (als geflügelter | |
| | Käfer] | I 178 |
| 'cb | Speer | I 178 |
| 'cb | Umweg machen | IV 67 |
| 'cb | Wind | III 113 |
| 'cb | schlachten | III 113 |
| 'cb | sich unter Personen | |
| | mischen | III 376 |
| 'cb | sich begrüßen mit | |
| | jemandem | IV 161 |
| 'cb | kühlen (Wind) | IV 161 |
| 'cb | frisches Flußwasser | III 63 |
| 'cb | (Substantiv) | IV 214 |
| 'cb | Gemetzel | III 253 |
| 'cb | [Gefäß für Myrrhe, Salben | |
| | u. a.] | III 253 |
| 'cb | Schützer | IV 89 |
| 'cb | loben | II 143 |
| 'cb | sich zuwenden zu | |
| | jemandem | II 143 |
| 'cb | einfassen (mit Gold) | II 144 |

| | | |
|-------------|---------------------------|---------|
| šbb | Röhre | IV 439 |
| šbb | Luftrohre | IV 439 |
| šbb | zusammenmischen | IV 439 |
| šbb | [offiziell verwendete | |
| | Pflanze] | IV 439 |
| šbb | [körnige Substanz (bei | |
| | Rauschtrank)] | IV 440 |
| šbb | = šbw — Essen | IV 440 |
| šbb.t | Maische | IV 439 |
| m-šbb | gebraut (vom Bier) | IV 439 |
| m-šbb | in Mannigfaltigkeit | IV 439 |
| ššj-n-šbb | [offiziell Verwendetes] | IV 439 |
| kbb | kühl sein | V 22 |
| kbb | Kühle | V 24 |
| kbb | kühler Wind | V 24 |
| kbb.t | kühles Wasser | V 25 |
| kbb.t | = gbb — Erdboden | V 25 |
| kbb.t | Kehle | V 25 |
| m-kbb | in Ruhe | V 24 |
| škkb | kühlen | IV 304 |
| škkb | Kühler (Titel) | IV 304 |
| škkb | sich Kühlung verschaffen | IV 278 |
| gbb | [Gans] | V 164 |
| gbb | Geb | V 164 |
| gbb | Erdboden | V 164 |
| gbb | Felder | V 164 |
| gbb | zermahlen | V 364 |
| gbb | verstopfen | V 436 |
| gbb | Verstopftes | V 436 |
| gbb | [Gewässer] | V 568 |
| gbb | Herr | II 227 |
| nb | jeder (masc. sg.) | II 234 |
| nb | Halskragen | II 237 |
| nb | Gold | II 237 |
| nb | Bezeichnung der Hathor | II 239 |
| nb | Bezeichnung der Sonne | II 239 |
| nb | Bezeichnung des Getreides | |
| | (der Osirisfiguren) | II 240 |
| nb.t | Korb | II 237 |
| nb.t | Herrin | II 232 |
| nb.t | jede (fem. sg.) | II 234 |
| nb.t | Weichteile der Leiche | II 236 |
| nb.t | Himmelskuh | II 240 |
| nb.t | Ombos | II 242 |
| šj-r.t-nb.s | [2. Nachtstunde] | IV 33 |
| mk.t-nb.s | [3. Nachtstunde] | II 160 |
| rš-nb | jedermann | II 390 |
| r'-nb | jeden Tag | II 402 |
| mj-r'-nb | alltäglich | II 38 |
| bw-nb | jedermann | I 452 |
| hmw.t-nb.t | alle Handwerker | III 85 |
| rmt.w-nb | alle Leute | II 424 |
| šrf-nb | alle lebenden Wesen | IV 196 |
| wmn.t-nb.t | alles | I 310 |
| šr.t-nb.t | jedermann | I 107 |
| hrr.t-nb.t | alles Gewürm | III 150 |
| hr-nb | alle Leute | III 130 |
| šh.t-nb.t | alle Dinge, alles | I 124 |
| h.t-nb.t | alle Leute | III 357 |
| s-nb | jedermann | III 404 |
| m-š.t-nb.t | überall | IV 6 |
| nkt-nb | irgendetwas | II 347 |
| rmt-nb | irgendjemand | II 424 |

| | | |
|-----------|-----------------------------------|---------|
| i'j-nb | Goldwäscher. Gold waschen | I 39 |
| hmw-nb | Goldbearbeiter | III 82 |
| hpn-n-nb | aufgezogene kleine Perlen | III 366 |
| fnq-n-nb | goldschnäbelig | I 578 |
| pr-nb | Schatzhaus | I 517 |
| h.t-nb | Goldschmiedewerkstatt | II 238 |
| h.t-nb | Hatnub | II 239 |
| ht-nb | vergoldetes Holz | III 339 |
| w)nb | [offizinell verwendete Pflanze] | I 251 |
| inb | = nb) -- Tragstange | I 94 |
| inb | Mauer | I 94 |
| inb | (Verbum) | I 95 |
| inb | [Pflanze] | I 95 |
| inb | [Acker] | I 95 |
| inb | [Getränk] | I 96 |
| inb.t | Sperre, Festung | I 95 |
| phr-h)inb | [Zeremonie bei Thronbesteigung] | I 95 |
| r)j-inb.f | Beiname des Ptah | I 95 |
| kd-inb | Maurer | I 94 |
| m)nb | Beil (Werkzeug und Waffe) | II 44 |
| 'nb | [Pflanze] | I 192 |
| 'nb | Stengel | I 192 |
| 'nb | verschließen (Mund) | I 192 |
| w)nb | Blume | I 319 |
| w)nb | [Teil des Auges] | I 319 |
| b)nb | [Mann aus dem Myrrtenlande] | I 459 |
| nb)nb | bewahren | II 245 |
| nb)nb | kommen (von Überschwemmung) | II 245 |
| nb)nb | (trans. Verbum) | II 245 |
| h)nb | Land vermessen | III 112 |
| h)nb | Ackerland | III 112 |
| h)nb | zurücktreiben | III 113 |
| h)nb | schlachten | III 113 |
| h)nb | [Schutzgott] | III 113 |
| h)nb | Kügelchen Salbe) | III 113 |
| h)nb.t | Brotration | III 112 |
| h)nb.t | abgemessenes Feld | III 112 |
| h)nb.t | [offizinell Verwendetes] | III 113 |
| h)nb.t.t | Ackeranteil | III 112 |
| h)nb.t.t | [Ausdruck der Tempelverwaltung] | III 112 |
| mtr-h)nb | Grundstück anweisen | II 171 |
| snb | Mauerzinne | III 458 |
| snb | umstürzen | III 458 |
| snb.t | Mauer | III 458 |
| snb.t | Flasche | III 458 |
| snb | gesund sein, werden | IV 158 |
| snb | gesund machen | IV 159 |
| snb | Gesundheit | IV 159 |
| snb | Fransen | IV 160 |
| snb | [Pflanze] | IV 160 |
| snb | [Fruchtbaum] | IV 160 |
| snb | erreichen (vom Wasser, einen Ort) | IV 161 |
| snb | verbrennen | IV 161 |
| snb | [Gespinst] | IV 161 |
| snb | verseuchen (Schlaf) | IV 161 |
| snb | bauen | IV 161 |

| | | |
|------------|---------------------------------|---------|
| snb | Atemluft | IV 161 |
| snb.t | Genesung | IV 160 |
| snb.t | [Göttin] | IV 160 |
| snb.t | Himmel | IV 161 |
| snb.t | [Boot] | IV 161 |
| snb.t.t | [kleines Tier] | IV 161 |
| ssnb | gesund erhalten | IV 278 |
| snb | Trompete | IV 514 |
| snb | = snb.t -- Brust | IV 514 |
| snb.t | Brust | IV 512 |
| qd-m-snb | Trompeter | IV 514 |
| ir.t-snb.t | Brustbehang (Schmuck) | I 104 |
| knb | bändigen | V 53 |
| knb.t | Ecke | V 53 |
| knb.t | Beamtenschaft | V 53 |
| knb.t | Gericht | V 54 |
| knb.t | Gerichtsgebäude | V 54 |
| iwdnd | [Räucherwerk] | I 59 |
| qnb | krumm sein | V 576 |
| qnb | Zwerg | V 576 |
| qnb | abbiegen (vom Wege) | V 576 |
| qnb | [Gebäck] | V 576 |
| rb | [Kupfertopf] | II 414 |
| hrb | sich verwandeln | III 396 |
| grb | (Verbum vom Streitwagen) | V 181 |
| uen-grb | [kanopische Nilmündung] | V 181 |
| trb | [Gefäß] | V 387 |
| hb | Pflug | II 485 |
| hb | betreten (Ort) | II 485 |
| hb | stören (Bewässerung) | II 486 |
| hb | [unfreundliche Behandlung] | II 486 |
| hb | (in unklarem Zusammenhang) | II 486 |
| hb | Furche ziehen | II 486 |
| hb.t | Richtstätte | II 486 |
| hb.t | Tanz | II 486 |
| hb.t | Ibis (von Hathor) | II 487 |
| ihb | Tanz | I 118 |
| ihb | Tanzlied | I 118 |
| ihb | Tänzer | I 118 |
| ihb.t | Tänzerin | I 118 |
| w)hb | durchbohren | I 340 |
| w)hb | Loch | I 340 |
| w)hb | [Gewässer im Gau von Busiris] | I 340 |
| hbhb | durchziehen (Ort) | II 487 |
| hbhb | vertreiben (Schmerz) | II 488 |
| r)hb | Glut | II 440 |
| ishb | [Wolf] | I 182 |
| shb | heißer Wind | IV 529 |
| shb | stoßen (vom Stier), beschädigen | V 137 |
| shb | Bezeichnung des Seth | V 137 |
| thb | springen | V 388 |
| hb | Zelt | III 57 |
| hb | Fest | III 57 |
| hb | triumphieren | III 61 |
| hb | trauern um jemanden | III 61 |
| hb | (trans. Verbum) | III 61 |
| hb | Bezeichnung für Malachit | III 62 |
| hb | Fangertrag (Fische, Vögel) | III 62 |
| hb | Zielscheibe | III 62 |
| hb | [neben: Leiter] | III 62 |

| | | |
|-----------|---|---------|
| hb | [Speise in Opferliste] | III 62 |
| hb | = h)j -- Rauch | III 62 |
| hb.t | Festordnung | III 61 |
| hb.t | [Teil eines Grabes] | III 62 |
| hrj-hb | Fest feiern | III 58 |
| hrj-hb | [Priester] | III 395 |
| hw-hb | Festspeise | III 44 |
| h)hb | Fest reichlicher gestalten | III 58 |
| m-hb | in festlicher Stimmung | III 58 |
| w)h-hb | Fest stiften | I 254 |
| hts-hb | Fest feiern | II 202 |
| stj-hb | Bezeichnung eines Öls | IV 350 |
| hbhb | [Getränk] | III 64 |
| n)hb | verleihen (Würde u. ä.) | II 291 |
| n)hb | anschnurren | II 293 |
| n)hb | Joch (für Vieh) | II 293 |
| n)hb | verursachen (Streit) | II 293 |
| n)hb | Stiftung mit Land ausstatten | II 293 |
| n)hb | Abgabepflichtige | II 293 |
| n)hb | [dienende Götter] | II 293 |
| n)hb | = n)hp -- Töpferscheibe | II 294 |
| n)hb.t | Nacken | II 292 |
| n)hb.t | [Szepter] | II 293 |
| n)hb.t | Lotusblume | II 294 |
| n)hb.t | [heilige Pflanze im Gau von Sebennytos] | II 294 |
| n)hb.t | = n)hp -- Wunsch | II 294 |
| st-n)hb | [Teil des Ramesseums] | II 293 |
| w)h-n)hb | [Wasserblume] | I 257 |
| 'n)hb.t | [Vogel] | I 193 |
| r)hb | [Gefäß] | II 442 |
| shb | festlich machen | IV 213 |
| shb | (Substantiv) | IV 214 |
| hb | Tänzer eines Gottes | III 250 |
| hb | Kleid | III 250 |
| hb | = h)hb -- Nilpferd | III 251 |
| hb | hinrichten | III 252 |
| hb | = h)hb -- zerhacken | III 252 |
| hb.t | Masseverlust | III 251 |
| hb.t | [Berg im Jenseits] | III 251 |
| hb.t | Richtstätte | III 252 |
| hb.t | Feuer | III 252 |
| n-h)hb | ohne Verminderung | III 251 |
| h)hb | [krankhafter Zustand der Nase] | V 234 |
| hb | [Baum] | I 470 |
| hbhb | [etwas, worauf man schlecht geht] | III 254 |
| hbhb | [Gefäß für Myrrhen und Salbe] | III 255 |
| hbhb | betreten | III 255 |
| hbhb | zerstückeln (Fleisch) | III 255 |
| hbhb | [Gott] | III 255 |
| nb.t-h)hb | Tor im Jenseits | III 255 |
| n)hbhb | sich öffnen (von der Tür) | II 309 |
| sn)hbhb | wegziehen (Türriegel) | IV 169 |
| n)hb | Lotusblüte | II 307 |
| n)hb | [vom Eröffnen neuer Steinbrüche] | II 307 |
| n)hb | bestimmen | II 307 |
| n)hb | Vorschrift | II 307 |
| n)hb | [Acker] | II 308 |

| | | |
|-------------|---|---------|
| n)hb | Lampe (bildlich vom Mond) | II 308 |
| n)hb | El Kab | II 309 |
| n)hb.t | Namenreihe des Königs | II 308 |
| n)hb.t | [Göttin (nicht Nechbet)] | II 308 |
| n)hb.t | [Göttin (als Personifizierung der Fruchtbarkeit)] | II 309 |
| n)hb.t | [Göttin von El Kab (Nechbet)] | II 309 |
| n)hb.t | Flaggenmast | II 309 |
| irj-n)hb.t | Namenreihe des Königs | II 308 |
| hrj-n)hb.t | Beiname des Horus | II 308 |
| w)dn-n)hb.t | Namenreihe des Königs | II 308 |
| thb | festsetzen | II 308 |
| thb | eintauchen | V 326 |
| hb | Geschwulstblase | V 326 |
| shb | unterwerfen | III 365 |
| shb | verschlingen, einschlürfen | IV 289 |
| sb | unfreundliche Gesinnung | III 432 |
| sb.t | Belohnung | III 432 |
| sb.t | Transport | III 432 |
| sb.t | Ungeziefer | III 432 |
| sb.t | Locke | III 432 |
| d)hr.t-sb.t | [Hautkrankheit] | III 432 |
| s)hb | sperren (Weg) | III 434 |
| sb | Einbrecher | IV 81 |
| sb | [Gerät aus Metall] | IV 81 |
| sb | kastriert | IV 81 |
| sb | [eßbarer Körperteil des Rindes] | IV 81 |
| sb | bereiten (Weg) | IV 82 |
| sb.t | Schilfrohr | IV 82 |
| sb | brennen | I 20 |
| sb.t | Bezeichnung einer Göttin | I 20 |
| sb.t | Thron | I 132 |
| sb.t | Untersatz für Statuen, Stelen | I 132 |
| m)sb | (Substantiv) | II 143 |
| n)sb | verschlingen | II 334 |
| n)sb.t | [Gebäck] | II 334 |
| h)sb | zerbrechen | III 166 |
| h)sb | Bruch (Fraktur) | III 166 |
| h)sb | zuziehen (Netz) | III 166 |
| h)sb | Kreuzverband | III 166 |
| h)sb | Viertelarure | III 166 |
| h)sb | rechnen | III 166 |
| h)sb | Leute | III 168 |
| h)sb | schlachten | III 168 |
| h)sb | Markt | III 168 |
| h)sb.t | Verrechnetes (von Abgaben) | III 167 |
| h)sb.t | Messer | III 168 |
| h)sb.t | Würmer im Leibe | III 168 |
| tp-h)sb | Berechnung | III 167 |
| r-tp-h)sb | nach der Regel | III 167 |
| n.t-h)sb | Rechnungswesen | II 197 |
| ss-h)sb | Rechnungsschreiber | III 167 |
| h)sb | jemandem wehren | III 333 |
| h)sb | [Maß für Korn] | V 140 |
| h)sb.t | [Baum] | V 141 |
| sb | Besitz | IV 437 |
| sb | helfen | IV 437 |
| sb | Fleischstück | IV 437 |
| sb | [wohlriechende Pflanze] | IV 438 |

| | | |
|------------|------------------------------------|---------|
| šb.t | Bezahlung | IV 436 |
| šb.t | Fleischstück | IV 437 |
| šb.t | [offizinell Verwendetes] | IV 437 |
| šb.t | Kruste, Bodensatz | IV 438 |
| šb.t | Gurke | IV 438 |
| šb.t | [der König bringt es Göttern dar] | IV 438 |
| šb.t | = hšb.t — Draht der roten Krone | IV 438 |
| rdj-m-šb.t | verkaufen | IV 436 |
| wššb.t | [offizinell Verwendetes] | I 262 |
| wšb | sich nähren von etwas | I 371 |
| wšb | Nahrung | I 371 |
| wšb | antworten | I 371 |
| wšb | Antwort | I 372 |
| wšb | [27. Tag des Mondmonats] | I 373 |
| wšb | Bezeichnung für den Kampfstier | I 373 |
| wšb | (Verbum) | I 473 |
| wšb | [Goldgefäß] | I 373 |
| wšb.t | Klageweib | I 373 |
| wšb.t | [Isis] | I 373 |
| wšb.t | [offizinell Verwendetes] | I 373 |
| hn-n-wšb | Wechselgesang (der Arbeiter) | III 289 |
| n-wšb | zur Rechenschaft ziehen | I 189 |
| pš-wšb | Beiwort des Amun | I 372 |
| ššb | [Verbum von Seth] | IV 442 |
| ššb | richtig einteilen (Zeit) | IV 442 |
| ššb | mischen | IV 442 |
| ššb | Brauer | IV 442 |
| nb.t-ššb | Beiname der Hathor | IV 442 |
| nššb | sich laben | II 338 |
| ššb | verstümmeln | III 339 |
| tšb | spalten | V 330 |
| kšb | = kšb — verdoppeln | V 22 |
| kšb | sich wärmen | V 22 |
| kšb | sich demütigen | V 22 |
| kb | [Art Holzbearbeitung (von Särgen)] | V 22 |
| kšb | kühl sein | V 22 |
| kšb | Kühle | V 24 |
| kšb | Libation darbringen | V 24 |
| kšb | kühler Wind | V 24 |
| kb.t | Kühlung | V 24 |
| kb.t | Bezeichnung des Tempels | V 25 |
| š.t-kšb.t | Erweiterung | V 23 |
| mnkšb | Schirm | II 90 |
| mnkšb | kühler Raum | II 90 |
| šnkšb | trauern | IV 175 |
| ššb | [Krug für Wasserspende] | IV 305 |
| kb | [Gefäß für Flüssigkeiten] | V 117 |
| iškšb | trauern | I 34 |
| iškšb | Trauer | I 34 |
| mškb | Aufseher | II 158 |
| gb | sich neigen | V 162 |
| gb.t | Himmel | V 162 |
| gb.t | [Fisch] | V 162 |
| šš-gb | Erdboden | IV 9 |
| tjt-gb.t | Bruchwert | V 162 |
| šgb | überschwemmen | I 22 |
| šgb | (Substantiv) | I 22 |
| ššgb | bewässern | IV 27 |

| | | |
|----------|-----------------------------------|---------|
| igb | Luft | I 140 |
| gbgb | niederwerfen (Feind) | V 165 |
| gbgb | lahm sein | V 165 |
| gbgb | Lahmer | V 165 |
| gbgb.t | Leichenhaufen o. ä. | V 165 |
| m-gbgb.t | haufenweise | V 165 |
| šgbgb | schaudern | I 22 |
| nqb | ablenken von etwas | II 349 |
| pšrgb | [Speise] | I 553 |
| šgb | schreien | IV 321 |
| šgb | Geschrei | IV 321 |
| šgb | [Torwächter im Totenreich] | IV 321 |
| šš-šgb | laut schreien | IV 321 |
| tb | Kornhaufen | V 260 |
| tb | Fische | V 261 |
| tb.t | Belohnung | V 261 |
| tb.t | (Substantiv, wie ein Maß benutzt) | V 261 |
| tb.t | Kasten | V 261 |
| hštb | jemanden schonen | III 238 |
| tbib | (in unklarem Zusammenhang) | V 262 |
| tbib | jemanden hochziehen | V 262 |
| tbib | sich bewegen | V 262 |
| tbib | tragen | V 263 |
| tbib | (Verbum der Bewegung) | V 263 |
| ntb | verschmachten | II 356 |
| ntb | verzehren (von der Flamme) | II 356 |
| hrrtb | [Gefäß aus Kupfer] | III 330 |
| hšb | trauern | III 193 |
| hšb | bauen (Städte) | III 350 |
| mštb.t | [Schmuckstück aus Gold] | II 133 |
| hšb | niederwerfen | III 402 |
| hšb | eintauchen (Medikamente in Öl) | III 402 |
| štb | Käfig (für Geflügel) | IV 557 |
| štb | verschließen | IV 557 |
| tb | Kasten (für Vögel) | V 360 |
| tb | Kalb | V 361 |
| tb.t | beschutzt sein | V 363 |
| tb.t | Keule | V 360 |
| wšš-tb.t | Sohle | V 361 |
| mn-tb.t | Grundkante der Pyramide | I 354 |
| tbib | standhaft | V 362 |
| tbib | trommeln | V 364 |
| db | Nilpferd | V 423 |
| db | Horn | V 423 |
| db | [beim Vogelfang] | V 424 |
| db.t | Kasten | V 424 |
| db.t | weibliches Nilpferd | V 424 |
| db.t.t | Kopf | V 424 |
| idb | [Hundenamen] | V 424 |
| idb | Ufer | I 153 |
| dbdb | Acker | I 153 |
| dbdb | klopfen (vom Herzen) | V 442 |
| dbdb | stechen | V 442 |
| dbdb | angreifen | V 442 |
| dbdb | schlüpfen (Blut) | V 442 |
| nddb | essen | III 368 |
| ndb | verwunden | II 367 |
| ndb | trinken | II 367 |
| ndb | hören | II 367 |

| | | |
|---------------|--|---------|
| ndb | Wind | II 368 |
| hr-ndb.f | ganz (in Ortsbezeichnungen) | II 368 |
| hdb | niederwerfen | III 205 |
| hdb | töten | III 403 |
| šdb | [glatter Saum eines Leinwandstücks] | IV 368 |
| šdb | [Kleidungsstück] | IV 368 |
| hdb | essen | IV 368 |
| hdb | mieten | V 81 |
| hdb | stechen | V 632 |
| hdb | Stich (eines Insekts) | V 632 |
| hdb | sammeln | V 632 |
| hdb | [Tätigkeit des Arztes bei Magenleiden] | V 633 |
| hdb | [Fisch] | V 633 |
| hdb.t | Skorpion | V 632 |
| hdb.t | [Brot] | V 633 |
| hdb.t | [Kapelle] | V 633 |
| db | sammeln | V 553 |
| p | Untersatz | I 489 |
| p | Sockel | I 489 |
| p | [Stadt, die später Buto bildet] | I 489 |
| p | [Vogel] | I 490 |
| p | = pw — dieser (pron. dem. masc. sg.) | I 490 |
| p | Krug | I 490 |
| p.t | Himmel | I 490 |
| p.t | = p — Untersatz | I 492 |
| imj-p | [Priestertitel in Edfu] | I 489 |
| hrj-p | [alter Titel] | III 139 |
| hr-kš-p.t | Planet Saturn | V 96 |
| šnj-t-p.t | Regenwolken | IV 503 |
| grj-p.t | Taube | V 181 |
| irj-w-p.t | Vogel | I 104 |
| mw-nw-p.t | Regen | II 51 |
| rnn-w-nw-p.t | Himmelsstützen | II 420 |
| bš-nb-p.t | Bezeichnung des Amun | I 414 |
| nb.t-p.t | Beiname der Hathor | I 491 |
| hnnw-m-p.t | Unwetter | III 383 |
| bšj-n-p.t | Eisen | I 436 |
| bš-n-p.t | Bezeichnung des Amun | I 414 |
| šwn-n-p.t | [Blume] | I 52 |
| prj-r-p.t | sterben | I 520 |
| ir-p.t | [offizinell Verwendetes] | I 114 |
| šh-p.t | [Sternbilder] | I 119 |
| špd-w-gnh-p.t | Vögel am Himmel | V 176 |
| št-p.t | Wadi Natrūn | IV 550 |
| šj-p.t | aufgewühlt sein | I 238 |
| šp | Vorwurf | I 167 |
| wšp.t | Schaf | I 251 |
| kšpšp | verbergen, bedecken | V 106 |
| nšp | Locke | II 200 |
| hšp | verhüllen | III 30 |

| | | |
|------------|---------------------------------------|---------|
| db.t | Ziegel | V 553 |
| gš-db | [Teil des Wagens] | V 201 |
| gš-db | Gerechtigkeit | V 201 |
| hwsj-db.t | Ziegel streichen | III 248 |
| m-db.t | in Ziegelbau | V 554 |
| hšt-db.t | Ziegelform | V 553 |
| šht-db.t | Ziegel formen | IV 263 |
| wdb | Zeugstoff | I 408 |
| wdb | sich wenden nach, etwas wenden | I 408 |
| wdb | Rente (an Naturalien) | I 409 |
| wdb | Ufer | I 409 |
| hrj-wdb | [Verwaltungstitel] | III 139 |
| šwdb | erheben (Hand) | IV 81 |
| ndb | sich sträuben | II 377 |
| šdb | leben | IV 380 |
| šdb | Schaden | IV 381 |
| šdb | tief (von Wunden) | IV 382 |
| šdb | [Teil eines Fisches] | IV 382 |
| hwj-šdb | vertilgen (Böses) | III 47 |
| P | | |
| hšp | [vom verborgenen Inhalt der Berge] | III 31 |
| hšp | Bezeichnung eines Priesters | III 31 |
| hšp.t | Versteck | III 31 |
| šw-hšp.t | [Dendera] | III 31 |
| md.t-hšp.t | verborgene Dinge | II 182 |
| hšp | verhüllen | IV 210 |
| hšp | reichlich fließen (Wasserloch) | III 362 |
| hšp.t | Unwetter | III 362 |
| šp | Teich anlegen | IV 18 |
| šp.t | Blatt des Lotus | IV 18 |
| kšp | Räuchergerät (aus Näpfchen bestehend) | V 103 |
| kšp | jemanden räuchern | V 103 |
| kšp | Räucherwerk | V 104 |
| kšp | Schutzdach | V 104 |
| kšp | bedachen (Gebäude) | V 104 |
| kšp | Augenlid | V 104 |
| kšp | sich verstecken | V 104 |
| kšp | Vögel fangen | V 105 |
| kšp | [Haus, in dem Prinzen erzogen werden] | V 105 |
| kšp.t | Feuerung | V 103 |
| kšp.t | Räuchermittel | V 104 |
| kšp.t | Leinwandstück (über Topföffnung) | V 104 |
| kšp.t | Gewölbe des Himmels | V 104 |
| škšp | zudecken | IV 316 |
| ššp | (Verbum) | I 22 |
| šp | zählen | I 66 |
| šp | Treppe | I 67 |
| šp | Schlag | I 67 |
| šp | [roter Farbstoff] | I 68 |
| šp.t | Zählung | I 66 |